स्वतंत्रता संग्राम में सिंधी साहित्यकारों का योगदान

5059

उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी, लखनऊ

स्वतंत्रता संग्राम में सिंधी साहित्यकारों का योगदान

(आलेख संग्रह)

सरल ज्ञाप्रटे

सम्पादक

اُتر پردیش سنڌي اڪادمي

उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी, लखनऊ

स्वतंत्रता संग्राम में
सिंधी साहित्यकारों का योगदान
(आलेख संग्रह)

सम्पादक : सरल ज्ञाप्रटे
सचिव,
उ० प्र० सिंधी अकादमी

इस संग्रह में प्रकाशित आलेखों की नीति-रीति अथवा लेखकों के द्वारा अभिव्यक्त विचारों से उ०प्र० सिंधी अकादमी या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्वाधिकार : उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी, लखनऊ।
प्रकाशक : सरल ज्ञाप्रटे
सचिव,
उ०प्र० सिंधी अकादमी,
१४२-ए, द्वितीय तल, दारुलशफा,
लखनऊ -२२६ ००१
शब्द सज्जा : कम्प्यूटर प्वाइंट, लखनऊ।
मुद्रक : प्रिमियर प्रोसेस, लखनऊ
संस्करण : प्रथम, २०००
आवृति : ५००
मूल्य :

पूर्व कथन

उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी, लखनऊ एवं राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, वड़ोदरा के संयुक्त तत्वावधान में ०७, ०८ व ०९ जनवरी २००० तक फ़ैज़ाबाद में मानव संसाधन के अभाव एवं सीमित संसाधनों के बावजूद "स्वतंत्रता संग्राम में सिंधी साहित्यकारों का योगदान" विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद हेतु आमन्त्रित ख्यातिलब्ध सिंधी भाषा के विद्वानों ने अपने आलेखों में पूर्ण मनोयोग से विषयों को पूरी रोचकता से अतीत को पिरोया है। इन आलेखों से ज्ञात होता है कि सिंधी साहित्यकारों का योगदान किसी से कम नहीं है, सिंधी कवियों ने कभी भी अपनी लेखनी को विराम नहीं दिया है, सिंधी साहित्यिक चेतना स्वतंत्रता संग्राम में पूरी प्रखरता से प्रवाहित रही, सिंधी साहित्यकारों व संतो ने भी जगायी थी आज़ादी की अलख, सिंधी भाषा राष्ट्र की सजग प्रहरी बन दुश्मनों के खिलाफ ज्वालामुखी बनी रही।

साहित्य संस्कृति एवं कला ही नहीं अपितु स्थापत्य कला के भी बहु आयामी पक्षों को उजागर कर और अधिक जीवन्त व सृजनशील बनाने में सिंधी भाषा का प्रारम्भ से ही योगदान रहा है। आज़ादी की लड़ाई में तो मनसा–वाचा–कर्मणा प्रतिभागिता रही है। प्रबुद्ध वक्ताओं द्वारा जो लेख एवं वकतव्य दिये गये हैं वह हमारी वर्तमान पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक, प्रेरणा स्त्रोत एवं ज्ञान कोष के रूप में उपयोगी होंगे।

अकादमी का यह प्रकाशन सचिव श्री सरल ज्ञाप्रटे के सम्पादन में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ कि निश्चित ही विशेष रूप से असिंधी भाषी इस संग्रह का लाभ उठाकर अपने ज्ञान में अभिवृद्धि करेंगे। आपके सुझाव एंव सम्मतियां हमें आगामी प्रकाशन के लिए प्रेरणा प्रदान करेंगे।

२५.०३.२०००

सत्यजीत

सत्यजीत ठाकुर, आई.ए.एस.
निदेशक :
उ०प्र० सिंधी अकादमी

.....वास्तव में यह प्रकाशन अपने आप में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। सिंधीतर भाषी पाठकों तक यह सामग्री अवश्य जानी चाहिए ताकि उन्हें सिंधी बुद्धिजीवियों के योगदान की जानकारी मिल सके। इस सामग्री से सिंधी युवा पीढ़ी भी लाभान्वित होगी व स्वयं के सिंधी होने पर गर्व का अनुभव करेगी।

इस प्रकार के प्रकाशन हमारे देश की सामासिक संस्कृति और राष्ट्रभक्ति को और मज़बूत करेंगे।

आपका यह प्रयास प्रशंसनीय है;

बधाइयों एवं शुभकामनाओं के साथ,

आपका,

डॉ. किशोर वासवाणी
निदेशक,
राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद,
वड़ोदरा

परिसंवाद : आधारभूत टिप्पणी

"स्वतंत्रता संग्राम में सिन्धी साहित्यकारों का योगदान" विषयक परिसंवाद में देश भर से एकत्र सिन्धी भाषा एवं साहित्य के मनीषियों का सघन विमर्श विरह के करुण आलाप से युक्त सुमधुर राग साबित हुआ। यह राग सिन्ध के संस्कारों की राष्ट्र भक्ति, सामाजिक चेतना, माननीय मूल्य और साहित्यिक अभिरूचि के मर्म को छेड़ता रहा।

परिसंवाद के माध्यम से विद्वतजनों के समागम और सिन्ध स्मृति समारोह का दृश्य पैदा करने वाले अभियान की सूत्रधार रही सिन्धी को समर्पित दो महत्वपूर्ण संस्थायें "राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद–वड़ोदरा एवं उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी, लखनऊ।

परिषद के निदेशक डॉ० किशोर वासवानी एवं श्री सत्यजीत ठाकुर, आई०ए०एस० विशेष सचिव–भाषा पदेन निदेशक, उ०प्र० सिन्धी अकादमी की सक्रिय उपस्थिति से ७ से ६ जनवरी, २००० तक फैजाबाद उ०प्र० के नरेन्द्रालय प्रेक्षागृह से लेकर शाने अवध होटल के सभागार में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सिन्धी साहित्य की दशादिशा को लेकर मील का पत्थर तय करता रहा यह परिसंवाद। परिसंवाद में प्रत्येक स्तर पर सिंधी की मिट्टी से जुड़े चिन्तकों ने अपने विचार व्यक्त किये, तो स्रोताओं ने स्मृतियों के कपाट खोलकर इन विचारों को आत्मतात करने का प्रयत्न किया।

इसमें वे लोग थे, जो स्मृतियों के भरोसे प्रायः सिंध की गौरवमयी विरासत से जुड़ने की चिर ललक और लालसा संजोकर रखना अपनी पहचान समझते हैं। जिनके लिए सिंध का अस्तित्व आज भी अखण्ड भारत के अंग के रूप में परिकल्पित है। सिन्धी लोकजीवन के आंगन में जिनके स्वप्न बँटवारे की अर्धशती बाद भी अक्षुण्ण है।

सिंध और सिन्धियत की कुछ ऐसी ही भावभूमि पर नरेन्द्रालय प्रेक्षागृह में परिसंवाद का शुभारम्भ समारोहपूर्वक किया गया। त्रासदपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद सिंध से उठकर पूरे देश में पुष्पित पल्पवित होने वाली संस्कृति का समग्र निरूपण सिन्धी भाषा एवं साहित्य के गवाक्ष से करने का महती प्रयत्न किया गया। नरेन्द्रालय के भव्य

मंच के पटल पर सिंधी के प्रति सरोकार दर्शाने वाले कवि हृदय प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी की यह चिन्ता रेखांकित की गयी थी, जिसे उन्होंने ७ अप्रैल, १९६७ को लोकसभा में व्यक्त किया था "सिन्धी निर्वासिनी है, सिन्धी को राजाश्रय मिलना चाहिये" इसी तारम्य में प्रदेश सिन्धी अकादमी की ओर से सिन्धी साहित्य की आत्मा और शरीर का परिचय कराने वाला वाक्य अंकित किया गया था :

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी–भरी।।

सिंधी हमारी मातृभाषा और लिपि है नागरी।।

सभागार के अलग–बगल किनारों पर सिंधी भाषा एवं साहित्य के ध्येय और मान बिन्दुओं को उद्‌घाटित करने वाली इन पंक्तियों को सुसज्जित किया गया था। प्रदेश सिंधी अकादमी के सचिव सरल ज्ञाप्रटे विरचित यह पंक्ति सिंधी के प्रेमियों को गुदगुदा रही थी–

"मिठिड़ी प्यारी जीजल बोली।

माउ डिनीआ जहिंमें लोली।।

उद्‌घाटन समारोह के क्रम में इस परिवेश को उरोज देते हुए भरतपुर (राजस्थान) घराने के सिन्धी राजगायक मा० बूलचन्द ने तराना छेड़ा। सिंधी और हिन्दी भजन, लोक और शास्त्रीय संगीत से समन्वित बूलचन्द की प्रस्तुति से सभागार में उल्लास की लहर व्याप्त हो गयी। जो जहाँ था, उसके मन मधूर नाच उठे। कार्यक्रम के दौरान साहित्यकार तक अपने उल्लास को रोक नहीं सके। बरबस उनके पांव मंच के सामने पहुंच कर थिरकने लगे। कुछ पलों के लिए ऐसा लगा, मानों नरेन्द्रालय सभागार सिन्ध का आंगन हो। संगीत समां पर उद्‌घाटन समारोह आगे बढ़ा। संचालन सरल ज्ञाप्रटे ने किया जो विशाल सिंधी समूह का परिचय एक परिवार के रूप में करवा रहे थे। स्वागत की औपचारिकता के दौरान ही अभिव्यक्त हो रही आत्मीयता ही आगे बढ़कर राष्ट्रीय जीवन में सिंधी समूह की भूमिका को सौहार्द का आकार देने वाली सिद्ध हुई। उन्होंने अकादमी की ओर से सिंधी के विकास के लिए प्रस्तावित कार्यक्रमों की विशद व्याख्या की।

कार्यक्रम की भूमिका तय करते हुए डॉ० किशोर वासवाणी ने उद्घोष किया–

"भले अलग हो बोली अपनी
पर अपनी एक कहानी
जहाँ कहीं भी हम रह लें
पर हम हैं हिन्दुस्तानी।"

उ०प्र० सिन्धी अकादमी के निदेशक–श्री सत्यजीत ठाकुर ने इस अवसर पर कहा कि सिंधी साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषायी दृष्टि से अत्यन्त ही समृद्धशाली है। आर्थिक संसाधन तथा मानव संसाधन की कमी के लिए उन्होंने खेद व्यक्त करते हुए, अकादमी में स्टाफ के अकाल के बीच अकादमी सचिव श्री सरल ज्ञाप्रटे के प्रयासों और लगन की प्रशंसा की।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि परिषद एवं राज्यसभा सदस्य श्री सुरेश केसवानी ने अपने सम्बोधन में सिंध के महान अतीत का ज़िक्र करते हुए सिंध और भारतीय संस्कृति की एकरूपता प्रतिपादित करते हुए कहा कि गर्व से कहो हम सिंधी है, गर्व से कहो हम हिन्दी है। उन्होंने कहा कि सिंध के बिना हिन्द नहीं ओर हिन्द के बिना सिंध नहीं। इसी अवसर पर "तू सिंधी क्यों है? काव्य संग्रह का विमोचन, अकादमी नियमावली का लोकार्पण, बहुउद्देशीय सूचना पट का अनावरण, सिंधी के सक्रिय शुभचिन्तकों को एवं प्रत्येक सिंधी विषय पढ़ने वाले २८ छात्रों को प्रशस्ति पत्र एवं रू०–५००/– का चेक प्रोत्साहन स्वरूप अकादमी की ओर से प्रदान किये गये।

भारतीय सिंधु सभा उत्तर प्रदेश के संयोजक एवं अकादमी सदस्य श्री सुन्दरलाल राज्यपाल ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सिंधु की सभ्यता और संस्कृति में देश की आत्मा विद्यमान है।

दूसरा दिन सिंधी भाषा और साहित्य की नयी गहराइयों को उद्घाटित करने वाला रहा। सर्वप्रथम प्रख्यात भाषाविद् डॉ० मुरलीधर जैतली ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर परिसंवाद सत्र का शुभारम्भ किया। सिंधी अकादमी के निदेशक श्री सत्यजीत ठाकुर (विशेष सचिव–भाषा) ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि अकादमी का

एक लक्ष्य यह भी है कि सिंधी साहित्य को हिन्दी के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाना है जिससे सिंधी साहित्यकारों की लेखनी से, उसकी आत्मा से असिंधी भाषी भी परिचित हो सकें। भविष्य में भी इस प्रकार के परिसंवादो की श्रृंखला जारी रखने का उन्होंने आश्वासन दिया।

अकादमी सचिव सरल ज्ञाप्रटे ने स्पष्ट किया कि सिंधी साहित्यकारों की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को असिंधी भाषी लोगों तक पहुँचाने का लक्ष्य निर्धारत करते हुए आलेखों को हिन्दी में प्रस्तुत करने के लिए पूर्व में ही लेखकों से आश्वासन प्राप्त करने के पश्चात् ही उनके नाम पर सहमति दी गयी।

परिषद के निदेशक डॉ० किशोर वासवाणी ने परिसंवाद की पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के परिसंवाद से राष्ट्रीय एकात्मकता में अभिवृद्धि होगी।

प्रथम सत्र का तत्पश्चात् विधिवत संचालन दिल्ली–आकाशवाणी में सिंधी एकांश के प्रभारी श्री हीरो ठकुर को सौंप दिया गया। 'सिंधी कविता में राष्ट्रीय चेतन के स्वर' विषय पर सिंधी अकादमी दिल्ली के सचिव डॉ० जेठो लालवानी का २५ मिनट तक प्रस्तुत आलेख सिंधी संस्कृति और लोक जीवन का मर्म स्पर्श कराता रहा कि किस प्रकार सिंधी जन चेतना शान्ति की अभिषेक कर्ता रही और समय पड़ने पर भारतवर्ष के सजग प्रहरी के तौर पर प्रत्येक हमलावरों के खिलाफ ज्वालामुखी बनी रही। उन्होंने स्मरण कराया कि सिंधी कवियों ने कभी भी अपनी लेखनी को विश्राम नहीं दिया। स्वतंत्रता आन्दोलन में सिंध की भाव भूमि पर पनपा क्षोभ क्रोध और स्वाधीनता का संकल्प सिंधी कविता में बखूबी प्रतिविम्बित होता रहा।

प्रथम टिप्पणी करते हुए मुम्बई से पधारे श्री वासुदेव 'निर्मल' ने कहा कि सिंधी लोकजीवन में कूट–कूटकर देश भक्ति की भावना के पीछे सिंधियों की अहम भूमिका रही है। अध्यक्षीय भाषण करते हुए उ०प्र० हिन्दी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष डॉ० शरण बिहारी गोस्वामी ने सिंधी समुदाय में व्याप्त चिर सवाल को सौहार्द का स्वर देते हुए कहा कि सिंधियों के पास सिंध भले ही नहीं है परन्तु आज पूरा हिन्दुस्तान सिंधियों का है। संचालक श्री ठकुर ने बताया कि सिंधी समाज भारतीय जीवन की आत्मा की तरह हैं।

द्वितीय सत्र में पुणे से आयी श्रीमती रीटा शहाणी ने अपने आलेख में सिंधी उपन्यास में स्वतंत्रता संग्राम की झलकियाँ प्रस्तुत करके माहौल को रोमांचित कर दिया। लेखिका ने गुलीसदारंगाणी के उपन्यास 'इत्तेहाद' मोहन कल्पना के उपन्यास 'समुद्र और कौआ' तथा हरी मोटवाणी के उपन्यास 'अबो' की विषय वस्तु उदधृत करते हुए अपनी बात बड़ी करीने से कहने का प्रयास किया। सत्र संचालन गांधी धाम (कच्छ) से पधारीं श्रीमती इन्दिरा वासवाणी एवं प्रथम टिप्पणी उल्हास नगर से आए प्रो० जगदीश लच्छाणी ने करते हुए कतिपय बिन्दुओं पर असहमति भी जताई।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ० कन्हैया सिंह ने श्रीमती शहाणी के आलेख की सराहना की। उन्होंने आगे कहा कि सिंधी समुदाय भारतवर्ष के लिए सौग़ात की तरह है। उन्होने सिंधियों की सामर्थ्य को यहूदियों से प्रेरणायोग्य बताते हुए कहा कि न केवल सिंध बल्कि पंजाब और बंगाल को मिलाकर अखण्ड भारत का संकल्प लेना होगा। रात्रि में फैजाबाद में ही रामनगर सिंधी कालोनी के सन्त कँवरराम धर्मशाला के हाल में अज़मेर से आये युवा–किशोर कलाकारों ने दो नाटकों का मंचन किया। प्रथम श्री सुरेश बबलाणी लिखित एवं निर्देशित मूं अव्हाँ जो छा बिगाड़ियों? (मैने आपका क्या बिगाड़ा)। इस नाटक में वर्तमान परिवारिक वातावरण में अपनी भाषा साहित्य, संस्कृति से अनजान नयी पीढ़ी को परिवार के ही सदस्यों द्वारा जानकारी दिये जाने के तौर–तरीकों से परिचित कराया गया।

दूसरा नाटक श्री किशोर लालवाणी द्वारा लिखित एवं श्री सुरेश बबलाणी के निर्देशन में मंचित किया गया 'असीं स्वागत कंदा आहियूं' (हम स्वागत करते हैं) इस नाटक में समाज के अलग–अलग वर्गों में कार्यरत सामाजिक कार्यकलापों की अपने चित्र प्रकाशित करवाने एवं स्वागत करवाने की होड़ पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी दिखाई गई है।

तीसरे दिन के प्रथम सत्र का श्री गणेश उल्हासनगर से आए वरिष्ठ नाट्यकर्मी मदन जुमाणी के आलेख से हुआ। उन्होंने 'आज़ादी की हलचल में सिंधी नाटकों का योगदान' विषय पर अपना अपनी ख्याति के

अनुरूप अत्यन्त संतुलित और सारगर्भित आलेख वाचन किया। आलेख वाचक ने अनेक ऐसे दुर्लभ नाट्य ग्रन्थों की चर्चा की जो आज़ादी के आन्दोलन को धार देने में अग्रणी रहे। उन्होंने आज़ादी के आन्दोलन में सीधी हिस्सेदारी करके नाट्य कर्मियों ने सिंधी नाटक को 'स्टेज' तो प्रदान की लेकिन इस कारण 'स्टेज' कमजोर पड़ने लगा।

प्रथम टिप्पणीकर्ता डॉ० जेठो लालवाणी ने सिंधी नाटकों की विशिष्टता उसके कथ्य की सार्थकता में निहित होना बताया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आन्दोलन के विकास के क्रम मे ही सिंधी नाटकों का विकास भी हुआ है। उन्होंने जानकारी दी कि सिंधी नाटकों पर विस्तृत ज्ञान का प्रकाश मंघाराम मल्काणी और डॉ० प्रेम प्रकाश के शोधों से पड़ता है।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए मुम्बई विश्वविद्यालय में सिंधी के विभागाध्यक्ष डॉ० बलदेव मटलाणी ने सिंधी नाटकों के क्रम में लैला मजनूं जैसे अमर नाटक के रचयिता मिर्ज़ा कलीच बेग का नाम लिया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में सिंधी नाटकों की श्रृंखला काफी पुष्पित पल्लवित हुयी है। अजमेर के युवा नाट्य कर्मी सुरेश बबलानी ने सत्र का संचालन किया। श्री मदन जुमाणी के आलेख से उभरी सिंधी नाटकों की तस्वीर में डॉ० जेठो, डॉ० जैतली, श्री वासुदेव निर्मल, रीटा शहाणी तथा हीरो ठाकुर जैसे विद्वानों ने अपनी जानकारी और दुर्लभ सूचनाओं का रंग भरा।

द्वितीय सत्र में आज़ादी के आन्दोलन में सिंधी समाचार पत्रों का योगदान विषय पर डॉ. जैतली का आलेख समग्रता को परिभाषित करने वाला रहा। सन् १८४४ ई० में कराची से प्रकाशित 'साप्ताहिक कराची एडवरटाइजर' से आरम्भ सिंधी समाचार पत्रों की यात्रा आगे चलकर 'स्वतंत्रता' का कारण बना। यद्यपि पत्र चार्ल्स नेपियर ने जारी किया था और यह अंग्रेज़ी भाषा का समाचार पत्र था जिसमें शासन सम्बन्धी सूचनाएं प्रकाशित होती थी।

इस सत्र की अध्यक्षता 'हिन्दुस्तान दैनिक' लखनऊ के स्थानीय सम्पादक श्री सुनील दुबे को करनी थी परन्तु अस्वस्थता के कारण उपस्थित न होने पर उल्हासनगर से पधारे सिंधी पत्रकार श्री प्रेम तोलाणी

ने की। सत्र का संचालन सचिव सरल ज्ञाप्रटे ने आरम्भ किया परन्तु परिसंवाद की व्यवस्था संबंधी व्यस्ताओं के कारण अकादमी सदस्य श्री रवि प्रकाश टेकचंदानी पर यह गुरुत्तर दायित्व सौंप दिया।

अन्तिम सत्र में जहाँ आलेख वाचक श्री हीरो ठकुर ने 'अंग्रेज़ी शासनकाल मे प्रतिबन्धित सिंधी साहित्य' का उल्लेखनीय प्रदर्शन करके रोमांचित कर दिया वहीं अध्यक्षता कर रहे, उ०प्र० स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिषद के निदेशक/सचिव स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री धर्मराज राज सिंह ने अपनी वृद्धावस्था तथा नज़र की कमज़ोरी के बावजूद बड़े जोशीले स्वरों में आज़ादी आन्दोलन के न केवल संस्करण सुनाए अपितु तत्कालीन गीतों का सस्वर पाठ करके आन्दोलन का दृश्य प्रस्तुत किया। उपस्थित युवाओं ने इसे गर्म जोशी से आत्मसात किया।

समापन अवसर पर सभागार का वातावरण सिंधियत को नया आयाम देने वाला रहा। कार्यक्रम में यह बात उभर कर आयी कि राष्ट्र निर्माण में सिंधी भौगोलिक कारणों से सदैव अग्रणी रहे हैं जहाँ, वहीं सिंध की सोंधी महक से महरूम होने का दर्द पुरानी पीढ़ी से नयी पीढ़ी में संक्रमित होता रहा। इस कार्यक्रम में देश के लिए कुर्बानी दुर्लभ है परन्तु सिंधियों ने तो अपना वतन ही कुर्बान कर दिया का स्वर मुखरित हुआ। विद्वानों के शोध परक विमर्श से यह तथ्य पुख़्ता हुआ कि सिंधी का अतीत, वर्तमान और भविष्य भारतीय आत्मा से संम्पृक्त था और रहेगा। अन्त में परिषद के निदेशक डॉ० किशोर वासवानी ने अपने भाव प्रसून अर्पित किये।

परिसंवाद के अन्त में मैं यह दावा अवश्य करूँगा कि सिंधी भाषा, साहित्य और संस्कृति के चिन्तन की गहराइयों में गोता लगाने का दम कम से कम फैजाबाद का युवा सिंधी तो हासिल कर ही चुका है।

सरल ज्ञाप्रटे
सचिव : उ०प्र० सिंधी अकादमी

अनुक्रमणिका

१.	पूर्व कथन ● सत्यजीत ठाकुर एवं डॉ० किशोर वासवाणी	३–४
२.	परिसंवाद : आधारभूत टिप्पणी ● सरल ज्ञाप्रटे	५–११
३.	अनुक्रमणिका	१२
४.	संदेश–शुभकामनाएं	१३–१६
५.	दिल की बात कुछ यूं निकली ज़ुबां से	२०–२२
६.	सिंधी कविता में राष्ट्रीय चेतना ● डॉ० जेठो लालवाणी	२३–३४
७.	सिंधी कहानी में राष्ट्रीय चेतना ● डॉ. कमला गोकलाणी	३५–४३
८.	सिंधी उपन्यास में स्वतंत्रता संग्राम की झलकियां ● श्रीमती रीटा शहाणी	४४–५७
९.	आज़ादी की हलचल में सिंधी नाटक का योगदान ● मूल : श्री मदन जुमाणी, अनुवाद : सरल ज्ञाप्रटे	५८–६७
१०.	स्वतंत्रता संग्राम में सिंधी पत्रकारिता का योगदान ● डॉ० मुरलीधर जैतली	६८–८२
११.	अंग्रेज़ी शासनकाल में प्रतिबन्धित सिंधी साहित्य ● श्री हीरो ठकुर	८३–'
१२.	परिसंवाद के छाया चित्र	९३–९६

डॉ. एम. के. जैतली
एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत)
एम. ए. (भाषा विज्ञान)
शोध (भाषा विज्ञान)

दूरभाष : ०११–२१४६१२१
डी–१२७, विवेक विहार,
दिल्ली–११० ०६५, भारत

दिनांक २०–१–२०००

सचिव,
उत्तर प्रदेश सिन्धी अकादमी,
लखनऊ।

प्रिय भ्राता सरल जी,
सप्रेम नमस्कार

''स्वतंत्रता संग्राम में सिन्धी साहित्यकारों का योगदान'' विषय पर जनवरी २००० में फैजाबाद में जो विचार गोष्ठी अकादमी की ओर से संचालित की गई, उसके सफलता पूर्वक समापन पर आप सबको हार्दिक धन्यवाद। कुछ सिन्धी साहित्यकारों ने जो आपत्ति की कि निबन्ध हिन्दी भाषा में क्यों पढ़े गए, वह मेरे विचार में व्यर्थ है। इसका वास्तविक उद्देश्य था स्थानीय असिन्धी भाषी विद्वानों तथा पत्रकारों को सिन्धी साहित्यकारों के योगदान से अवगत कराना, जिसमें यह विचार गोष्ठी पूर्णतया सफल सिद्ध हुई है। डॉ० किशोर वास्वाणी, निदेशक–'राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद' ने भी आपके प्रयत्नों की भूरि–भूरि प्रशंसा की है।

मेरे विचार में ये सभी निबन्ध और गोष्ठी का उद्देश्य तथा कार्य विवरण पुस्तक रूप में भी अवश्य प्रकाशित किया जाए। इससे इस उद्देश्य को अधिक बल मिलेगा। जो विद्वान गोष्ठी में उपस्थित न हो सके थे तथा अन्य लोग भी इससे परिचित हो सकेंगे।

शुभ कामनाओं सहित,

भवदीय,
मुरलीधर जैतली
मुरलीधर जैतली

हीरो ठकुर

पूर्व सदस्य : सिंधी सलाहकार समिति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
पूर्व सदस्य : सिंधी अकादमी, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
पूर्व संसदीय संवाददाता : हिन्दुस्तान सिंधी दैनिक
प्रभारी : सिंधी समाचार एकांश, आकाशवाणी–नई दिल्ली
सी–२७, सुभावना निकेतन, पीतमपुरा, दिल्ली–११० ०३४
दूरभाष : ७१६८३६(आ०), ३७१५४११/६०२(कार्या०)

दिनांक : ८–३–२०००

प्रिय भाई सरल जी,

'स्वतंत्रता संग्राम में सिंधी साहित्यकारों का योगदान' विषय पर 'उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी' और 'राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद' द्वारा आयोजित संगोष्ठी एक यादगार संगोष्ठी रही..... मुम्बई में जाने पर डॉ० बलदेव मटलानी (विभागाध्यक्ष–सिन्धी : मुम्बई विश्वविद्यालय) ने बातचीत के दौरान कहा कि 'विद्वता की दृष्टि से अत्यन्त ही सफल सेमीनार रहा'। एकाध छोटे–मोटे सिन्धी अख़बारों में सेमीनार के विरोध में कुछ अनाप–शनाप आलोचना भी छपी है सो भी केवल इस दृष्टिकोण से कि सेमीनार में कुछ कार्यवाही हिन्दी भाषा में चलाई गयी थी।

सरल जी, आप ऐसी आलोचना से कदापि विचलित नहीं होना। दर असल ऐसी आलोचना की कोई आवश्यकता ही नहीं थी क्योंकि आपने शुरू में ही यह साफ कर दिया था कि स्वतंत्रता संग्राम में सिंधियो के योगदान का संदेश अधिकाधिक स्थानीय भाई बहनों तक पहुँच सके। .. .मजे की बात यह है कि आप पर जो आलोचना की गयी है और हिन्दी का विरोध करते हुए सिंधी को बचाने का जो दिखावा किया गया है वह सब कुछ अख़बार में अंग्रेज़ी में प्रकाशित किया गया है। बम्बई में तो ऐसा भी सुना गया कि एक अख़बार ने केवल इसलिए आलोचना की है, क्योंकि उसका सम्पादक सेमीनार की दावत पाकर अयोध्या देखने की आस लगाए हुए बैठा था.....

आपका

हीरो ठकुर

हीरो ठकुर

दूरभाष : कार्यालय : २४२६०४
आवास : २३३५८३

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

पं०सं० ६८३ /हि०सं०/का०उ०/२०००

डॉ. शरण बिहारी गोस्वामी
कार्यकारी उपाध्यक्ष

लखनऊ : दिनांक १५ मार्च,२०००

श्री सरल जी,

" स्वतंत्रता संग्राम में सिन्धी साहित्यकारों का योगदान" विषय पर सिन्धी अकादमी के तत्वावधान में दिनांक ७ से ६ जनवरी, २००० तक जो कार्यक्रम फैजाबाद में संपन्न हुआ, उसमें भाग लेने का मुझे आपने अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।

उक्त कार्यक्रम में रचनात्मक सभी कार्य सिन्धी भाषा में हुए। जहाँ तक विषय पर विवेचनात्मक सत्रों का प्रश्न है, उसमें कुछ सिन्धी विद्वान सिन्धी भाषा में बोले तथा शेष ने हिन्दी भाषा में अपने विचार प्रस्तुत किये। सिन्धी भाषा के भक्ति साहित्य में मेरी रुचि रही है परन्तु सिन्धी में आधुनिक साहित्य, वह भी स्वतंन्त्रता संग्राम से संबंधित साहित्य भी पर्याप्त यात्रा में लिखा गया है, इसका ज्ञान मुझे आपके कार्यक्रम में जाये बिना संभव न था। मेरा तो विश्वास है कि उत्तर प्रदेश जैसे हिन्दी क्षेत्र में आप सिन्धी के साथ हिन्दी भाषा को भी अपनायें तो यह परस्पर पूरकता होगी और भाषाओं को रचनात्मक बल प्राप्त होगा।

आपके प्रयासों से इस कार्यक्रम में देश भर से सिन्धी विद्वान एकत्र हुए, उन्होंने अपने विचार दिये, यह कार्यक्रम की महती सफलता है। मैं आपको और आपके माध्यम से सिन्धी अकादमी के सभी पदाधिकारियों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

धन्यवाद सहित –

श्री सरल ज्ञाप्रटे
सचिव, उ० प्र० सिंधी अकादमी,
१४२–ए–ब्लाक, दारुलशफा, लखनऊ

भवदीय,
(शरण बिहारी गोस्वामी)

डी.डी.ए. समुदाय केन्द्र, सदर थाना रोड
पहाड़गंज, नई दिल्ली–११० ०५५

सिंधी अकादमी

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार

प० सं० १२(यू) एस.ए./२०००
दिनांक १५–३–२०००

सेवा में,

अध्यक्ष,
उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी
१४२–ए ब्लाक, दारूलशफा, लखनऊ –२२६ ००१

महोदय,

फैजाबाद में दिनांक ७ से ६ जनवरी–२००० को आयोजित परिसवांद "स्वतंत्रता संग्राम में सिंधी साहित्यकारों का योगदान" विषय में मैंने सक्रिय रूप से भाग लिया था और अपना आलेख भी प्रस्तुत किया था। इस परिसवांद की कार्यवाही राजभाषा हिन्दी में आयोजित करने से इसका लाभ सिंधी साहित्यकारों के अलावा हिन्दी–भाषी साहित्यकारों, पत्रकारों और नगरजनों ने लिया जिसके लिए आप एवम् श्री सरल ज्ञाप्रटे अभिनंदन के पात्र हैं।

फैजाबाद एवम् उत्तर प्रदेश का सिंधी समुदाय अपनी भाषा सिंधी से विमुख हो रहा है। उत्तर प्रदेश में सिंधी भाषा के द्वारा शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं है, सिंधियों की युवा पीढ़ी हिन्दी भाषा में शिक्षा लेते हैं एवम् हिन्दी भाषा में बातचीत करते हैं। हिन्दी भाषा द्वारा सिंधी की युवा पीढ़ी को सिंधी स्वतंत्रता संग्राम के संबंध में जानकारी देने का यह एक सफल प्रयास किया गया था। उसके लिए भी आप और आपका विभाग अभिनंदन के पात्र हैं। इस परिसवांद में सिंधियों का स्वतंत्रता संग्राम में जो महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उसका परिचय पूरे समुदाय को हुआ। इस प्रकार का परिसंवाद आयोजित करने से सिंधी समुदाय की प्रतिष्ठा बढ़ी है इसलिए सिंधी समुदाय उत्तर प्रदेश सरकार का आभारी है, भविष्य में भी ऐसे महत्वपूर्ण परिसवांदों का आयोजन करते रहेंगे इसी आशा के साथ।

धन्यवाद।

भवदीय
जेठो लालवाणी
(डॉ० जेठो लालवाणी)
सचिव

प्रतिलिपि : श्री सरल ज्ञाप्रटे, सचिव, उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी।

डॉ. कन्हैया सिंह
कार्यकारी अध्यक्ष,
उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान
पदेन सदस्य : उ० प्र० सिंधी अकादमी

७२१, इन्दिरा भवन
लखनऊ

२४ मार्च २०००

प्रिय सरल ज्ञाप्रटे,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'स्वतंत्रता संग्राम में सिन्धी साहित्यदारों का योगदान' विषय पर अधिकारी विद्वानों के आलेखों का संग्रह सिंधी अकादमी द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के समापन के अवसर पर ऐसे विषय पर परिसंवाद का आयोजन और अधिकारी व्यक्तियों के लेखों के संग्रह का प्रकाशन दोनों ही कार्य प्रासंगिक और सराहनीय हैं। सिंधी भाषा एक संघर्षशील समाज की भाषा है। उसमें स्वाभिमान स्वावलम्बन और स्वातंत्र्य की अटूट भावना भरी है। इन्हीं गुणों के कारण सिंधी भाषा और सिंधु समाज अनेक प्रतिकूलताओं को झेलकर भी तन कर खड़ा है और संपूर्ण भारतीय समाज ने उन्हें उचित समादर प्रदान किया है। अतः आपके इस प्रकाशन से सिंधी भाषा और सिंधु समाज की स्वातंत्र्य चेतना पर अच्छा प्रकाश पड़ेगा।

आपका यह प्रकाशन इसलिए भी साधुवाद का पात्र है कि इसे आप हिन्दी भाषा और नागरी लिपि में प्रस्तुत कर रहे हैं। सिंधी भाषी तो अपनी गौरवमयी परंपरा से परिचित ही हैं। आज आवश्यकता यह है कि संपूर्ण भारत के लोग सिंधी भाषा की उपलब्धियों से परिचित हों और यह कार्य हिन्दी माध्यम से ही अधिकाधिक मात्रा में संभव हो सकता है। अतः मैं आपके इस प्रयास का भाषिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और भावात्मक ऐक्य आदि सभी दृष्टियों से स्वागत करता हूँ और ऐसे सराहनीय कार्य के लिए आपको साधुवाद देता हूँ।

डॉ० कन्हैया सिंह

सुन्दरलाल राजपाल
सदस्य : उ०प्र० सिंधी अकादमी
संयोजक : उत्तर मध्य क्षेत्र
भारतीय सिंधू सभा (भारत)

✆ ०५२७८-२४८१२
२/२/१५ लाजपत नगर
फैजाबाद - २२४ ००१

२२.३.२०००

नयी पीढ़ी की जानकारी में वृद्धि और पुरानी पीढ़ी को सिंधियत से आत्मसात करायेगी यह पुस्तक। हिन्दी में प्रकाशित होने से असिंधी भाषियों को सिंध के आज़ादी के आन्दोलन के इतिहास से रूबरू कराते हुए राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित करने में निश्चित सफलता प्राप्त होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

सुन्दरलाल राजपाल

❖❖❖

रविप्रकाश टेकचंदाणी
व्याख्याता–सिंधी, दि०वि०वि०
रेजीडेन्ट ट्यूटर : आई.एस.एच.
सदस्य कार्यकारिणी :
उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी

✆ ०११–७२५६६७४(आवास)
इन्टरनेशनल स्टूडेन्ट हाउस
दिल्ली विश्वविद्यालय, माल रोड
दिल्ली–११० ००७

दिनांक : २४–३–२०००

.....स्वतंत्रता संग्राम में सिंधी साहित्यकारों के योगदान को न केवल इतर सिंधी भाषियों तक पहुँचाने में कामयाबी मिलेगी अपितु सिंधी भाषा, साहित्य, संस्कृति कला व इतिहास से अनभिज्ञ नौजवान सिंधी पीढ़ी को अपने गौरवशाली इतिहास से परिचित करायेगी यह पुस्तक....

रवि टेकचंदाणी

(रवि प्रकाश टेकचंदाणी)

डॉ० कमला गोकलाणी
व्याख्याता– सिंधी
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर
सदस्य : साहित्य अकादमी, दिल्ली

'फरहत'
ए–४, नेहरू नगर
पो० एच.एम.टी.
अजमेर : ३०५ ००३
दिनांक : १.२.२०००

प्रिय सरल जी,

उ०प्र० सिंधी अकादमी को साधुवाद। जिसने नयी पीढ़ी को व असिंधी भाषियों को इस सेमिनार में हिन्दी पत्र वाचन के माध्यम से हमारे गौरवशाली अध्याय से परिचित करवाने की कोशिश की है। वरन् जैसे आज मुझे मूल कहानियाँ नहीं मिलीं वैसे आने वाले कल में आज का साहित्य रद्दी में बिकता फिरेगा।

डॉ० कमला गोकलाणी

❖❖❖

राधाकृष्ण आलमचंदाणी
सदस्य : साहित्य अकादमी, दिल्ली
सम्पादक : सिंधी गुलशन, लखनऊ

ई–४४२६ राजाजीपुरम कालोनी
लखनऊ : २२६०१७
दिनांक : २७.३.२०००

प्यारा सरल,

आज़ादीअ जी लड़ाईअ में 'सिंधी साहितकारनि जो योगदान' सेमिनार जे मकालनि खे शाया करण जो फैसलो तारीख़ी ऐं साराह जोग कमु आहे। हिन किताब जे शाया थियण सां सभिनी खे ख़बर पवन्दी त सिंध जी जनता ऐं साहितकारनि आन्दोलन में कहिड़ो हिस्सो वर्तो। सेमिनार हर तरह सफल हो। आयोजकनि से लख–लख वाधायूं।

राधाकृष्ण,

❖❖❖

..... परिसंवाद में सुरुचिपूर्ण, विद्ववतापूर्ण पढ़े गये आलेखों से एक ओर जहाँ हमारा ज्ञान वर्धन हुआ तो दूसरी ओर सिंध के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास ने अन्तर्मन को झकझोर कर रख दिया। सिंध का विस्तृत इतिहास जानने की जिज्ञासा बढ़ाई है इस परिसंवाद ने .....

अंजलि
शिक्षिका, जे.बी.एस.

दिल की बात कुछ यूं निकली जुबां से.....

....कार्यक्रम की सफलता तब समझ में आई जब घर के सदस्य जगह न होने की वजह से निराश होकर लौटे, प्रोग्राम हिन्दी में होने की वजह से समाज में हमें प्रत्येक वर्ग में सम्मान का स्थान मिला, जो हमें अभी तक न समझ पाये थे वे हमारे नजदीक आए.....

गंगाधर
श्री राम मेडिकल स्टोर, फैजाबाद

❖❖❖

हालाँकि कार्यक्रम सिंधी भाषा से सम्बन्धित था परन्तु यदि सिंधी में ही उसका संचालन और व्याख्यान होता तो हम सब जो कि सिन्धी भाषी नहीं हैं इस सम्मेलन के लाभ से वंचित रह जाते तथा हम ग़ैर सिंधी भाषियों की भागीदारी निर्रर्थक होती। इस सम्मेलन से हम सबको भारतवर्ष के वृहत्तर स्वरूप और एकता की मूलधारणा का ज्ञान हुआ तथा यह लगा कि 'वसुधैव कुटुम्बकम' का अर्थ यहीं सार्थक है।

–प्रताप नारायण सिंह
पूर्व मुख्य प्रबन्धक : सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंण्डिया, लखनऊ

❖❖❖

कार्यक्रम के शुरूआत में ही..... ७ जनवरी को जब मैं हाल में पहुँचा तो देखा कि बच्चियाँ सिंधी समाज की उत्साहित थीं हाल करीब–करीब उस समय आधा भरा था जब कार्यक्रम अभी प्रारम्भ भी नहीं हुआ था ऐसे कार्यक्रम फैजाबाद में हों यही अकादमी में आशा है।

गोविन्दराम
सह जिला संघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, साकेत–फैजाबाद

❖❖❖

.....सेमिनार में हमें भारत के बड़े–बड़े सिंधी साहित्यकारों से भी मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ ..... **अमृत राजपाल–बी.काम.प्रथम**

❖❖❖

.....सिंधी अकादमी से आशा करते हैं कि ऐसा कार्यक्रम फिर हमारे शहर फैजाबाद में करवाएँ जिससे हम युवा पीढ़ी के लोग सिंधी भाषा के इतिहास के

बार में जानकारी प्राप्त कर सकें।

कु० रिंकी रायचंदानी–एम.ए. द्वितीय

..... मैं आपकी शुक्रगुजार हूँ कि इस अवसर से अच्छे–अच्छे साहित्यकारों से मिलने का मौका मिला–

जया आहूजा–एम.ए.

❖❖❖

.....सिंधी साहित्यकारों को भी हम बच्चों से मिलकर जरूर अच्छा लगा होगा।

सीमा माखेजा–बी.ए.

❖❖❖

शर्म की बात है कि मैं सिंधी होते हुए भी सिंधी साहित्य के बारे में अभी तक नहीं जानती थी यदि ये सेमिनार न हुआ होता तो.....इल्तजा है कि बार–बार यहाँ ऐसे सेमिनार कराएं।

माला लखमानी–बी.एससी. तृतीय वर्ष

❖❖❖

....हिन्दी भाषा में संचालित होने से हमें समझने और असिंधी भाषियों को सिंधी साहित्य का महत्व समझाने का जो सुअवसर प्राप्त हुआ उसके लिए उ०प्र० सिंधी अकादमी के आभारी हैं।

जितेन्द्र माखेजा–बी.काम. तृतीय वर्ष

❖❖❖

.....हमारे साथ ग़ैर सिंधी भाषियों ने भी इसका लाभ उठाया।

शोभा संगतानी–बी.ए.

❖❖❖

.....हिन्दी में होने से हमारे हिन्दी दोस्तों को भी यह कार्यक्रम बहुत भाया।

राजकुमारी–बी.ए. द्वितीय वर्ष

❖❖❖

..... भविष्य में भी अकादमी ऐसे आयोजनों से विद्यार्थियों को लाभान्वित करती रहेगी आशा है।

सोनी मोटवानी–बी.ए.

❖❖❖

....हमारे घर के सदस्य जो कि इस सारे ज्ञान से वंचित थे वह तो खुशी से भाव विभोर हो गये।

रेनू दासवानी–एम. ए.

❖❖❖

....सेमिनार बहुत अच्छा लगा.....सिंधी पुस्तकों का ज्ञान मिला....सिंधी के महत्व का ज्ञान प्राप्त हुआ। मुझे बहुत खुशी मिली इससे–सबसे ज्यादा खुशी कि सेमिनार फैजाबाद में हुआ...हिन्दी में होने से खुशी हुयी...ऐसे कार्यक्रम बार–बार फैजाबाद में...

लाजवन्ती, नीलम आहूजा, लता टेकचंदानी, रेखा बत्रा,
दुर्गा संगतानी–एकता राजपाल,

❖❖❖

अच्छा रहता यदि इस तरह के कार्यक्रम प्रत्येक जिले में आयोजित होते तो और लोगों को भी इसका लाभ मिलता। हम आभारी है सरल जी के जिनके कारण इस तरह का कार्यक्रम फैजाबाद में सम्पन्न हो पाया।

मुरलीधर खानचंदानी
संयोजक–भारतीय सिन्धु सभा–साकेत

❖❖❖

परिसंवाद में सिंध का आत्मगौरव प्रतिष्ठित होता रहा।

...परिसंवाद में देश भर से जमा हुए सिंधी भाषा एवं साहित्य के मनीषियों का सघन विमर्श विरह के करुण आलाप से युक्त सुमधुर राग साबित हुआ। यह राग सिंध के संस्कारों की राष्ट्रभक्ति, सामाजिक चेतना, मानवीय मूल्य और साहित्यिक अभिरुचि के मर्म को छेड़ता रहा।

परिसंवाद के माध्यम से विद्ववत्जनों का समागम सिंध स्मृति का दृश्य पैदा करता रहा। इसमें वे लोग थे जो स्मृतियों के भरोसे प्रायः सिंध की गौरवमयी विरासत से जुड़ने की चिर ललक और लालसा संजोकर रखना अपनी पहचान समझते हैं। जिनके लिए सिंध का अस्तित्व आज भी अखण्ड भारत के अंग के रूप में परिकल्पित है। सिंधी लोक जीवन के आंगन में जिनके स्वप्न बंटवारे की अर्धशती बाद भी अक्षुण्ण है। त्रासदपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद सिंध से उठकर पूरे देश में पुष्पित पल्लक्ति होने वाली संस्कृति का समग्र निरूपण सिंधी भाषा एवं साहित्य के गवाक्ष से करने का महती प्रयत्न किया गया। विभिन्न सूत्रों में सिन्धी राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत पढ़े गये आलेख टिप्पणियां और व्याख्यान सिंधी गौरव को स्पर्श करने के साथ जानकारियों के भण्डार रहे।

रघुवरशरण
स्वतंत्र पत्रकार, अयोध्या

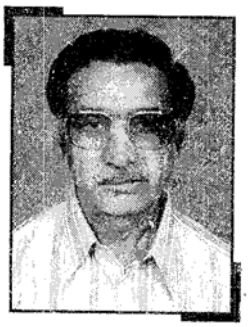

लेखक परिचय

नाम	:	डॉ० जेठो लालवाणी
जन्म तिथि	:	८ मार्च, १९४५ ई०
जन्म स्थान	:	
शिक्षा	:	एम० ए० (हिन्दी), साहित्य रत्न (हिन्दी), बी०एड० (अंग्रेज़ी), पी०एचडी० (सिन्धी)
सम्प्रति	:	सचिव-सिंधी अकादमी, दिल्ली
पता	:	एम०पी०-११५, गोपाल मन्दिर के पास, पीतमपुरा दिल्ली ११० ०३४
		सिन्धी
प्रकाशन	:	४ निबन्ध संग्रह, २ कहानी संग्रह, २ एकांकी संग्रह, १ बाल एकांकी, १ रेडियो एकांकी १ नाट्य साहित्य १ विज्ञान कथा १ स्वास्थ्य २ शिक्षा १ साक्षात्कार १ लोक साहित्य १ बाल साहित्य ५ पुस्तकें 'गुजराती' में १ पुस्तक उर्दू में ३ पुस्तकें हिन्दी में
अनुवाद :		६ पुस्तकें सिंधी से गुजराती ८ पुस्तकें गुजराती से सिन्धी में

"सिंधी कविता में राष्ट्रीय चेतना"

–डॉ० जेठो लालवाणी

युद्ध, लड़ाई इन्सान जाति की सबसे बड़ी दुर्घटना है। इतिहास साक्षी है कि जब से इन्सान के हृदय से सत्ता की लालसा जागृत हुई है और मानव ने जब से सर्व सत्ताधीश बनने के प्रयत्न किये हैं तभी से युद्ध और लड़ाईयों का जन्म हुआ है और इस भावना में उत्तरोत्तर विकास होता गया है। सत्ता की भूख ने मानव नरसंहार एवं खौफ़नाक विनाशकारी हथियारों के विकास को बढ़ाया है। जब भी किसी सत्ताधीश, हमलावर एवं विदेशियों ने किसी भी प्रदेश, राज्य पर आक्रमण किया है तब प्रदेश, राज्य, मुल्क के लोगों में राष्ट्रभाषा एवं देश–प्रेम का संचार हुआ है एवं मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने और अपना बलिदान देने के लिए नवयुवक, नागरिक अपना सिर हथेलियों पर रखकर शहादत देने के लिए भी तत्पर रहे हैं। इतिहास साक्षी है कि ऐसे बहुत से महानुभाव हो चुके हैं जिन्होंने अपनी मातृभूमि, जन्म भूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया है।

देश प्रेम, देश–भक्ति देश की स्वतंत्रता, क्रान्ति की भावना एवं देश के विकास की भावना ही राष्ट्रीय चेतना है। यह चेतना प्रत्येक मानव नागरिक एवं भारतवासी में निहित है। जब–जब हमलावरों, दुश्मन मुल्कों, विदेशी ताकतों ने देश पर आक्रमण किया है तब–तब संकटकालीन स्थिति में राष्ट्रीय चेतना और उजागर हो जाती है। हर संकटमय समय में, आपातकाल में देश का प्रत्येक नागरिक, बूढ़ा, बच्चा, स्त्री–पुरूष, धार्मिक भाषाकीय, भौगोलिक एवं जाति संबंधी भेदभाव भुलाकर अपने कर्तव्य को संभाल लेता है और देश की रक्षा के लिए राष्ट्रीय एकता को मज़बूत करने कै लिए जागृत एवं प्रयत्नशील रहता है। जब भी देश के ऊपर अंधकार के घनघोर बादल मंडराते हैं तभी इस कठिन परिस्थिति में कवि गण भी अपनी कलम को राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत कर देते हैं एवं अपनी रसमयी लेखनी से राष्ट्र को जागृत करने, नागरिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं।

वैसे तो स्वतंत्रता के बादल बहुत पहले से ही हमारे देश पर मंडरा रहे थे लेकिन भारत की स्वतंत्रता की प्रथम बाकायदा लड़ाई सन् १८५७ ई० में लड़ी गई। भारत में अंग्रेज़ों के बढ़ते हुए प्रभाव के विरुद्ध देश–भर में जो बगावत प्रारंभ हुई थी, धैर्य को तमाम सीमाओं को तोड़कर सभी देश भक्तों ने एक जुट होकर देश से अपनी वफ़ादारी का संकल्प लिया।

सिंध में भी आज़ादी के लिए भरपूर प्रयास किये गए। स्वतंत्रता संग्राम में सिंध प्रांत एवं सिंधियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महात्मा गांधी के देश व्यापी सत्याग्रह रौलेट एक्ट के विरुद्ध भी सिंध में स्वर गूंजा था, तो जलियाँवाला बाग की घटना ने परिस्थितियों को और भी गंभीर कर दिया। सुलगती हुई चिंगारियों को खिलाफ़त आन्दोलन ने और भड़काया था। विदेशी माल का बहिष्कार, सिविल नाफ़रमानी का आंदोलन भी सिंध में चला जिसमे शराब की दुकानों पर धरना, विदेशी माल का बहिष्कार, विदेशी माल को खुले आम जलाना एवं नमक कानून का तोड़ना भी शामिल था। डांडी मार्च भी राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा रहा। सरदार भगत सिंह एवं शहीद हेमू कालाणी को फांसी दिए जाने की ख़बर से सारे देश के साथ सिंध में भी विरोध और क्षोभ प्रकट हुआ और इन सभी घटनाओं के प्रतिविम्ब हमें स्वतत्रंता प्राप्ति तक सिंधी कविता में स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ते हैं।

सिंधी कविता ने अपनी लेखनी को कभी भी विश्राम नहीं दिया। सिंधी कविता राष्ट्र, राष्ट्रभाषा, राष्ट्ररक्षा, राष्ट्र की एकता एवं राष्ट्रीय महानता की चिन्ता निरंतर प्रेरित करती रही है एवं क्रांतिकारियों को उत्साह देती रही है।

प्रतिष्ठा के प्रतीक रूपी झंडे का भी सिंधी कविता में स्मरण किया गया है। राष्ट्रीय झंडा सरलता, सादगी और आगे बढ़ते रहने की इच्छा को प्रेरित करता रहा। झंडे के तीनो रंगों केसरिया जो बलिदान और त्याग का प्रतीक है, सफेद रंग–शांति, अहिंसा, सत्य और प्रेम का प्रतीक है, हरा रंग हमारे देश की कृषि एवं पारस्परिक विश्वास का द्योतक है, इस भावना की झलक भी हमें सिंधी कविता

में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। सिंधी कविता ने राष्ट्रीय झंडे एवं चरखे को पूर्ण सम्मान देकर अपना राष्ट्रीय कर्तव्य निभाया।

हम यह भी जानते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन को बढ़ावा देने में देशवासियों को जागृत एवं उत्साहित करने में देश के कवियों ने अपनी कलम को उठाया परन्तु उनके गीतों को चारणों, भाँटों, गायकों एवं भगतों ने गली–गली में गा–गाकर प्रस्तुत भी किया। इसमें राजस्थान के चारणों एवं सिंध के 'भगतों' का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

सिंध प्रांत भले ही जनगणना के हिसाब से एक छोटा सा प्रांत रहा हो परन्तु स्वतंत्रता के आन्दोलन में उसका भारत के किसी भी बड़े राज्य से हिस्सा कम नहीं रहा है। इतिहास साक्षी है कि प्राचीन काल से लेकर स्वतंत्रता तक जिन भी हमलावरों एवं विदेशियों ने भारत पर आक्रमण किया सर्वप्रथम उन आक्रमणों का मुकाबला बहादुरी से सिंध प्रांत ने ही किया है एवं देश की रक्षा के लिए अपनी संतानो, जवानों की शहादत दी है। सिंध एक ऐसा प्रांत रहा है जिसने स्वतत्रंता के लिए देश की रक्षा के लिए, धर्म के बचाव के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया है। हम यह भी जानते हे कि पूरे भारत में सिंधी जन ही हैं, जिन्होंने भारत की आज़ादी के लिए अपनी जन्म भूमि, मातृभूमि का भी त्याग कर दिया। अपने पूर्वजों की संपत्ति को छोड़कर भारत में निर्वासी बनकर रहने लगे एवं अपनी मेहनत, पुरुषार्थ से आज पुरुषार्थी बनकर देश के विकास में अपना योगदान दे रहें हैं। आज़ादी के बाद भी सिंधी कवि, लेखक, पत्रकार, नाटककार अपने देश प्रेम को बढ़ावा देने के लिए अपनी लेखनी को आगे और आगे रखे हुए हैं।

हम यहां सिंधी कविता में राष्ट्रीय चेतना की बात कर रहें हैं। हम बताना चाहते हैं कि सिंध प्रांत को अंग्रेज़ों ने सन् १८४३ई० में 'मीरो' से छीना था एवं भारतीय प्रशासन में सम्मिलित किया था। उसी दिन से ही सिंध में एक नारा गूंजा था ''मरसाँ मरसाँ सिंध न डेसाँ'' (मर जायेंगे परन्तु सिंध न देंगे) परन्तु अंग्रेज़ों की शाही फौज के सामने सिंध के नागरिक टिक न सके थे और सिंध प्रांत भी अंग्रेज़ों की हुकूमत में शमिल हो गया था तथापि

सिंध में जन्मी स्वतंत्रता की भावना को अंग्रेज़ों के ज़ुल्म शांत न कर सके। सिंधी कवियों ने देश प्रेम की भावना को ज्यों का त्यों कायम रखने के प्रयत्न जारी रखे।

'मीरों' के प्रशासन के पहले 'कलहोड़ा' प्रशासन में सिंध के सरताज शायर शाह लतीफ जैसे आलमगीर (सन् १६८६–१७५२) साईं सचल सरमस्त (सन् १७३६–१८२६) ने सिंध वासियों को मुल्की मोहब्बत एवं वतन परस्ती का संदेश अपनी कविता द्वारा दिया था। इन कवियों ने सिंधियों को सर्व धर्म–समभाव एवं हुब अलवतनी का जाम पिलाया था। उसका सरूर तब देखने को मिला जब अंग्रेज़ों ने सिंध को जीता था एवं सन् १८५७ ई० में देश भर में स्वतंत्रता का बिगुल बजा था। अंग्रेज़ों ने आज़ादी के इस आन्दोलन को 'बलवे' का नाम दिया था परन्तु इस 'बलवे' का नाद सिंध प्रांत की गली–गलियों में भी गूंजा था एवं सिंधवासी शाह लतीफ का कलाम "अल्ला इटर में होई जिंइ आंउ मरां बंद में" गाते रहे।

सन् १९१६ ई० में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर अहिंसा के आदर्शों को सामने रखकर सिंध के अनेक युवक–युवतियों ने स्कूल, कॉलेज की शिक्षा छोड़कर आज़ादी आन्दोलन में कूद पड़े। इस आह्वान का नारा था "अंग्रेज़ो भारत छोड़ो", "करो या मरो" बहिष्कार, स्वदेशी हलचल, हरिजन उद्धार, चरखा, हिन्दु–मुस्लिम एकता, अहिंसा परमों धर्म आदि। "इन्कलाब ज़िंदाबाद" के नारे की गूंज और "भारत माता की जय" की ललकार आज भी सिंधी कविता में गूंज रही है।

समय एवं प्रजा की मांग, लालसा, इच्छाओं को देखते हुए एवं सरफ़रोशी की तमन्ना को दिल में लिए जिन कवियों ने हजारों की संख्या में राष्ट्रीय, देशभक्ति एवं देश प्रेम से भरपूर गीतों की रचना की उन में सर्वोदय कार्यकर्ता पद्मश्री दादा हूंदराज दुःखायल अग्रसर रहे हैं। दुःखायल जी का जन्म सन् १९१० ई० में हुआ। सन् १९२८ ई० में अर्थात् अठारह वर्ष की छोटी सी आयु में उन्होंने राष्ट्रीय गीतों की न केवल रचना की परन्तु स्वयं–चारण बनकर, डफली बजाकर, क़ौमी तराने सिंध की गली–गली में गा–गाकर राष्ट्रकवि का दर्जा प्राप्त कर लिया। जितनी संख्या में क़ौमी गीतों, राष्ट्र भक्ति की कविताओं

की रचना दुःखायल जी ने आज तक की है अन्य किसी कवि ने इतनी रचनाएं नहीं की है। राष्ट्र कवि श्री दुःखायल जी अपनी पोशाक, रहन–सहन में बहुत सादगी पसंद हैं। उन्हें लोग प्रेम, आदर की भावना से "दादाजी" कह कर संबोधित करते हैं। उनकी रग–रग में भारतीय संस्कृति व्याप्त है और हृदय राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत है। राष्ट्र प्रेम की भावना से भरपूर उनके गीत–कविताएँ "संगीत फूल", झूंगार (सन् १६३८ में प्रकाशित) एवं "लातियूँ" (सन् १६४४ में प्रकाशित) पुस्तकों में सम्मिलित हैं। श्री दुःखायल का समग्र क़ौमी कलाम "क़ौमी ललकार" (१६६३ में प्रकाशित) पुस्तक में प्रकाशित है।

श्री दुःखायल जी के पहले सिंध के महान कवि किशनचंद बेवस (१८८५–१६४७) ने राष्ट्रीय कविताओं की रचना की। इन क़ौमी रचनाओं ने आज़ादी आंदोलन को बढ़ाया एवं नया मोड़ दिया। कविवर गांधी जी के उपासक थे। वे जेल नहीं गये थे परन्तु अंग्रेज़ों के विरुद्ध बहुत लिखा। श्री बेवस की कविताएं प्रभात–फेरियों में गाई जाती थीं। श्री दुःखायल, श्री बेवस जी के ही शिष्य थे। बेवस के अनेक शिष्यों जिनमें हरि दरियाणी दिलगीर भी हैं, जिन्होंने बहुत सारी क़ौमी कविताओं की रचना की है। दुःखायल के पहले भी बहुत सारे कवि सर्वश्री सोभराज फानी, लालचंद अमरडिनोमल, जेठमल परसराम, तोलाराम–मेंघराज, नवाज अली न्याय, गुलाम अहमद निज़ामाणी, आगा सूफ़ी, हैदरबख़्श जतोई, शरीफ मोहम्मद बख़्श आदि थे। उस युग में लाउड स्पीकर तो नहीं थे फिर भी ये तरानें ऊँचे स्वर में गला फाड़ देने वाली आवाज में सभाओं एवं जलूसों में गाए जाते एवं गलियों में गूंजते रहते थे।

सिंध में स्वतंत्रता आंदोलन के युग में न केवल सिंधी परन्तु मुसलमान कवियों ने भी राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति को प्रोत्साहित करने हेतु क़ौमी कविताओं की रचना की। इन कविताओं ने अंग्रेज़ों के जुल्मों के विरुद्ध एक वातावरण खड़ा कर दिया और विद्रोह को जन्म दिया। विद्रोह को दबाने हेतु अंग्रेज़ों ने ज़ोर–जुल्म, अत्याचारों को भी बढ़ावा दिया। विद्रोह को दबाने के प्रयत्न हुए। कई कवियों को गिरफ्तार करके कैद किया गया। बहुत से कवियों की प्रकाशित क़ौमी कविताओं

की पुस्तक–पुस्तिकाओं को ज़ब्त किया गया। जिन प्रेसों में पुस्तिकाएं प्रकाशित की जाती थी वे प्रेस बंद करा दिये गये। प्रेस मालिकों पर भारी दंड लागू किया गया। अंग्रेज़ों ने इन्कलाब को दबाने के जितने प्रयत्न किये, कवियों की कलम और तेज होती रही। छोटी पुस्तिकाएं छपवाकर और हाथ से भी कागज पर कविताएं लिखकर उनका जनता में वितरण किया जाता। ऐसी बहुत सी चोपड़ियां कवि दुःखायल जी ने भी प्रकाशित कराई थी। श्री भेरूमल ईसरदास जगतियाणी द्वारा प्रकाशित चोपड़ियां यथा भारत वंदना, आलाप वतन, गाँधी संगीत, आज़ादी, झंडे जा गीत आदि। ये पुस्तिकाएं क़ौमी गीतों एवं क़ौमी तरानों से भरपूर थी। इन गीतों ने सिंध में अंग्रेज़ों के विरूद्ध बगावत फैलाने में बहुत मदद दी थी। जिस से तंग आकर अंग्रेज़ों ने इन पुस्तिकाओं को ज़ब्त कर लिया था। चिंगारी समझकर उन्हें तहस–नहस कर दिया।

हम सिंधी कविता की ओर दृष्टिपात करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में रची कविताओं में देश प्रेम, हुब अलवतनी कूट–कूट कर भरी हुई है। बाद की कविताओं में गुलामी के प्रति नफ़रत, अंग्रज़ों के प्रति विद्रोह और अंत में इंकलाबी कविताएँ मुख्यतः हैं। देश प्रेम के साथ तिरंगे झंडे की शान, महानता के गीत भी हमें मिलते हैं।

सिंधी कविता में राष्ट्रीय चेतना के स्वर केवल आज़ादी पूर्व सिंधी कविता में ही नहीं मिलते बल्कि आज़ादी के नाम की सिंधी कविता भी राष्ट्र प्रेम, देश भक्ति से ओत–प्रोत रही है। समय अनुसार उसके विषयों में बदलाव आ गया है। आज़ादी पूर्व की सिंधी कविता इन्कलाब, आंदोलन, शहादत, देश भक्ति, झंडा वंदना, गांधी जी, स्वदेशी हलचल एवं क़ौमी एकता से भरपूर रही है। तो बाद की कविता देश की महानता, शहीदों की शहादत की यादगार, प्रजातंत्र की ज़हूरत, क़ौमी एकता, भाई चारे, सर्व–धर्म समभाव एवं देश की प्राचीन गौरवमयी गाथा है।

आजादी पूर्व के प्रतिष्ठित कवि हैः श्री हूंदराज दुःखायल, शेख अयाज़, नारायण श्याम, अर्जुन सिकायल, किशनचंद बेवस, लेखराज अज़ीज, आशा दुर्गापुरी, चेतनदेव शर्मा, अब्दुल करीम गिदाई, निर्मल

जीवताणी, पोपटी हीरानंदाणी, हरी दिलगीर, राम पंजवाणी, गौतम शिकारपुरी, हाफ़िज मोहम्मद, बलदेव गाजरा, जादूगर हासानंद, अर्जुन शाद, ख़ीयलदास फ़ानी, सुगन आहुजा, प्रभु वफा, महाराज विष्णु शर्मा, कन्हैयालाल ठाकुर, आगा सूफ़ी, लक्ष्मीचंद प्रेम, साधू वासवाणी, नूरी, परसराम जिया, रामचंद मोटवाणी, खानचंद खेराणी, विश्वामित्र वासवाणी, वासदेव निर्मल आदि। मुख्यतः कविताओं का सुर हैः—इन्कलाब, वतन परस्ती, आज़ादी, आज़ादगी, सायमन कमीशन, शहीदी खून, मुल्क के लिए कुर्बानी, कुईट इन्डिया, आज़ादी की बेटी, मुल्की प्यार, हिन्दुस्तानी, हिन्दुस्तानी माता, क़ौमी शान, घायल वतन, जेल यात्रा, आज़ादी की आहुति, आज़ादी के मंदिर में नवयुवकों की ललकार, आजाद हिन्दुस्तान, शेर सिपाही, लाजवाब भारत, हमारा देश प्यारा, क़ौमी तराना, क़ौमी झंडा, तिरंगे झंडे की शान, भारत महिमा, नमो—नमो प्रिय भारत माता, प्यारो वतन, मेरा देश, आरज़ू, दुलारो गांधी, गांधीवाद युग, मज़ेदार बापू, स्वदेशी, चरखे की महिमा, एकता की आवाज, एकता का राज, चरखे की आवाज, प्यारो भगत सिंह, सुर सिपाही शहीद हेमू कालाणी आदि।

तिरंगे झंडे की कविता,

आह आज़ादीअ संदो ऐलान ही क़ौमी झंडो,
क़ोम हिन्दुस्तान जो जिन्द जान ही क़ौमी झंडो।
हिन हिन्दोई हिन्द में जेसीं लुड़े थो लाल को
तेसीं सहंदो कीअं भला अपमान ही क़ौमी झंडों
जेसीं सिज में सोझरो ऐं चंड़ मे चमकार आ,
तेसी शल काइम रहे तो मां ही क़ौमी झंडों।

दुःखायल

बहादुर शाह जो बदलो, अञां मूंखे चुकाइण डे़
सर मग़रूर मग़रब जो, अञां मूंखे झुकाइण डे़।
अञां वठणों आ बदलो खून बहा झांसीअ जे राणीअ जो।
शहीद हरियत, सुल्तान टीपुअ जे जवानीअ जो।

अब्दुल करीम गदाई

सूरीअ जे चढ़ियो सेज ते सालार भगत सिंध
भारत जो बणियो लाड़िलो, दुलार भगत सिंध,

दुःखायल

भारत जिये असां जे मुआसीं त छा थियो?
सर सब्ज थिए चमन, फूले फले वतन
कंहि शाख ते असां न हुआसीं त छा थियो?
तुंहिंजे करार लाय थकासीं त छा थियो?

शेख अयाज़

शहीदन खून पहिंजे मां अजब आ जोत जाग्राई,
उन्हनि जे लाल लोहुअ मां बणी ताकत मसीहा ई,
पसी मरदांनगी तिन जी, अचन काइर बि मस्तीअ मे
शहीदी नेक नामीअ ने दुनिया सारी डुकी आई

आशा दुर्गापुरी

अकुल आज़ादगी इक़बाल ऐ आसूदगी इज़त
उने ई पेरु पाइंदा सच्ची जित मुल्क लाइ मुहबत
उहे माउर भली मुरकन, जे ब्रारोतन में लोली ड्रियन
त सदके देश तां तनु मनु करण जहिड़ी न बी ख़िजिमत

बेवस

मरंदासीं मगर मुल्क खे आज़ाद कंदासीं,
भारत खे नई ज़िंदगी इमदाद कंदासी,

दुःखायल

इहो चरखो सुदर्शन चक्कर जो आखिर में कमु ड्रीदों
न बख़्शे सघंदो, बख़्शे जहिड़ो थी हथियार स्वदेशी

ख़ादिम

हिकु ब्रारु : क़ौमी हस्ती कहिं आंदी?
सभु ब्रार : गांधी जी चउ, गांधी जी
हिकु ब्रारु : हिन्द में शक्ति कंहिं आंदी?
सभु ब्रार : गांधी जी चउ, गांधी जी।

लक्ष्मण पंजवाणी

धर्म ऐं मज़हब जा गुल गड्रिजी रहन गुलदान में,
गड्रु गुज़ारण जो अजबु गुण शल अचे इंसान में
ईश्वर ओभर में मुहिंजो तुहिंजो ओलह में अल्लाह

हिक ई हकु हित हुत आ, जींअ संगनि बन्ही में हिक निगाह।

खीयलदास "फानी"

अचो नव जवानों, हुनर आजमायूं,
छुटियूं गरम गोलियूं जिगर आजमायूं
परे खां पवन था तरपरियुनि जा तिजला
करे सख़्त सीना सुपर आजमायूं
हली जेलखाने में लोहे जूं शीखूं
ऐं ऊँचा भितियुनि जा पथर आज़मायूं

दुःखायल

जवानों अजु दिलेरीअ ज़ोर, हिम्मत जी जरूरत आ
अव्हां में ऐं सुपूतों, जोश जुरियत जी ज़रूरत आ।

नारायण श्याम

वतन लाइ सिरु जे ड्रिनोसीं त छा थियो,
फिदा तंहिं तां तनु मनु कयोसीं त छा थियो।

अर्जुन सिकायल

अजु आयो इन्कलाब, पोरहिया पवंदा साब,
दिल दिल आ बेताबु
भारत जी आज़ादी थींदी, ख़लकत जी आज़ादी।

निर्मल जीवताणी

देस जी आहे आला भगति, इहिड़ी जिअरे नाहे जुगति
हासिल थिये मरण ते मुक्ति, हर पासे थियें जय जयकार
देस जो धरि वीचार दिल में।

लेखराज अज़ीज

जित किथ खूब लगनि था नारा
तव्हीं गोरा, असीं कारा,
नीच तव्हां जालिम हत्यारा
असीं राम जा आहियूं प्यारा,
कुइट इन्डिया–कुइट इन्डिया।

पोपटी हीरानंदाणी

अजु भारत जे कुंड कुंड में आहे धूम मुनादीअ जी,
आहे त्यारी शादीअ जी,

वेड़ी आ आज़ादीअ जी
अजु भारत जे कुंड कुंड में आहे धूम मुनादीअ जी,

हरी दिलगीर

मान भारत जे मथां सर वरु मां सदिके कयां,
सिर हुजनि जे सेकड़े मां, सेकड़े भेरा धरियां।

गोतम शिकारपुरी

ज़मी ज़ाम पंहिजे वतन लाइ जीउ,
जीअणु जे घुरीं थो, जगत लाइ जीउ,
झंडो झूले पंहिंजे वतन जो सदा,
रखिजु मानु ऊँचो वतन जो अदा,
हुजे होशु हासिल त आज़ाद थीउ।
मिठे मुल्क जे लाइ ई मरु ऐं जीउ।

हासानंद जादूगर

भारत जो इतिहास पुराणों, भारत देश महानु
आज़ादीअ जी आहूतिअ में, थीउ अची कुर्बान।

प्रभु वफ़ा

ओ पुजारी हाण हलु, आज़ादीअ जे मंदर में,
जीवन खे करि सफल, आज़ादीअ जे मंदर में।

हरी दिलगीर

बरबाद चमन खे असीं आबाद कंदासी,
नाशाद खे आबाद करे, शाद कंदासी
बेदाद जो बस जल्दु असीं दादु कंदासी
मतलब त नई राह का ईज़ाद कंदासीं।

मिर्ज़ा कलीच बेग।

असां जो आह ज़िगर जान असां जो हिन्दुस्तान,
हज़ारें जान बि कुर्बान, असां जो हिन्दुस्तान,
भलो आ सारे जहां खां असां जो हिन्दुस्तान,

हेदरबख़्श जतोई

हिन दिल में सदाई आ रही हुब वतन जी
मारुईअ खां मूंञे आह मिली हुब वतन जी।

मोहम्मद बख़्श

मुहबत वतन जी सभिनि खां न्यारी,
थिये जान जंहिं में न कंहिं खे बि प्यारी
न ही दर्द जहिं दिल, गुनहगार आहे।
वतन जी मोहबत मज़ेदार आहे।

लक्ष्मीचंद प्रेम

सिंधी कविता विविध भारतीय भाषाओं के समान राष्ट्रीय चेतना जगाने में सदैव अग्रसर रही है। भारतीय साहित्य में देशभक्ति गीतों की गूंज में सिंधी कवि एवं गायक भी अपना सुर मिलाते रहे हैं और मिलाते रहेंगें! एक हृदय हो भारतीय जननी की भावना को बढ़ावा देते रहे हैं और देते रहेंगे। सिंधी कवियों ने राष्ट्र–भक्ति गीतों की रचना में कभी भी अपनी लेखनी को विश्राम नहीं दिया है और न ही देगें, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं श्री शेख अयाज़ के इस गीत को भी दोहराना चाहता हूं :–
भारत जीये, असीं जे मुआसीं त छा थियो,
फुले फले वतन, उजड़े न हीउ चमन,
कंहि शाख ते असीं न हुआ सीं त छा थियो।

✪★✪

कराची में वन्देमातरम् का गान करती सिंधी महिलाएँ १९४२ के स्वतन्त्रता संग्राम में

लेखक परिचय

नाम	:	डॉ० कमला गोकलाणी
जन्म तिथि	:	१६ जून, १९५० ई०
जन्म स्थान	:	अजमेर (राजस्थान)
शिक्षा	:	एम०ए० (हिन्दी, सिंधी), एम०एड०, स्नातकोत्तर डिप्लोमा पत्रकारिता में, पी०एचडी० - सिंधी।
सम्प्रति	:	व्याख्याता (सिंधी) राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।
पता	:	'फरहत', ए-४, नेहरूनगर, पो०: एच०एम०टी०, अजमेर ३०५ ००३
प्रकाशन	:	मूल- ३ कहानी संग्रह, ५ आलोचनाएँ, १ साहित्यिक निबन्ध। अनुवाद- ६ पुस्तकें, ३० कहानियाँ, २० कविताएँ, २० साहित्यिक आलोचनाएँ आदि अनेक सिंधी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। सम्पादन- 'रिहाण' (५ वर्ष) राजस्थान सिंधी अकादमी की वार्षिक पात्रिका, 'रचना' (२ वर्ष) साहित्यिक सिंधी जर्नल, 'वरदाई' (५ वर्ष) साहित्यिक हिन्दी जर्नल।
पुरस्कार	:	राजस्थान में सर्वश्रेष्ठ लेखक का पुरस्कार- राजस्थान सिंधी अकादमी- १९८९-१९९२, भारत में सर्वश्रेष्ठ लेखक का पुरस्कार-हरू सदारंगाणी स्वर्णपदक-१९९४, सिंधीभूषण एवं नारी गौरव का सम्मान द्वारा अ०भा० सिंधी समाज, अजमेर।

सिंधी कहानी में राष्ट्रीय चेतना

—डॉ. कमला गोकलाणी

स्वतंत्रता संग्राम याने भारत का स्वतंत्रता संग्राम अर्थात् भारत एक देश है, देश की अवधारणा और उससे प्रेम, और प्रेम वश आत्मीयता→ अधिकार→अपनापन जो इस विचार में बाधा डाले→हस्तक्षेप करे→ अनाधिकार हस्तांतरण करे वह शत्रु और उससे मुक्त करवाना देशभक्ति।

हमारे प्राचीन आचार्यों ने भाव विवेचन के अन्तर्गत राष्ट्रीयता जैसे किसी भाव का उल्लेख नहीं किया किन्तु स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास बताता है कि राष्ट्रीयता भी एक भाव है, जिसके वशीभूत व्यक्ति सर्वस्व बलिदान करता है। 'इसकी प्रबलता इसीसे सिद्ध है, कि कई बार राष्ट्रीयता की प्रेरणा के समक्ष अन्य स्थायी भाव वात्सल्य, शोक, रति, आदि फीके पड़ जाते हैं, परास्त हो जाते हैं। आन्दोलन में भाग लेने वाले व्यक्तियों द्वारा अपने दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन को ठुकरा कर राष्ट्रीयता की आग में कूद जाना यह सिद्ध करता है कि राष्ट्रीयता का भाव अन्य सभी भावों से ऊपर उठ जाने की क्षमता रखता है। दरअसल भारत का वसुधैव कुटुम्बकम का चिंतन तब भारतीय आचार्यों को राष्ट्र की सीमा में नहीं बांध पाया होगा— आगे जाकर आलोचकों ने संचारी भाव, स्थायी भाव के उदाहरण देकर इसे रस साबित करने की कोशिश की।

इस आलेख का दायरा कहानी तक सीमित है और वह भी सिंधी कहानी। सिंध का एक गौरवशाली इतिहास है। सिंध की संस्कृति भारत की प्राचीनतम संस्कृति है। सिंधु नदी के पावन तट पर ऋषि वृन्द ने वेद मंत्र रचे। महाभारत में सिंध का उल्लेख है; सिंध के राजा जयद्रथ कौरव सेना में उच्च पदासीन थे। महाभारत के उद्योग पर्व से सिंध की रानी विदुला की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक संवादात्मक कहानी का उल्लेख प्रांसंगिक मानती हूं जो आज की कहानी का बीज भी है। पाण्डवों की माता कुन्ती ने विदुला और संजय के कथानक को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हुए अपने बेटों को क्षात्रधर्म का पालन करने के लिए प्रेरित किया। कुन्ती ने विदुला के लिए

यशस्विनी, मन्युमती, कुलपा, ज्योतिस्मती, दान्ता, क्षात्रधर्मरता, दीर्घदर्शिनी श्रुतवाक्यां, बहुश्रुता जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है।

उसका पुत्र संजय जब सिंधुराज से पराजित हो युद्धभूमि छोड़ घर पर आ गया तो वीर माता ने उससे कहा– हे अनन्दन तुम मेरे पुत्र हो और शत्रु का हर्ष बढ़ा रहे हो। हे मन्युहीन, अज्ञानी कायर पुरुष, जीवन में निराश रहने वाले। कल्याण की धुरी का वहन करो। अपनी आत्मा का अपमान मत करो। डर त्याग कर शत्रु का संहार करो।

छोटी नदी शीघ्र भर जाती है, चूहे की अंजलि शीघ्र भर जाती है। कायर सुसंतोषी होता है, थोड़े से संतुष्ट हो जाता है। बाज़ की तरह शत्रु की कमजोरी देखकर उस पर टूट पड़ो, दहाड़ मार कर टूटो अथवा मौन रहकर, पर संशयहीन होकर टूटो।

तिंदुक के अलाव की तरह क्षण भर ही जी, तुष की अग्नि की तरह धुआं देते हुए मत जी :

अलावं तिन्दुक स्येव मुहूर्तमिव वि–ज्वल।
मा तुषाग्नि रिवान चिर्र धूमायस्व जिजीविषु :।।

चिरकाल तक धुआं देते रहने के स्थान पर तू तो क्षण भर ही जी। पराक्रम को प्रकट कर अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जा। हे कायर पुत्र! धर्म को त्याग कर क्यों जीना चाहते हो? विदुला थकी नहीं निरंतर बोलती रही–जिसके यश को सब लोग नहीं बखाने उसका जीवन ही व्यर्थ है। वह केवल संख्या वृद्धि के लिए है। न स्त्री है न पुरूष। जिसके चरित्र को दान, तप, सत्य और यश के प्रसंग में दुहराया न जाये।

जो पराक्रम द्वारा यथाशक्ति तेज प्रकट नहीं करता उस जीविताकांक्षी क्षत्रिय को चोर समझना चाहिये। माता की निरंतर प्रताड़ना सुन अन्त में संजय बोला, "जल में धरती धार्य होती है वैसे मुझे जीवन देने वाली माता तुम भविष्यत और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हो। मैं शत्रु को नियंत्रित करने और जय प्राप्त करने हेतु कटिबद्ध हूं।"

वीर माता के इस प्रसंग को 'जय' नामक इतिहास कथा कहा

है, जिसको सुनकर क्षत्रिय विजयोत्सुक होकर समस्त भू मंडल को जीत लेंगे। ऐसी वीरत्व पूर्ण बुलंद ऐतिहासिक परम्परा की विरासतें सम्भाले सिंधी समुदाय ने सर्वाधिक काव्य द्वारा अभिव्यक्ति की जिस विषय पर, अलग से आलेख है। इलिहास ने भी लिखा सारा देश मंसूर हैः सभी सूली पर चढ़ने को तैयार हैं–

अजु मुल्क मिड़ई मंसूर थियो
केड़ाहुं इशारो आ साईं
अजु सुडु थियो आ सूरीअ जो
चउ कंहिंजो वारो आ साईं?

उस समय माहौल ऐसा था कि सन् १६२० ई० के असहयोग आन्दोलन के समय जितने सिंधी गिरफ़्तार हुए उतने पूरे बम्बई प्रान्त से भी नहीं हुए। लगभग २०० स्वतंत्रता सेनानी जेल भेजे गये कई कर्मचारियों ने सरकारी नौकरियां छोड़ी। नमक आन्दोलन में ६०० सिंधी जेल गये। आनंद हिंगोरानी डांडी यात्रा में गाँधीजी के साथ सम्मिलित थे। भारत छोड़ो आंदोलन में २६०० व्यक्ति जेल गये। औरतों, विद्यार्थियों, लेखकों, कलाकारों, संतों और महात्माओं सभी की आहुतियां स्वाधीनता की बलिवेदी पर पड़ी।

मंघाराम मलकानी ने विभाजन पूर्व की सिंधी कहानी को छह हिस्सों में बाँटते हुए छठा दौर मौलिक, आर्थिक और राजनैतिक कहानियों का दौर माना है। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय तेजी से बदलते घटनाक्रम का सीधा प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा तथा कहानी को लोकप्रियता प्राप्त हुई। संघर्षों के बढ़ने से फुर्सत घटने लगी–दीर्घ उपन्यास की जगह कहानी ने लेनी शुरू की। अनुदित और मौलिक कहानियों के प्रकाशन की संख्या एकाएक बढ़ गयी। अनेक पत्र–पत्रिकाएं भी निकलने लगीं, कला पक्ष सशक्त हुआ अलबत्ता कुछ कहानीकारों ने मात्र इन्कलाबी नारे बाज़ी से काम लिया और कहानीकारों की कतार में शमिल हो गये। मलकानी ने दो–दो पंक्तियों की कथा वस्तु भी दी है, जबकि मेमण अब्दुल मजीद सिंधी ने 'सिधी अदब जो तारीख़ी जाइज़ो' में केवल नाम गिनाए हैं, ऐसा ही लीलो रूचंदानी ने 'स्वतंत्रता के बाद सिंधी साहित्य का इतिहास' में किया है। लालसिंह अजवानी ने इस विषय की कहानियों का कोई उल्लेख ही नहीं किया।

स्वतंत्रता आन्दोलन की श्रृंखला में पहली कहानी अब्दुल सत्तार शेख ने लिखी। सन् १९४०–४७ ई० तक तीसरे दौर में प्रगतिशील आन्दोलन की विचार–धारा से प्रभावित पूंजीवाद के विरुद्ध घृणा की विषयवस्तु गोविन्द पंजाबी के प्रथम कहानी संग्रह में मिलती है।

सिंधी साहित्य के इतिहास पर उपलब्ध प्रमुख ग्रंथ पढ़ कर मुझे महसूस हुआ कि राष्ट्रीय संकट, राष्ट्रीय आन्दोलन, मुक्ति संग्राम, जातीय जागरण आदि के दौर में शब्द और कर्म में परस्पर निकटता बढ़ जाती है। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान शब्द और कर्म के बीच जो पारस्परिक सहयोगिता बढ़ी थी वह कविता में जिस कदर बाहुल्य मात्रा में है उस मात्रा में कहानी में नहीं फिर भी कुछ प्रमुख कहानियां निम्नांकित हैं:–

लेखक	–	कहानियों के शीर्षक, समय (विषय वस्तु)
१. ए.जे. उत्तम	–	शिकस्त, आखिर कब तक, तरक्की की राह पर
२. हशू केवलरामानी	–	'पद्मा' आजादी के लिए बालिका की कुर्बानी पर आधारित हिक ब़ टे (एक, दो, तीन) द्वितीय विश्व युद्ध (१९४५)
३. लक्ष्मण राजपाल	–	क़ौमी सिपाही
४. कीरत बाबाणी	–	आज़ादीअ जो सद्दु (आज़ादी का बुलावा) पंजाब के दंगो में विधवा का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण।
५. ईसर कल्याणी	–	अजीब बुख (अजीब भूख)
६. राम अमरलाल	–	सरहद, चरी (पागल)
७. लक्ष्मण आहूजा	–	पागल (१९४५–४६)
८. चन्द्रा आडवानी	–	उथु भारत जी संतान (अठो भारत की संतान)
९. कृष्णा केवलरामानी	–	देशद्रोही
१०. भगवंती दयालाणी	–	भारती
११. खुशीराम वासवानी	–	'अधूरी कहानी (गांधी जी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास)

१२. ईश्वरी जोतवानी – उथु भारत जी संतान (१९४५ फुलेली पत्रिका में)

१३. शेख़ अय्याज – सफ़ेद वहशी

वैसे अय्याज़ की पहचान कवि के रूप में है। उनका काव्य देश की मान्यता, सुरक्षा, आबरू–अज़मत का काव्य है। अय्याज़ के 'गीत शासकों की तलवार से लड़े दुखायल की तरह जनजागरण का काम कर जनता में वीर रस का संचार किया। अलबत्ता कहानी के क्षेत्र में मुझे एक ही कहानी सफ़ेद वहशी उपलब्ध हुई है जो अंग्रेज़ों के विरुद्ध स्पष्ट शब्दों में आक्रोश व्यक्त करती है। कहानी का मुख्य पात्र सिद्दीक अपनी प्रेमिका गुल्ला को मजबूरी वश अपना जिस्म गोरों को बेचते देख तिलमिला उठता है तथा कहता है–

"हम हिन्दुस्तानी अपने मौलिक अधिकारों की मांग करें तब भी हमें गोलियों से उड़ाया जाये अगर हम अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाएं तो हम पर अश्रुगैस छोड़कर तितर–बितर किया जाये, आखिर ये अंग्रेज़ ये सफ़ेद वहशी (पशु) कब तक हिन्दुस्तान की जनता के साथ रक्तपात जारी रखेंगे? आख़िर कब तक?

सफ़ेद वहशी.....हमारी ज़िन्दगी, ग़ैरत मुहब्बत के हत्यारे! सफ़ेद वहशी....सफ़ेद वहशी...सफ़ेद...

एक ने कहा–ये गोरे सफ़ेद वहशी हमारे जीवन को तुच्छ समझते हैं, वे समझते हैं कि हम ज़लील है गुलाम हैं, काले हैं। क्रोधावेश में उसके नथुने फूल गये, वह अधिक कुछ नहीं कर पाया।

उसने खिड़की की सलाखों से अन्दर झांका, वह चकरा गया, अन्दर दो गोरे सिपाही खड़े थे। एक ने गुलां को 'बांहों में जकड़ रखा था और उस पर चुम्बनों की बौछार करते हुए बोला 'फाइव रुपीज नाट मोर'। गुलां का पिता टूटी फूटी उर्दू में कह रहा था, "नहीं साब, पांच नहीं दस, सब दस दे जाते हैं।"

कल सिद्दीक को हत्या के जुर्म में आजीवन कारावास मिला था।

कला सत्य की तलाश है। सत्य एक लज्जाशील नारी की तरह

न केवल अपना खूबसूरत चेहरा छुपाने की कोशिश करता है पर अपने चेहरे से अनायास घूंघट हटाकर सम्पूर्ण दीदार कराने को हर्गिज़ तैयार नहीं होता। कोई भी कलाकार सम्पूर्ण सत्य नहीं पकड़ सकता–क्योंकि उसका रूप इतना विविध बहु आयामी और विशाल है कि साहित्यकार को एक समय पर एक ही रेख, किरण जितना उजाला मिलता है और उसे अधिक से अधिक तलाशने में प्रयासरत रहता है। कब एकाधिक किरणें प्रदीप्त हो उजास युक्त माहौल बनाएँ कह नहीं सकते।

अली बाबा की 'नांगा निंड न कनि' इसी सत्य की अभिव्यक्ति कर रही है। देखें कहानी के अंश–

काशः कोई वतन में बेवतन न बने। काशः कोई अंतस में तड़पता न रहे। मैं रो रहा हूं, चौराहे पर खड़ा आंखों पर हाथ रखकर रो रहा हूं। मेरे साथ विश्वासघात हुआ है। कौन जाने मुझे कितनी जंज़ीरों में जकड़ा गया है। कितने ताले लगे हैं मुझ पर मैं मोहन–जो–दड़ो के खण्डहरों की भटकती रूह हूं। मैं उड़ कर वहीं जाना चाहता हूं पर मेरे पंख काटे गये हैं। मेरे सोच व एहसासों पर पहरे लगे है (...क्यों न रोऊँ, तड़पूँ, छटपटाऊँ दिल को किस छलावे में छलूं। मेरा इस धरती से जन्म जन्मांतर का नाता है अनादि कालीन रिश्ता है। मुझे इस .....

धरती से, धरती के लोगों से, जंगल व जानवरों से पेड़ पत्तों पक्षियों, पहाड़ों नगरों खण्डहरों से। इस धरती की जहां से खुदाई करोगे, मेरी तस्वीर पाओगे। मैं वही हूँ जिसने मोअन–जो दड़ो के मन्दिरों में अमन के घंटे गुंजाये थे। इस धरती के जितने भी फूल हैं वे मेरे लहू की महक से सुवासित है ये कैसी आज़ादी है कि मैं उड़ान नहीं भर सकता? मुझे नहीं चाहिये ऐसी गूंगी, नेत्रहीन, बहरी, लूली, लंगड़ी उपज, कोढ़ युक्त आज़ादी।'

मेरी इस सीमा को मैं सिर झुकाकर स्वीकार करती हूं कि मूल कहानियां बावजूद अत्यधिक प्रयास के नहीं मिल सकीं। उन पर टिप्पणी करने में असमर्थ हूं। विभाजनोपरान्त साहित्य अकादमी ने तीन प्रतिनिधि संलग्न प्रकाशित किये हैं निजी संस्थानों ने भी अनेक

पर उपर्युक्त विषय पर कहानियां उपलब्ध न हो सकीं। आज़ादी से पूर्व भोगे गये कटु अनुभव सम्भवतः आज़ादी के बाद कहानी का रूप लेते–क्योंकि उस वक्त संघर्षरत लेखक को इतनी फुर्सत कहां थी वह स्वयं आन्दोलन का हिस्सा था–फिर एकदम उसे विभाजन की त्रासदी से रूबरू होना पड़ा और कहानी विधा कमजोर विधा बनकर रह गयी (वर्णित विषय के परिप्रेक्ष्य में)

जीवनी साहित्य में यथार्थ होता है, कहानी में कल्पना का अंश होता है। स्वतंत्रता सेनानी परिवारों के बलिदान की गाथाएं कहानियों से अधिक प्रभावी व रोंगटे खड़े करने वाली हैं। अपनी बात के समर्थन में चन्द ऐतिहासिक दस्तावेज़ प्रस्तुत है :

हैदराबाद सिंध के प्रसिद्ध सिंधी व्यापारी क.ए.जी.चोटरमल फर्म के सइगनो स्थित बंगले में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने एशिया खण्ड में भारत की आज़ादी की अखण्ड ज्योति प्रज्वलित की तथा शहीदों के सरताज बने। 'नेताजी' के चरणों में करोड़ों रू० भेंट कर उन्हें आर्थिक समस्या से निजात दिलायी।

–दीवान जेठमल छाबड़िया 'मीरों' के साम्राज्य के अन्तिम वर्षों में शिकारपुर के गवर्नर थे (राम जेठमलानी के परदादा) जेठमल की तस्वीर लंदन के ब्रिटिश म्यूज़्यम में थी।

–स्वतन्त्रता के दौरान अनेक नेतावृन्द को विदेशों में रह रहे सिंधी व्यापारियों ने न केवल जापान, अमेरिका आदि में शरण दी अपितु वहीं से आन्दोलन जारी रखने में सहयोग देते रहे। यथार्थ में घटित ऐसी अनेक हकीकतें सच्चाइयां कहानियों से अधिक रोचक व प्रेरक हैं।

ऐसे जीवनी साहित्य का तो भण्डार है। विशेष रूप से विशन दास ईसरानी की 'वीरनि जूं वार्ताऊं' तथा 'हर फ़न में होशियार सिंधी' पुस्तकों में जीवनी और सच्ची घटनाएं बड़ी रोचक हैं अलबत्ता कहानी कला की दृष्टि से अनेक कमियां हैं।

उन मर्मस्पर्शी जीवनियों को पढ़कर मुझे सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की उक्ति स्मरण हो आयी–

देखो देखो -- वे आज़ाद आदमी से डरते हैं। सारी दुनिया आज़ाद आदमी से डरती है

क्योंकि उसकी हथेलियां/इस दुनिया को रचती हैं और फूल और सांप के फनों का अन्तर नहीं जानती उन्हें एक साथ थाम लेती है।''

कुछ ऐसा ही सत्य अकबर अली लग़ारी की कहानी 'अंधो उभु–अंधी धरती' (अंधा आकाश अंधी धरती) से उद्धृत हो रहा है,

'आखिर सप्त सिंधु देश के लाखों इंसान हाथों में हाथ लिए आगे बढ़ने लगे। नगर–नगर चिंगारी भड़क उठी। गली–गली आग के गोले बरसने लगे। सरकार को भी पता चला कि सिंध निवासी अब जाग चुके हैं। लाखों इन्सानों के पीछे सरकारी कुत्ते छोड़े गये। झूठे केस बनाये गये.... उन्होंने मिलकर फैसला किया कि सिंध के बड़े नगर में जुलूस निकाला जाये, जुलूस की तिथि तय की गयी।'

कुल मिलाकर मैं इस नतीजे पर पहुंची हूं कि मूल रूप से कहानी विधा के उदाहरण अंगुलियों पर गिने जा सकने योग्य ही हैं। आन्दोलन की ऐतिहासिक जानकारी के ग्रन्थ एवं जीवनी साहित्य की अनेक पुस्तकें इस रिक्तता को पूर्ण बना रही हैं आवश्यकता है गहन शोध की। हमारा दुर्भाग्य है कि मूल साहित्य सिंध में ही रह गया। हमारी नयी पीढ़ी भाषा के प्रति उदासीन है तो साहित्यिक शोध की क्या उम्मीद रखें। फिर भी 'उ०प्र० सिंधी अकादमी' को साधुवाद। जिसने नयी पीढ़ी को व असिंधी भाषियों को इस सेमीनार में हिंदी पत्रवाचन के माध्यम से हमारे गौरवशाली अध्याय से परिचित करवाने की कोशिश की है। वरन् जैसे आज मुझे मूल कहानियां नहीं मिलीं वैसे आने वाले कल में आज का साहित्य रद्दी में बिकता फिरेगा।

✪★✪

लेखक परिचय

नाम	:	रीटा शहाणी
जन्म तिथि	:	२४ अगस्त सन् १९३४ ई०
जन्म स्थान	:	हैदराबाद (सिंध)
शिक्षा	:	इन्टरमीडिएट-आर्ट्स
सम्प्रति	:	लेखन
पता	:	७ फ्लोरीना बंगुलो, वोट क्लब रोड, पुणे-४११ ००१
प्रकाशन	:	२१ पुस्तकें सिंधी में एवं १ हिन्दी में पंख वजाईन शंख (काव्य), भिंभिरके जी भुण-भुण (उपन्यास), सुजाण जूं स्मृतियूं (जीवनी), धिन्डु जाणु वगो, बिपहरीअ-जा-ब-पल (आत्मकथा), तब्सरो (समालोचना) आदि।
पुरस्कार	:	१. केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (१९८७) २. बी०ई०एस०टी० (१९९७) ३. कोशी डीअलदास ट्रस्ट (१९९६) ४. अ०भा० सिंधी साहित्य बोली सभा (१९९७) ५. आर०जे० आडवाणी (१९९७)
अन्य	:	सदस्य -- राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद - वड़ोदरा

सिंधी उपन्यास में स्वतंत्रता संग्राम की झलकियाँ

–रीटा शहाणी

जब किसी परिवार के साथ सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा होता है, बाहर शान्ति होती है तो भीतरी छोटी साधारण सी बातों पर घर में कलह हुआ करता है परन्तु जब बाहर से कोई शत्रु या कोई ग़ैर हानि पहुँचाने हेतु प्रकट होता है तो परिवार के सभी सदस्य अपने परस्पर तुच्छ भेदभाव मिटाकर अपने घर की रक्षा करते हैं। यही बात देशों से भी लागू है। भारत के भीतर भी भेदभाव मौजूद थे। जाति–पाति के, धर्म के, प्रान्तों के, रियासतों के अनेक छोटे–छोटे भेदभाव सदियों से चल रहे थे परन्तु अंग्रेज़ों के आने पर जब ब्रिटिश साम्राज्य का विराट संकट सामने आया तो सम्पूर्ण भारतवासी एकता के सूत्र में बंध गए और एक होकर शत्रु को अपनी धरती से बाहर खदेड़ने की कोशिशों में जुट गए। सन् १८५७ के स्वतन्त्रता युद्ध से लेकर सन् १९४७ तक वाला काल कुछ ऐसा रहा जो इतिहास में स्वर्णाक्षरों मे अंकित किया जायेगा। गुजरात के महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता के उपासकों का टोला निकल पड़ा जिनमें बंगाल के सुभाषचन्द्र बोस, कश्मीर के (पर उत्तर प्रदेश में रहने वाले) जवाहरलाल नेहरू, महाराष्ट्र के तिलक, सिन्ध के हेमू कालाणी अपनी जाने हथेलियों पर लिए निकल पड़े। सत्याग्रहों, अनशनों, उपवासों, जेल यात्राओं का तांता बंध गया और देश 'इंकलाब ज़िंदाबाद' के नारों से गूँजने लगा। कारावास, सैकड़ों हजारों अंग्रेज़ी सरकार के विरोधियों से भरने लगे। कैसा था वह युग? वह युग था एकता का, कुर्बानी का, उँचे आदर्शों का, देशभक्ति त्याग का, बलिदान का। वह युग ऐसा था, जब राष्ट्रीयता की भावना, भारतवासियों की अन्य भावनाओं पर हावी हो चुकी थी। उस शुद्ध व पवित्र भावना ने मनुष्य के समस्त नकारात्मक भावनाओं–स्वार्थ ख़ुदपरस्ती और भेदभाव को नष्ट कर दिया था और उसको मानसिक व नैतिक रूप से बलवान बना दिया था। उनके दिलों में केवल एक ही तमन्ना पनप रही थी और वह थी सरफ़रोशी की :–

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाजुए क़ातिल में है

साहित्य जीवन का दर्पण है। जो कुछ जीवन में हो रहा है उसका प्रतिविम्ब साहित्यिक रचनाओं में नज़र आना स्वाभाविक तो है ही, अनिवार्य भी है, क्योंकि साहित्यकार का जीवन भी समाज से जुड़ा है। हमें रवीन्द्रनाथ टैगौर, बंकिमचन्द्र चटर्जी, वीर सावरकर, सरोजनी नायडू, हूंदराज दुखायल की कविताएँ देश प्रेम से ओत–प्रोत मिली हैं तो बंकिमचन्द्र रचित आनन्द मठ, प्रेमचन्द्र लिखित–रंगभूमि व धर्मभूमि उपन्यास भी मिले हैं। जिनके पात्र देश प्रेम के लिए अपना अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार हो जाते हैं।

सिन्धी काव्य विधा में जब हमें सैकड़ों ऐसी कविताएं मिलती है जो राष्ट्रीय चेतना, देश प्रेम व अंग्रेज़ी सरकार के प्रति विरोधी भावनाओं से ओत–प्रोत हैं विशेष रूप से पद्मश्री हूंदराज दुखायल की कविताएं, जिन्होंने जनता में प्रत्यक्ष रूप से देश प्रेम की भावनाओं को उजागर किया, सिन्धी पत्रकारिता के इतिहास में पत्रकारों तथा सम्पादकों के स्वतन्त्रता संग्राम में अद्वितीय योगदान व बलिदान के उदाहरण मिलते हैं, तब उस समय की यह एक हकीकत है कि सिन्धी उपन्यासों में ऐसी बातें कम मात्रा में मिलती हैं। प्रत्यक्ष रूप से सिन्धी उपन्यासों में पात्रों द्वारा, जनता को प्रेरित करने के उदाहरण हमें कम मात्रा में मिलते हैं, इस सच्चाई को हमें स्वीकारना पड़ेगा। हां, चन्द उपन्यास उस समय भी लिखे गए थे जिनके पात्र आजादी के परवाने थे और स्वतन्त्रता के पूर्व ही लिखे गए थे। प्रथम शेवक भोजराज लिखित 'आर्शीवाद' और दूसरा गुली सदारंगाणी लिखित 'इतिहाद'। सिंधी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के उपन्यासों के अनुवादों ने किसी हद तक पाठकों को प्रेरित किया था किन्तु मैं उनका उल्लेख यहां करना उचित नहीं समझती।

चूंकि सिन्धी स्वतन्त्रता प्राप्ति के फलस्वरूप देश के विभाजन की शिकार हुए सिन्धियों को घर से बेघर होना पड़ा था, सिन्धी रचनाओं में मातृभूमि से बिछड़ने की पीड़ा, मानसिक व शारीरिक संघर्ष अधिक मात्रा में है। उनमें शरणार्थी जीवन की झलक भी दिखाई

देती हैं। उनमें देश प्रेम तो है ही, पर कुछ पुस्तकों में दोनों चीजों का मिश्रण है। अतः मैं अपना प्रस्तुतिकरण दो भागों में विभाजित करती हूँ :–

१. स्वतन्त्रता से पूर्व वाले उपन्यास जिनमें दो उपन्यासों का उल्लेख है।

२. स्वातंत्रयोपरान्त् भारत में लिखे दो उपन्यास जो यद्यपि प्रकाशित स्वतन्त्र भारत में हुए थे किन्तु उनका कथानक परतन्त्र भारत की पृष्ठभूमि पर हैं और पात्र भी उसी काल के हैं।

प्रथम भाग– 'आशीर्वाद' के लेखक पद्म श्री शेवक भोजराज बालकों के हित के लिए स्थापित 'बालकन की बाड़ी' के जन्मदाता थे। वे विद्वान थे, स्वतन्त्रता सेनानी व त्याग की मूर्ति थे। उन्होंने यह उपन्यास कराची जेल की कोठरी में लिखा था सन् १६३२ में। वह उस समय प्रकाशित हुआ था परन्तु उसका दूसरा संस्करण भारत में सन् १६१४ ई० में प्रकाशित हुआ।

इस पुस्तक में एक नवयुवक श्याम की कहानी है, जिसे वह स्वयं प्रथम वाचक के रूप में पाठकों को सुनाता है। बाल्यावस्था में अपने दिल की कोमल भावनाओं से लेकर अपने बचपन के मासूम प्रेम कमला के साथ अपने माता–पिता के सुसंस्कारों का सुरुचिपूर्ण विवरण, विद्यार्थी जीवन, व यौवन में प्रवेश होने की क्रिया का उल्लेख इसमें आता है। स्वदेशी लहर सिन्ध में आई और उससे प्रभावित होकर वह जुड़ गया। अपनी वेशभूषा परिवर्तित कर दी, धोती व बन्द गले वाला कोट पहनना आरम्भ कर दिया व चीनी के सेवन का बहिष्कार कर दिया। लोगों ने, मित्रों ने उसकी हंसी उड़ाई पर उसने किसी की परवाह न की। किस प्रकार सन् १६१६ ई० में लाड़काणा शहर में महात्मा गांधी के चित्र को लेकर जुलूस निकाला गया। जिसमें उस चित्र को हार पहनाने का महत्वपूर्ण कार्य, श्याम को सौंपा गया। उस छोटे से कार्य को कितनी अहमियत थी क्योंकि हार पहनाने वाला एक कमसिन व भावुक युवक था। जिस प्रकार लेखक ने इस घटना का वर्णन किया है वह निःसंदेह हृदय को छू लेता है।

"लोगों के बीच में रास्ता बनाता, मैं गाड़ी के पास पहुंचा। गाड़ी में घोड़े नहीं बंधे थे वरन् लोग इसे अपने कंधो से खींच रहे थे। मैं हार चढ़ाने के लिए गाड़ी के समीप पहुँचा। मेरे हाथ काँपने लगे थे। पहले धीरे–धीरे फिर शीघ्रता से अपनी बाँह को लम्बा किया और महात्मा गाँधी की फोटो पर हार चढ़ा दिया। हाथों से हार का बोझ हल्का होने से मेरे हृदय का भार भी हल्का हो गया। कार्य कुशलता से कर चुका था अतः मेरा हृदय हल्का अवश्य हुआ था पर कार्य कितना भारी था यह सोच सोचकर मेरा हृदय भर भर आता था" (पृ० ४८)

सन् १६२१ में गाँधी के 'असहकार आंदोलन' को सहकार देने के इरादे से श्याम ने अपना स्कूल तक छोड़ दिया।

उसकी देखा देखी, पंद्रह दिनों के भीतर, शहर के चालीस लड़कों ने अपने स्कूल को तिलांजलि दे दी और उसने स्वयं कुछ लड़कों सहित, छोटे लड़कों को एक बाग़ में, पढ़ाना आरम्भ कर दिया।

जब गाँधी जी सिंध में आए, वे लाड़काणा पधारे तब भी हमारे नायक ने परिश्रम में रात–दिन एक कर दी और उनके स्वागत की तैयारियों में लग गए। यहां तक कि जब गांधी जी के आने का समय आया तो वह थक कर चूर होकर बेहोश हो गया। रास्ते में पड़ा रहा, किसी को पता न चला।

होली के अवसर पर, किस प्रकार लकड़ियों के स्थान पर लोगों से विदेशी कपड़े मांग मांग कर उनकी होली जलाई थी, उसका भी सशक्त वर्णन इसमें है। श्याम ने वहां भाषण भी दिया उसका अन्तिम भाग इस प्रकार था," प्रत्येक हिन्दू व मुसलमान भाई व बहन का यह कर्तव्य है कि इस धर्म युग में प्रवेश करें और कुछ न कर पाएँ तो चरखा चलाएँ और घर–घर में खादी का उपयोग करें। भारत माता नम्रता से आपकी और निहार रही है, क्या आप उनकी सन्तान अपनी सच्चाई न देंगे? आज इन विलायती वस्त्रों की होली जलाते समय आप वचनबद्ध हों कि आज से आप विदेशी वस्तुओं का उपयोग न करेंगे व सदैव खादी पहनेंगे"।

"भारत माता की जय', वंदे मातरम्', अल्ला हो अकबर, महात्मा गांधी की जय के नारे आरम्भ हो गए। भारत के शेर सन्तान की दहाड़ से आसमान हिलने लगा, विलायती टोपियाँ उछलने लगी और कुछ क्षणों में बड़ा सा ढ़ेर लग गया। स्कूल के लड़के गाँधी टोपियों मे पैसे एकत्रित करने में जुट गए। राष्ट्रीय गीत भी गाये जा रहे थे"

तत्पश्चात श्याम की गिरफ्तारी का वारंट निकला "पाँच सौ रूपये दंड अथवा एक वर्ष कारावास, बिना मशक़त" लोग स्टेशन पर इकट्ठे हो गये। तब हमारे नायक ने उनसे विनती की, "किसी हालत में मेरी ओर से दंड न भरिएगा। सरकारी कोष में, मेरी ओर से पैसा किसी भी स्थिति में जमा न हो। सूली की सख़्तियाँ ही हमारा श्रृंगार है। तभी तो हम स्वतन्त्रता प्राप्त कर पाएंगे। दंड भरकर आप लोग मेरे दिल को भारी सदमा पहुंचाएंगे।"

एक वर्ष पश्चात वह जेल से बाहर आया तो उसका विवाह कर दिया गया, सुन्दरी के साथ। उसकी पत्नी ने उसे भरपूर साथ दिया। उसने भी अपनी ओर से उसे घर से बाहर निकलने के लिए प्रोत्साहित किया, पढ़ाया लिखाया व दोनों पति–पत्नी सादगी, सच्चाई व नम्रता से देश व समाज को सेवा में जुट गए। तदन्तर उसकी भेंट उसकी बचपन की प्रेमिका कमला से होती है जो तब तक विधवा हो चुकी होती है। सुन्दरी व कमला मे अच्छी मित्रता का संबंध जुड़ जाता है। सुन्दरी की ज्वर ग्रस्त होकर मृत्यु हो जाती है। श्याम को फिर जेल की सज़ा भुगतनी पड़ती है उस समय कमला भी जेल में है। दोनों की जब जेल से रिहाई मिली तो दोनों ने श्याम की माता की चरण वंदना की और उनसे 'आशीर्वाद' मांगा। यह एक आर्दशवादी नाविलिट है जिसमे हमें "भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम" की काफी मात्रा में झलकियाँ मिलती हैं। वैसे वह जमाना ही आदर्शवादी कलाकृतियों का था।

दूसरा उपन्यास

जिसमें स्वतन्त्रता संग्राम का उल्लेख पात्रों द्वारा हमारे सामने

आता है वह है लेखिका गुली सदारंगानी रचित 'इतिहाद' । वह सन् १९४२ ई० में सिन्ध में प्रकाशित हुआ था। उसका दूसरा संस्करण सन् १९८३ ई० में भारत में निकलकर ज़ाहिर हुआ था जिसका नाम 'मिलापी जीवन' रक्खा गया। यद्यपि इस उपन्यास का केन्द्रीय बिन्दु धार्मिक एकता है, जहां लेखिका ने यह दिखाने की कोशिश की है कि सब मनुष्य एक रचयिता की एक सी रचनाएं हैं और सभी गुणों व अवगुणों से भरे पड़े हैं तथापि इसमें राष्ट्रीय चेतना भी परिपूर्ण है नायिका–आशा प्रकृति के सौंदर्य की पुजारिन है और पहाड़ी इलाके अलमोड़ा में रहती है अपने माता–पिता के साथ। हामीद सिन्धी मुसलमान हैं। आशा का उससे परिचय विजय व उसकी पत्नी अरूणा द्वारा होता है। विजय स्वतन्त्रता संग्राम की हलचल से जुड़ा है उसके आराध्य महात्मा गाँधी हैं उसने अपने विचारों से आशा को प्रभावित कर दिया था और वह भी देश की आज़ादी की चाहक बन गई। विजय ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था और जेल यात्रा भी की थी। वह एक वकील था और 'आज़ाद हिन्दुस्तान' पत्रिका का सम्पादक भी। उसकी पत्नी अरुणा एक शिक्षित रोशन दिमाग़ व विशाल दृष्टि की महिला थी। वह अपने पति के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती थी और समाज सेवा में भी उसकी संगिनी थी। उस दम्पति के हामीद से अच्छी मित्रता व प्रेम के संबंध जुड़ गए। उनमें एक अनोखी आत्मीयता थी। हामीद उनसे मिलने हेतु अलमोड़ा आया था जहां उसकी भेंट आशा से हुई। आशा के माता–पिता संकीर्ण विचारों वाले थे। उन्हें आशा का विजय और अरूणा से मिलना बिल्कुल पसन्द नहीं था परन्तु आशा के पिता की हृदय रोग से अकस्मात मृत्यु हो जाती है और उसकी माता जी भी कुछ समय पश्चात चल बसती हैं। अन्त में मुसलमान हामीद से आशा का मिलन होता है।

उपन्यास में कई स्थानों पर पात्रों का राजनैतिक व सामाजिक विषयों पर वाद–विवाद व विचार–विमर्श होते दिखाया जाता है। अरुणा विजय व हामीद इस प्रकार वार्तालाप करते नज़र आते हैं। विजय के शब्दो में :

"मैं समझता हूं कि इस समय जब हमारा देश जागृत हो चुका

है व नाजुक परिर्वतन से गुज़र रहा है हमें योरुपी देशों की नकल नहीं करनी चाहिए। सम्भव है उनके गुण ग्रहण करने के स्थान पर हम उनके अवगुणों की ओर अधिक आकर्षित हों। तब तो जड़वाद की खाई में गिरना हमारा निश्चित होगा। हम तबाह व बरबाद हो जायेंगे।''

''नही विजय नहीं! ऐसा कभी नहीं होगा। हमारा देश अपनी प्राचीन सभ्यता को कभी भुला नहीं सकता। इस समय सूर्य बादलों में छुपा हुआ है तो उसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वह अलूप हो गया है। याद रहे सदैव पूर्व से ही सूर्योदय होता है। मुझे विश्वास है कि पूरब से प्रकाश की रोशनियां फूटेंगी अवश्य और वे पश्चिम के अंधेरों को दूर करेंगी इस समय परतन्त्रता के कीटाणुओं ने हमें निर्बल व रोगी बना लिया है। शीघ्र ही हममें आत्मसम्मान व साहस की भावनाएं उमड़ पड़ेंगी और हम अपने देश पर गर्व करने लगेंगे।'' अरुणा ने उत्साहपूर्वक कहा।

मोहन कल्पना के उपन्यास 'मसुंड ऐ कांवु' (सन् १९२१ ई० में प्रकाशित) में दोनों बातें विद्यमान हैं। यह कथा एक मानसिक रोगी–सलामत–का फ्लैश बैक है जिसे वह अस्पताल में लिखता है। वह एक विचार से दूसरे विचार तक भटकता रहता है। उसे कराची के अपनी कॉलेजी दिन याद आते हैं जब स्वतन्त्रता संग्राम जोर पर था। उसने भाषणं दिये थे, जेल भी गया था, वाद–विवाद किए थे, डँडे व लाठियाँ भी खाई थीं। यह पुस्तक अविभाजित भारत के सिन्ध प्रान्त की राजनैतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखी गयी है। विश्व के साम्यवादी मुद्दों पर भी खुले मन व मस्तिष्क से विचारों का प्रकटीकरण तो है ही पर विभाजन उपरान्त शरणार्थी जीवन की दुर्दशाओं, मानसिक व शारीरिक पीड़ाओं ग़रीबी, बेरोज़गारी व भटकाव का शक्तिशाली चित्रण है। वह व्यक्ति जो अपना मानसिक संतुलन खो चुका है। जैसे हर सप्ताह 'शॉक ट्रीटमेंट' दिया जा रहा हो, अपने अतीत की खाइयों में भटक रहा हो और वर्तमान की कठिनाइयों व कष्टों को झेल रहा हो, साथ ही साथ वह संसार के राजनैतिक परिवेश का विशाल दृष्टि से समीक्षण भी कर रहा हो। उसके मस्तिष्क

में एक दुर्बल नन्हें मुन्ने कौवे की कल्पना है जो अथाह गहरे समुद्र के समक्ष खड़ा होकर अपनी छोटी सी चोंच में समुद्र के पानी की बूंद–बूंद को समा लेना चाहता है। कितना बेबस है वह! वह संसार के लिए कुछ करना चाहता है पर निर्दयी लहरें उसकी चोंच को ही तोड़ देती हैं और उस थके–माँदे कौवे को समुद्र की लहरें अपने में समा लेती हैं।

सलामत के विचार विद्रोही व मौलिक हैं जिन्हें वह बिना किसी झिझक व हिचकिचाहट के प्रकट करता जाता है। कुछ अंश यहां प्रस्तुत करती हूँ :–

१. उस दिन मैंने कॉलेज की डिबेट में अहिंसा के भक्तों की धज्जियाँ उड़ा दी किन्तु अन्तिम छेद में मुझे प्रिंसिपल से अपमानित होना पड़ा। वास्तव में जिसका अपमान होता है उसे अपमानित होना नहीं चाहिए....प्रिंसिपल की पढ़ाई पाठ्य पुस्तकों तक ही सीमित है। वे नियमों व प्रतिबन्धों के अधीन हैं। वे उस मुकाम पे हैं जहां स्वतन्त्रता, रचनात्मकता व इंकलाबी विचारों का कोई मूल्य नहीं। उन्होंने दो देशभक्तों को फोन कर मुझे गिरफ्तार करा दिया। उसके बाद पुलिस की जीप, लॉकप, मारपीट रिहाई, धर्म, प्यार, पाकिस्तान....." (पृष्ठ ६०)

२. समूचे भारत तथा कराची में आज़ादी के जुलूस निकलते रहते हैं। नेता गिरफ़्तार व आज़ाद होते रहते हैं। दीवारों पर सरकार की ओर से नाज़ियों के विरुद्ध नारे व काँग्रेस की ओर से स्वतन्त्रता के नारे लिखे जाते हैं। रात को ब्लैक आऊट परन्तु सम्पूर्ण ब्लैक आऊट नहीं। बल्व के चारो ओर काला काग़ज़, केवल नीचे का भाग खाली। इंग्लैंड से कमीशनें आती रहती हैं, जाती रहती हैं, वातावरण मे शोर, केवल रात्रि में शान्ति. ..... (पृष्ठ ६१)

३. .....परन्तु इस रात जब सोया तो इश्क, इस्लाम पाकिस्तान व न्याज़ी (उसकी प्रेमिका) के बारे मे सोच नहीं पाया। शरीर की पीड़ा मन पर ग़ालिब होने लगी। मैं सोचने लगा यदि पाकिस्तान

हो गया तो हजारों लोग जलावतन हो जाएंगे। कितनी मित्रताएं मुहब्बतें उसकी शिकार हो जाएंगी, भस्म हो जाएंगी। उन सबको बचाने के लिए, पाकिस्तान का विरोध करना ही पड़ेगा। यह फटके जो रात को मुझे सोने नहीं देते इस बात की सीख दे रहे हैं कि साम्यवाद ही स्वतन्त्र भारत की आवश्यकता है।''(पृ०६४)

४ .....पर मेरे ऐसे नवयुवकों के लिए और कौन सी राह खुली है? मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि एक व्यक्ति एक वस्तु है और वर्तमान संगठन में वह एक नाचीज़ बनने की तैयारियों में है। समृद्ध जीवन का चुनाव मै स्वयं कर सकता हूं पर इतने बड़े साम्राराज्य, तत्पश्चात पूंजीवाद के सशक्त विधान का मुकाबला एक व्यक्ति कैसे कर सकता है? इसलिए संयुक्त संघर्ष की आवश्यकता है परन्तु संयुक्त संघर्ष में विभिन्न संस्थाएं गलत राहों पर अग्रसर हैं। उन्हें कौन रोके? वे भी देश को स्वतन्त्र देखना चाहती हैं पर उनसे कौन कहे कि आप ग़लती कर रहे है?.....फिर मैं क्या करूँ...कलम उठाऊँ?(पृ०६५)

५ .....महात्मा गाँधी स्वराज्य की बातें कर रहे हैं और हरिजन सुधार की भी। स्वराज्य से ध्यान हटाकर अन्य बातों की ओर आकर्षित कर रहे हैं। अरे पहले भारत को स्वतन्त्र कीजिए और फिर छूत–छात पर निषेध। असमानता स्वयं ही समाप्त हो जाएगी। नेहरू जी अधिक सही हैं पर वे ग़लत लोगों में फंस गए हैं। वे पृथक संस्था बनाने का साहस भी नहीं जुटा पा रहे हैं। वे करना चाहते हैं, उन्होंने जीवनी में लिखा भी है। शायद ऐसा समझते हैं कि पृथक होने से वे जन साधारण की हलचल से कट जाएंगे.... (पृ०६६)

मोहन कल्पना के विचार मौलिक हैं और वे उन्हें निर्भीकता से शब्दों में ढालते जाते हैं। उनकी शैली शक्तिशाली है और पाठकों को प्रभावित करती है।

भारत के स्वतन्त्र होने पर तथा पाकिस्तान के अस्तित्व में आने पर उनकी शैली अधिक भावपूर्ण हो जाती है

६. धर्म एक ही है। धरती मेरा धर्म है। नहीं।

मुझे धर्म शब्द से लगाव नहीं। कभी ऐसा समय अवश्य आएगा जब शब्दकोष में लाखो शब्द होगें पर धर्म शब्द ढूँढ़ें नहीं मिलेगा। मज़हब शब्द भी नहीं मिलेगा किन्तु कौन लाएगा ऐसा समय मैं नही ला सकता.....कोई मेरी ओर नहीं देखता....एक लाश चल रही है.....खोखला शरीर जिसके सीने में एक शमशान है। जिस शमशान में उसके पूरे आदर्श व विश्वास भस्म हो गए हैं।'' (पृष्ठ – २२)

७. 'उसका उसकी बहन से वार्तालाप :–

'सलामत' कला ने पूछा

'हूँ।''

'तुमने रेडियो पर समाचार सुने?

'हाँ!'

''क्या सिन्ध प्रान्त पाकिस्तान में शमिल होगा?''

'हाँ'

'और हम हिन्दू?'

'जिन हिन्दुओं को वतन प्रिय है वे सिन्ध में रहेंगे जिन्हें धर्म अजीज़ है वे भारत मे जाएंगे।'

'पर धर्म तो सभी को प्रिय है।'

'धर्म से धरती को पद ऊँचा है।'

'पर यह धरती तो मुसलमान हो जायेगी।'

'धरती का कोई धर्म नही होता।' (पृष्ठ २२–२६)

.....वतन एक धरती है। इस समय एक महान षड़यन्त्र रचा जा रहा है जिसमें मेरे पैरों तले की धरती को खींचा जा रहा है।

धरती.....धरती कोई चटाई नहीं, धरती कोई तख्ता नहीं, जिसे पैरों तले से निकाला जा सके किन्तु एक भयानक विधान रचाया

जा रहा है जिसमें, धरती को एक चटाई एक तख्ते का पद दिया जा रहा है। लाखों लोग सिन्ध से हिन्दुस्तान, पंजाब से आधा पंजाब व बंगाल से आधा बंगाल जाएंगे। (पृष्ठ – ११०)

६. .....एक काल्पनिक रेखा है। जिसकी एक ओर पाकिस्तान है दूसरी ओर हिन्दुस्तान मेरा आधा शरीर हिन्दुस्तान में है और आधा शरीर पाकिस्तान में है क्योंकि मैने हिन्दू चाय भी पी है और मुसलमान चाय भी पी है। मैं सरहद के दो टुकड़े बन गया हूं।' (पृष्ठ – १४२)

मोहन कल्पना के इस उपन्यास में ऐसे कई अंश इस प्रकार के भावुक विचारों से ओत प्रोत हैं।

हरी मोटवाणी लिखित "अबो' उपन्यास की बुनियाद भी स्वतन्त्रता संग्राम व विभाजन है। इतना ही नही 'अबो' में अत्यधिक सिन्ध में स्वतन्त्रता संग्राम की झलकियाँ मिलती है। यह अकादमी की पुरस्कृत पुस्तक भी है। आज़ादी व विभाजन से पूर्व भारत की राजनैतिक स्थिति का निरीक्षण किया है। किस प्रकार कांग्रेस वजूद में आई। सिन्ध में कांग्रेस की गतिविधियाँ, नेताओं व जनता का विद्रोह, मुस्लिम लीग, की स्थापना, लोगों के विचार उनकी कुर्बानियाँ उन सबका उल्लेख मिलता है। उपन्यास का आरम्भ कथा शैली से होता है। वह कहानी लाड़काणों नगर के इर्द–गिर्द फिरती है परन्तु द्वितीय अध्याय में (५८ पृ० से) जो राजनैतिक वातावरण उत्पन्न होता है तो दर्जनों पृष्ठ गतिविधियों से भर जाते हैं जो वर्णनात्मक हैं। यहां तक कि उनमे असली नेताओं व व्यक्तियों के नाम भी शामिल हैं जैसे सोभो ज्ञानचन्दाणी, हशू केवलरामानी, जी०एम० सैय्यद, एन०आर० मलकाणी आदि और वे इस कहानी के सहभागी बन जाते हैं –उदाहरणतः

"इस स्वतन्त्रता संग्राम मे सिन्धवासी भी शमिल थे। महात्मा गाँधी के अनुयायी शान्तिपूर्वक काँग्रेसी हलचल चला रहे थे और जेल भरते जा रहे थे तो कामरेड जलालुद्दीन बुखारी, सोभो ज्ञानचन्दाणी व परचो विद्यार्थी जैसे क्रांन्तिकारी अंग्रेज़ों की नींद हराम कर रहे थे। (पृ० ५६)

"एक ओर जिन्नाह पक्षपात की बोली बोल रहे थे तो दूसरी ओर महात्मा गाँधी पूर्ण स्वराज्य की मांग कर रहे थे।" (पृ० ६१)

उपन्यास का घटनास्थल लाड़काणों (सिन्ध का छोटा सा नगर) है और मुख्य पात्र, ६२ वर्षीय मुखी नारायण दास हैं जो ही वास्तव में 'अबो' हैं। वे वहां की पंचायत के 'मुखी' अर्थात सरपंच हैं और हर समय इस छोटे से नगर की समस्याएं हल किया करते हैं। उन्होंने एक यतीम बालक नानक का पालन पोषण कर रखा था जो उनका सेवक भी था पर बढ़ते–बढ़ते पुत्र समान हो गया था। उस बालक की प्रेम कथा बालिका सती के साथ–साथ चलती है। सती का बाल्यावस्था से नानक के साथ मासूम प्रेम दिखाया गया है जो आगे चलकर यौवन के प्रेम में परिवर्तित होता है अन्त में अर्थात आज़ादी व विभाजन के आस पास उनका विवाह भी होता है।

विभाजन के कारण उस छोटे से शहर में खलबली मच जाती है। सारा दिन उपद्रव, फसाद व खूनरोजियाँ, कत्ल हो रहे हैं। डाक्टर चोइथराम गिदवाणी भाषण देते हुए कहते हैं यह कहां का न्याय है? जिन पर विभाजन के अत्याचार ढाये जा रहे हैं उनकी राय का कोई महत्व नहीं। उसके स्थान पर है केवल खोखले सिद्धान्तों की बातें.....।" (पृ० १२३)

".....कोइटा के कत्लेआम" हिन्दू नेताओं को व्याकुल कर दिया। सिन्धी हिन्दुओं के हमदर्द डाक्टर चोइथराम अपने साथियों सहित कोइटा पहुँच गए वहां एक शरणार्थी कैम्प में छियासी (८६) स्त्रियों को ठहराया गया था उनके अपने फ़सादों में कत्ल हो गए थे स्त्रियों के विलाप सुनकर चोइथराम जी स्वयं सिसक पड़े। वे उन्हें क्या सांत्वना दे सकते थे।" (पृ० १२७)

धीरे–धीरे हिन्दू लाड़काणे वासियों ने अपने परिवार स्त्रियों व बच्चों को भारत भेजना आरम्भ कर दिया। कुछ लोग स्वंय भी जाने लगे और अपने घरों की चाबियाँ, मुखी साहब के सुरक्षित हाथों में सौंपकर जाने लगे। वे इस भम्र में थे कि पुनः अपने वतन लौटे आएंगे तब तक मुखी साहब उन चाबियों को सम्हाल कर रखेंगे। इतना

विश्वास तो उन्हे उन पर ! इसीलिए तो उन्हे 'अबो' का पद दिया पर उन्होंने! अन्त में मुखी अर्थात 'अबो', महाजरों की लाठियों और रामपुरी चाकूओं के शिकार हो जाते हैं। अपने व अन्य लोगों के घरों की रक्षा करते दम तोड़ते हैं।

महाजर उनका दरवाजा तोड़ रहे थे..... मुखी ने जोरदार आवाज से कहा, 'अरे कौन हैं' आप? क्यों इतना शोर मचा रखा है? भागो यहां से नहीं तो हरा का घर; रख दूंगा।' मुखी का रोबदार व्यक्तित्व, तनी हुई भवें व सिंधी झड़प सुनकर वे सहम गए पर एक ने कहा, 'साला काफिर हमे सिन्धी में गालियाँ दे रहा है। उसकी हड्डी पसली एक कर दो।'

अनेक लाठियाँ ऊपर उठ गईं। मुखी ने बाँहें ऊपर कर अपने को बचाने की कोशिश की पर लगातार लाठियों व घूसों ने उन्हें लहूलुहान कर दिया और वे दरवाजे के पास गिर पड़े।

एक महाजर ने उन्हें मूर्च्छित जान उनके शरीर को लाँघ कर घर में घुसने की कोशिश की तो उस बेहोशी के हालत में भी उन्होंने उस महाजर की टाँग पकड़कर दरवाजे के पास ढकेल दिया जब तक इस शरीर में प्राण है कोई पराया इस घर की दहलीज को लाँघ नहीं सकता और एक साथ पाँच तेज धार वाले रामपुरी चाकू उसके विशाल सीने में घुस गए।

वह दिन था ३० जनवरी सन् १९४२ ई० वाला दिन। दूसरे दिवस समाचार पत्रों– के मुख पृष्ठों पर सुर्खियों में महात्मा गांधी की हत्या की ख़बरें छपी पर अख़बार के अन्तिम पृष्ठ के एक कोने में मुखी नारायण दास की मृत्यु की ख़बर भी प्रकाशित हुई ऐसे थे सिन्ध के बापू अथवा 'अबो'।

✪★✪

लेखक परिचय

नाम	:	मदन जुमाणी
जन्म तिथि	:	२० दिसम्बर, १९३४ ई०
जन्म स्थान	:	
शिक्षा	:	एस०एस०एस० एवं डी०डी०ए० (यूनेस्को)
सम्प्रति	:	फिल्म, टी०वी०, रेडियो, स्टेज पोड्यूसर, लेखक, अभिनेता, निर्देशक
पता	:	बी०-२०३, चिन्तामणि, शंकर लेन, कान्दीवली पश्चिम, मुम्बई-४०० ०६७
प्रकाशन	:	५० से अधिक रेडियो कार्यक्रम
		७ पुस्तकें प्रकाशित
		२५ टी०वी० नाटक
		१५ आलेख विभिन्न संगोष्ठियों में
		६० अन्य आलेख
		हलु त भज़ी हलऊँ - सिंधी फिल्म
पुरस्कार	:	२ केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
		१ आकाशवाणी
		१ राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद
		१६ अखिल भारत सिंधी बोली साहित्य सभा
		६० से अधिक सिंधी सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओ द्वारा
अन्य	:	५० वर्षो से अभिनय एवं प्रदर्शन के क्षेत्र में सक्रिय
		८० से अधिक नाटकों का मंचन भारत भर में।

अनुवादक

नाम	:	ज्ञानप्रकाश टेकचंदानी
साहित्यिक नाम	:	'सरल'
लेखकीय नाम	:	सरल ज्ञाप्रटे
जन्म तिथि	:	२८ जून, १९५६ ई०
जन्म स्थान	:	फैजाबाद (उ.प्र.)
शिक्षा	:	एम.ए. (हिन्दी), पत्रकारिता में परास्नातक डिप्लोमा, एम.ए. (सिंधी) पूर्वार्द्ध, सिंधी सिखार्थी।
सम्प्रति	:	सचिव- उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी : लखनऊ स्वतन्त्र पत्रकार।
पता	:	१६/४ रामनगर कॉलोनी, फैज़ाबाद- २२४ ००१
प्रकाशन	:	१- सरल सहगान एवं संघ ज्ञान (संकलन), १९७१ २- सिंधु संस्कृति का खजाना (सम्पादन), ३- सिंधु सभा संदेश (मासिक) १० वर्ष सम्पादक मण्डल में, ४- झूलेलाल स्मारिका (१९७६-७८) सह-सम्पादक, ५- झूलेलाल स्मारिका (१९८२) सम्पादक, ६- तू सिंधी क्यों है? (काव्य संग्रह) सम्पादन-१९९९ ७- स्वतन्त्रता संग्राम में सिन्धी साहित्यकारों का योगदान (आलेख संग्रह) सम्पादन-२००० ८- १५० से अधिक लेख, संस्मरण, रूपक, जीवनी, कथा कविताएँ एवं छाया चित्र प्रकाशित।
पुरस्कार	:	कविता प्रतियोगिता-१९७९,१९९१ सिंधु सेवा मण्डल, फैज़ाबाद।
अन्य	:	१९७८ से पत्रकारिता में सक्रिय, • पत्रकारिता के अनेक प्रमाण पत्र, ब्यूरो प्रमुख (पूर्वी)- आज, दैनिक जागरण। संवाददाता (पूर्वी) नवभारत टाइम्स, स्वतन्त्र भारत, वर्कर्स हेराल्ड, हिन्दुस्तान समाचार न्यूज एजेंसी, अमृत प्रभात, भारत, युग विवेक, वनदेवी, अवध ट्रिब्यून (उ०प्र०), जनसत्ता, वीर अर्जुन, पाञ्चजन्य (दिल्ली), स्वदेश (म०प्र०), रांची एक्सप्रेस (बिहार), देवगिरि (महाराष्ट्र) आदि।

आज़ादी की हलचल में सिंधी नाटक का योगदान

मूल : मदन जुमाणी
अनुवाद : सरल ज्ञाप्रटे

उन्नीसवीं सदी का सूर्य अस्ताचल की ओर प्रस्थान कर रहा था जब सन् १८६४ ई० में कराची के डी०जे० सिंध, कॉलेज में 'सिंधी कॉलेज नाटक मण्डली' ने धार्मिक नाटक 'नल दयमन्ती' का सिन्धी में मंचन किया। यह प्रथम सिंधी नाटक था जहाँ से सिंधी नाटकों का सूत्रपात हुआ।

'कॉलेज एम्योचोर ड्रामाटिक सोसाइटी' के शिष्यों ने कॉलेज के अंग्रेज़ प्रिंसिपल डॉ. जैक्सन एवं पारसी वाइस प्रिंसपल पादशाह के कठिन परिश्रम एवं नेतृत्व में 'नल दयमन्ती' नाटक को 'स्टेज' से प्रस्तुत किया गया। नाटक की कथा वस्तु महाभारत से ली गयी। इस प्रथम बड़े नाटक को लिपि बद्ध किया मास्टर जेठानंद परयाणी ने।

इस प्रकार सिंधी नाटकों की आयु १०६ वर्ष है। सन् १९४७ ई० में भारत को आज़ादी मिली। स्वंतत्रता आन्दोलन का प्रारम्भ सन् १८५७ ई० में हुआ। यद्यपि स्वंतत्रता आन्दोलन के प्रारम्भिक दौर में सिंधी नाटकों का जन्म भी न हुआ था किन्तु नाटकों एवं इनके संबंध में विभिन्न ऐतिहासिक ग्रन्थों से प्राप्त जानकारी के आधार पर सिद्ध करुंगा कि सिंधी नाटकों का आरम्भ स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रारम्भिक समय से ही रहा है। जिसके प्रमाण हैं :

उस प्रारम्भिक दौर में सिंधी नाटकों के युग प्रवर्तक ही थे सिंधी साहित्य के पितामह और श्रद्धेय व्यक्तित्व सर्वश्री मिर्जा कलीच बेग़, दीवान कौड़ोमल चन्दनमल, खिलनाणी, किशनचंद 'बेवस', हून्दराज दुखायल, भेरुमल महरचंद, खानचंद दरयाणी, जेठमल परसराम, मंघाराम मलकाणी, राम पंजवाणी, कल्याण आडवाणी, अहमद चागला, लेखराज अज़ीज, हाजी इमाम बख्श एवं अन्य अनेक शिक्षाविद, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता, बुद्धिजीवी आदि जिनके नाम शोभनीय सिंध के प्रथम पंक्ति के सिंधियों में थे और हैं।

स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियां :

स्वतंन्त्रता संग्राम की गतिविधियां देखते ही देखते न सिर्फ़ सुन्दर सिंध के मुख्य नगरों यथा कराची, हैदराबाद, तथा, लाड़काणा, सक्खर, शिकारपुर, जेकबाबाद और अन्य नगरों में फैलती गयीं वरन् साथ ही साथ सिंध के छोटे–छोटे गाँवों और कस्बों में प्रस्फुटित होती गयीं।

स्वतंत्रता आन्दोलन में सिंधी बुजुर्ग इतने सक्रिय थे कि ब्रिटिश सरकार को अपने ज़ुल्म और भय का अश्व तेज दौड़ाना पड़ा किन्तु निडर सिंधी अबाल वृद्ध और महिलाएं स्वतंन्त्रता संग्राम के सिपाही बने।

यहाँ उपस्थित युवाओं को विशेष रूप से अवगत कराना चाहूँगा कि आज़ादी के परवानों में स्वयं महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल सरीखे अनेक न केवल एक बार बल्कि अनेकों बार उन्होंने सिंध का दौरा किया और सप्ताह के सप्ताह भर वहाँ रहे और अलग–अलग नगरों तथा गाँवों तक भी गये।

आचार्य जे०बी० कृपलानी, डॉ. चोइथराम गिदवाणी, जयराम दास दौलतराम, जेठी सिपाहीमलाणी एवं अन्य अनेकों भी सिंध के प्रत्येक कोने–कोने से स्वतंन्त्रता की बलिवेदी पर प्राणों की आहुति देने को तत्पर स्वतंन्त्रता प्राप्ति करने के लिए स्वातंत्र्य पथ पर अग्रसर हुए। कृषक, श्रमिक, व्यापारी, राजकीय कर्मचारी, शिक्षाविद, विद्यार्थी, साहित्यकार व कलाकार आदि दीवानों जैसे निकल पड़े। प्रत्येक सिंधु सपूत ने स्वतंत्रता प्राप्त करने, अंग्रेज़ों को वापस भेजने के लिए तन–मन–धन से स्वतंत्रता की लड़ाई जारी रखी।

उन्हीं दिनों गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर भी सिंध में पधारे। उन्होंने सिंध में 'रवीन्द्रनाथ लिटररी ड्रामाटिक सोसाइटी की नींव रखी। इस नाटक मण्डली की ओर से भी राष्ट्रीय एकता, हिन्दू–मुस्लिम एकता, राजपूतों की बहादुरी के कितने ही नाटक अलग–अलग समय पर मंचित हुए। जिसकी निश्चित जानकारी एवं विवरण आगे प्रस्तुत किया गया है।

आज़ादी की हलचल, सिंधी संगीत, सिंधी नाटक :

सन् १८९४ में जब सिंधी नाटकों का प्रारम्भ हुआ उन दिनों सिंध में

अभी बिजली भी न आई थी। इस कारण माइक वगैरह भी नहीं थे और न आम सिंधियों के लिए मनोरंजन का कोई मसाला–रेडियो, टी०वी० और सिनेमा वगैरह। यही कारण था कि आम समाज में मनोरंजन की अत्यधिक मांग थी। जन सामान्य के पास समय की बहुतायत थी मगर मनोरंजन के साधन बिलकुल नहीं के बराबर। उन दिनों भाँट और चारण थे 'भगति' थीं और कठपुतली के तमाशे भी। मुर्गों, बकरों की लड़ाई, शतरंज ताश, घुड़सवारी इत्यादि ही मनोरंजन के बेहतरीन साधन थे। भगति बेहद लोकप्रिय हुयी अर्थात संगीत ऊँचाइयों पर था।

प्रारम्भिक दौर से यह जानकारी मिलती है कि स्वातंत्र्य संग्राम के प्रति सिंधियों की बढ़ती चाहत, कशिश और प्यार देखकर संगीत एवं गीतों में देश भक्ति और एकता के गीत गाये गये। सिंधियों द्वारा उन्हें पंसद किये जाने के कारण भगतों एवं गायकों ने उन आज़ादी के गीतों को अपने कार्यक्रमों में शामिल किया। जिन्हें कवियों एवं शायरों ने लिखा। दादा हून्दराज दुखायल का नाम ऐसे फनकारों की अगली पंक्ति में आता है। उन दिनों सिंध के नाटकों में गीत और संगीत की प्रमुखता और बाहुल्यता थी।

किशनचंद 'बेवस' लिखित नाटक 'मनोहर नागिन' में लगभग ४० गीत थे। उस दौर में सिंधी नाटकों के दर्शक रात को पान मुँह में दबा आते और सारी–सारी रात सात–आठ घन्टे का एक बड़ा नाटक देखते। इसके साथ में एक सवा घन्टे की एकांकी घलुआ दिखाने की परम्परा थी। इस प्रकार नाटक देखकर दर्शक सुबुह दातुन करते हुए घर लौटते थे।

इस प्रकार के नाटकों में भी कलाकारों ने देश भक्ति के गीतों को नाटकों का हिस्सा बनाकर प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया। दर्शकों की अभिरूचि, उत्साह और देश काल, परिस्थिति को परखते हुए तत्कालीन नाटक लेखकों, निर्देशकों और कलाकारों ने विभिन्न प्रकार के सिंधी नाटक कलमबंद किये जिनका स्वतंन्त्रता संग्राम में ऐतिहासिक योगदान रहा है। ऐसे नाटकों, के संबंध में अलग–अलग साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में भी उनका इस प्रकार उल्लेख किया है।

डॉ० गुलाम अली अलाना– लिखते हैं कि "भारत में सिंध सहित एक नयीं लहर आयी. लार्ड कर्जन के बंगाल विभाजन से सारे हिन्दुस्तान

में राजनीतिक जागरूकता पैदा हो गयी। इसी कारण पुराने तरीके से सुन्दरता और स्वच्छदता (रोमांस) की ओर गद्य लेखकों ने दृष्टिपात करना त्याग कर दिया। आम समाज के चिन्तन में परिवर्तन हुआ। राजनीति हो या साहित्य सभी में स्वदेशी की चाहत होने लगी राजनैतिक जागरूकता वाला समय आरम्भ हो गया।''

सन् १६१३ में एम्योचोर ड्रामाटिक सोसाइटी की पुर्नस्थापना हुयी जिसके संरक्षकत्व में कितने ही राजनीतिक जागरूकता प्रकट करने वाले नाटक प्रकाशित और मंचित हुए। (पेज–६६)

''.....राजनैतिक और धार्मिक उथल पुथलों से देश की इन परिस्थितियों में और तीव्रता से परिवर्तन आया ''श्री अलाना आगे और भी लिखते हैं कि'' १६४० ई० के आस–पास का समय स्वतंत्रता और राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत सिंध के लिए आन्दोलन को अधिक तेज करने वाला था।

.....स्वातंत्र्य संग्राम में राष्ट्रीय भावना को हिन्दुओं का अखण्ड भारत के लिए प्रयास....१६४२ में सिंध में भी काँग्रेस की ओर से अंग्रेज़ों के खिलाफ ''भारत छोड़ो'' आन्दोलन छेड़ा गया। तत्समय कविता, गीत, कहानी, उपन्यास और नाटक पर अत्यधिक ध्यान दिया गया।

यहाँ यह लिखना अतिश्योक्ति न होगी कि उन दुःखदायी, मुश्किल और अंग्रेज़ों की गुलामी के समय में स्वतंत्रता, राष्ट्रीय भावना और अंग्रेज़ सरकार के विरूद्ध भारतवासियों को जागरूक करने वाली कार्यवाईयों, गीतों, नाटकों के विरूद्ध ब्रिटिश सरकार की ओर से स्वतंत्रता आन्दोलन और स्वतंत्रता के परवानों को कुचलने के लिए सख़्त से सख़्त कदम उठाये जाते थे।

अतएव अंग्रेज़ी राज्य के विरुद्ध गीत का गाया जाना, नाटक करना, महा मुश्किल कार्य ही न था अपितु देश की खातिर जान तक कुर्बान करने का जो भी कार्य हो, प्रारम्भ में स्वतंत्रता आन्दोलन को बढ़ावा देने वाले गायकों, नाटक कलाकारों को पुलिस की लाठियों, लातो–घूसों या शारीरिक कष्टों को महात्मा गाँधी के अंहिसा के संदेश को मानते हुए शांति से प्रत्येक तकलीफ और कष्टों को सहन करना पड़ा। जेल यात्राएं भी करनी पड़ीं। बावजूद इसके आज़ादी के परवानों ने जब तक स्वतंत्रता

प्राप्त न कर ली अलग–अलग आन्दोलन चलाते हुए, फनकारों ने राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत गीत जन–सामान्य के मध्य गाये और नाटक प्रस्तुत किये।

सिंध के विभिन्न नगरों, कस्बों के बड़े मैदानों में सत्य नारायण की कथा, चालीहा साहब (सावन माह में व्रत विशेष का पर्व) चन्द्रोदय का महत्व जैसे विभिन्न धार्मिक आयोजनों के नाम पर जन सामान्य/दर्शकों को पहले एकत्र करके धार्मिक कार्यक्रम आरम्भ कराया जाता फिर समय और अवसर पाकर जैसे आजकल टी०वी० कार्यक्रमों में ब्रेक के बाद व्यापारिक विज्ञापन खुलेआम दिखाये जाते हैं; उसी तरह सिंध में धार्मिक कार्यक्रमों के बीच देश भक्ति पूर्ण भाषण,गीत एवं छोटे–छोटे दृश्य नुक्कड़ नाटक की तर्ज पर दिखाये जाते। किसी घर की बड़ी सी छत पर विशेष आमन्त्रित दर्शकों के समक्ष वतन परस्ती के उत्सव आयोजित किये जाते रहने की परम्परा रही है। उनके समक्ष पहले राष्ट्रीय गीतों से आरम्भ करके बाद में बाद में देश भक्ति पूर्ण नाटक भी प्रस्तुत किये जाते थे। जिन नगरों मे ऐसे उत्सव होते उनमें उल्लेखनीय हैं हैदराबाद कराची, लाड़काणों शिकारपुर सक्खर इत्यादि।

आइये! सर्व प्रथम उन 'राष्ट्रीय' सिंधी नाटकों का परीक्षण करें जिनका स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक योगदान रहा है। आज़ादी की लड़ाई में जिन नाटकों का उल्लेख एवं विवरण प्राप्त होता है वे निम्नवत् है

१. 'महाराणा प्रतापु'	:	तेजूमल शहाणी– १६२६
२. 'अजीबु इन्साफ़ु	:	शिवाजी महाराज के जीवन पर आधारित
३. 'देश सदिके'	:	(देश पर न्योछावर)– खानचंद दरयाणी १६२७
४. 'देश भक्ति'	:	खानचंद दरयाणी– १६३७
५. एकता जो आलापु	:	(एकता का सम्भाषण)–मंघाराम मलकाणी –१६३०
६. क़ौमी एकता'	:	(राष्ट्रीय एकता)– मंघाराम मलकाणी–१६३०
७. 'वीर अभिमन्यु'	:	महाराज द्वारिका प्रसाद
८. 'कुर्बानी'	:	(बलिदान) उधो झांगियाणी

६. मुल्क जा मुतबर : (देश के बुजुर्ग) खानचंद दरयाणी

१०. महाअन्धेर : गागनदास आडवाणी

११. बलिदान : खानचंद दरयाणी

१२. महाराजा दाहिसेन : ठाकुर दास वर्मा

१३. नयी सुजागी : (नयी जागृति) लीला राम माखीजाणी

१४. क़ौम जा पुजारी : (देश के पुजारी) मेलाराम वासवाणी

१५. देश जो दुश्मन : (देश के दुश्मन) अहमद चागला

१६. देशभक्ति एवं अन्य नाटक

उपरिलिखित नाटक बहु अंकीय हैं और निम्नलिखित एकांकियां हैं :

१. आज़ादीअ जी कोड़ी : (स्वतंत्रता की कौड़ी) भेरूमल मेहरचंद–१९३८

२. बुख हड़ताल : (भूख हड़ताल) आडवाणी

३. कांग्रेस : मोहम्मद उसमान डीपलाणी–१९४५

४. वचन : लालचंद अमर डिनोमल

५. गाँधी : लालचंद अमर डिनोमल

६. वीर अजीत सिंह : गोविन्द राम टोपणदास

७. सुदेशी हलचल : (स्वदेशी गतिविधियाँ)

८. भारत जावा–उथु जागु : (भारत सन्तान–उठो जागो)–१९१९

९. सती देवी :

१०. रथ यात्रा : आसूदोमल गिदवाणी–१९२१

११. नकद धर्म : लालचंद अमर डिनोमल–१९११

१२. संदेश : लालचंद अमर डिनोमल–१९१५

१३. जन्म जो हकु : (जन्मजात अधिकार) नानकराम धर्मदास–१९३९

यह भी सम्भव है कि उपरिलिखित या मंचित नाटकों के अतिरिक्त भी कुछ अन्य स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों से संबंधित नाटक मंचित हों जिनका विवरण मैं (लेखक) प्राप्त न कर सका होऊँ।

उक्त नाटकों की परीक्षण करने से यह स्पष्ट हो जायेगा कि इसमें है :

१. वे ऐतिहासिक एवं धार्मिक नाटक जिनको देखकर दर्शकों ने अंग्रेज़ो के भय, जुल्म और अत्याचारों पर विजय प्राप्त की और वीरता का पाठ पढ़ते हुए स्वतंत्रता संग्राम के सिपाही बने यथा महाराणा प्रताप, शिवाजी, वीर अभिमन्यु इत्यादि।

२. दूसरे प्रकार के नाटकों में हमें नज़र आयेंगे वे सिंधी नाटक जिन्होंने तत्कालीन गतिविधियों को जनता तक पहुँचाने, लोकप्रिय बनाने एवं देश की आज़ादी के लिए हर कुर्बानी देने वाले तत्कालीन नेताओं और कांग्रेस की आवाज़ घर–घर तक पहुँचाई। यथा–महात्मा गाँधी, काँग्रेस, जालियाँ वाला बाग व हेमूं इत्यादि।

३. तीसरे प्रकार के नाटकों में उस दौर के सरकारी जुल्मों, नेताओं की कुर्बानियों, हिन्दू– मुस्लिम एकता, स्वतंत्रता हर हिन्दुस्तानी का जन्म सिद्ध अधिकार है, जेल भरो, अंहिसा से इन जुल्मों का मुक़ाबला करो जैसे तात्कालिक संदेशों एवं विशेष रूप से खादी एवं स्वदेशी गतिविधियों के संदेश नाटकों के केन्द्रीय विचार हैं।

यहाँ मैं दोहराता हूँ कि सिंध में उन दिनों बड़े नाटकों के साथ 'घलुआ' में हास्य नाटकों के संग गम्भीर नाटक एवं गम्भीर नाटकों के साथ हास्य एकांकी दिखाने की परम्परा थी। इस कारण वे एकांकी नाटक ज्यादातर बड़े नाटकों के प्रारम्भ में या अन्त में दिखाये जाते थे। इस प्रकार बड़े चार–पाँच घन्टों वाले नाटक के समाप्त होने के पश्चात् दर्शकों में देश प्रेमियों की उपस्थिति की पुष्टि होने के पश्चात् किसी सूचित नाटक के प्रस्तुतीकरण के स्थान पर स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों में सहयोग प्रदान करने वाले एवं भारतवासियों में देश के प्रति सर्वस्व न्योछावर करने की भावना उत्पन्न करने वाले, ब्रिटिश सरकार को भारत से निकालकर स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना को प्रेरित करने के संदेशों के एंकाकी नाटक स्वतंत्रता की गतिविधियों के जोर पकड़ने के कारण एवं ऐसे ही स्वतंत्रता के संदेश देने वाले सिंधी नाटकों की जोरदार मांग एवं स्वागत होने के

कारण सिंध के साहित्यकारों, फनकारों दर्शकों ने ही हर मुश्किल एवं जुल्म का सामना करते हुए, जेल यात्राएं करते, ब्रिटिश सरकार के हर अत्याचार का मुस्कराकर मुकाबला करते, स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की पवित्र भावना रखते हुए ब्रिटिश शासन में उनके खिलाफ नाटक पेश किये।

इस कारण कितने ही तत्कालीन साहित्यकारों एवं फनकारों को रोज़ी, रोटी, और मकानों से बेदखल होना पड़ा। शहादत का जाम पीना पड़ा एवं परिवार के सुख–सुविधाओं की बलि चढ़ानी पड़ी। इन कठिन परिस्थितियों के दौर में नाटक इस प्रकार मंचित किये गये।

सदाहयात प्रो० मंघाराम मल्काणी ने सिंधी नसर जी तारीख़ (सिंधी गद्य का इतिहास) के पृष्ठ १६४–१६६ पर लिखते है एक मण्डली सर बाज़ार या दुकान की छत पर तो दूसरा नाटक ग्रुप 'रानी बाग' के खुले मैदान में पांच–आठ तखत मिलाकर उनसे मंच बनाकर नाटक दिखाता। ऐसे नाटक भारी भीड़ के साथ अत्यन्त रूचिपूर्वक देखे जाते।

आस जी टोली, साधू हीरानंद अकादमी एवं अन्य भी कितने स्कूलों एवं कॉलेजों में भी नाटक मण्डलियाँ बनी। जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों के नाटकों सहित स्वतंत्रता संग्राम से संबधित नाटक भी दिखाये इस प्रकार के नाटक समस्त सिंध के महानगरों एवं नगरों मे मंचित हुए मिलते हैं।

❖❖❖

नलदयमन्ती सिंधी नाटक के कलाकार

लेखक परिचय

नाम	:	डॉ० मुरलीधर कृष्णचन्द्र जैतली
जन्म तिथि	:	७ नवम्बर, १९३० ई०
जन्म स्थान	:	हैदराबाद सिंध (पाकिस्तान)
शिक्षा	:	एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत, भाषा विज्ञान), पी. एचडी. (भाषा विज्ञान : 'सिंधी भाषा की शब्द रचना' विषय पर अनुसंधान प्रबन्ध)।
सम्प्रति	:	अवकाश प्राप्त कर अध्ययन लेखन कार्य कर रहे हैं।
पता	:	डी-१२७, विवेक विहार, दिल्ली-११००९५
प्रकाशन	:	१. सिंधी साहित्य जो इतिहास (१९७२)
		२. लालचंद अमर डिनोमल जगतियाणी (१९८५)
		३. सिंधी लोक कहाणियूँ (१९८६)
		४. शाह जो रिसालो : हिकु अभ्यास (१९९२)
		५. सिंधी पहाका ऐं मुहावरा : हिकु अभ्यास (१९९३)
		६. सिंधी पहाका ऐं मुहावरा कोश (सम्पादन-१९९३)
		७. सिंधी भगति
		८. हिन्दी - सिंधी तथा अंग्रेज़ी पत्रिकाओं में एक सौ से अधिक लेख प्रकाशित।
		९. राष्ट्रीय स्तर की साहित्यिक योजनाओं में सहकार : भारतीय कहावत कोश (सम्पादक-विश्वनाथ नरवणे), भारतीय साहित्य कोश (सम्पादक-नगेन्द्र), भारतीय साहित्य का विश्वकोश (साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित) आदि योजनाओं में सिंधी भाषा और साहित्य पर लिखित प्रविष्टियां।

स्वतंत्रता संग्राम में सिंधी पत्रकारिता का योगदान

—डॉ० मुरलीधर जैतली

सिन्धी पत्रकारिता का जन्म सिन्ध में सन् १८४३ ई० में अंग्रेज़ों का शासन स्थापित होने के बाद हुआ। सन् १८५८ ई० में कराची से एक साप्ताहिक पत्रिका ''.फवाइदुल अख़बार'' जारी की गई। उसमें फ़ारसी के साथ–साथ सिन्धी भाषा में भी रचनाएँ और ख़बरें छपती थीं। भारत को आज़ादी मिली १९४७ में। इस ८९ वर्षों के अल्पकाल में सिंधी पत्रकारिता ने जिस साहस और वीरता से विदेशी शासक के दमन चक्र का मुकाबला किया, वह भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

इसमें शक नहीं कि सिन्ध में समाचार पत्रों का आरम्भ इससे लगभग चौदह वर्ष पूर्व हो चुका था। ''कराची ऐडवर्टाईजर'' (Kurrachee Advertiser) पहला अंग्रेज़ी अख़बार था, जो सिन्ध के विजेता फौजी जनरल सर चार्ल्स नैपियर ने सन् १८४४ ई० में कराची से जारी किया था। उसमें शासन संबंधी जानकारी और सरकारी सूचनाएं दी जाती थीं। उसके बाद कुछ अन्य अंग्रेज़ी और फ़ारसी अख़बार जारी किए गए। केवल सिन्धी भाषा में प्रकाशित होने वाली पहली पत्रिका थी ''सिन्ध सुधार'', जिसकी स्थापना १ अगस्त सन् १८६६ ई० के दिन की गई थी। यह पहले शिक्षा विभाग की ओर से प्रकाशित होती थी। सन् १८८४ ई० से लेकर एक खानगी संस्था ''सिन्ध सभा'' उसका प्रकाशन करने लगी। सिन्ध में पत्रकारिता का आरम्भ तो इस प्रकार पिछली सदी के उत्तरार्ध में हो गया परन्तु राष्ट्रीय चेतना और देश भक्ति के स्वर सन् १८८५ ई० में 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' की स्थापना के बाद मुखरित हुए। सन् १८५७ ई० की आज़ादी की लड़ाई का प्रभाव सिन्ध के सिपाहियों पर भी हुआ परन्तु उसके समर्थन में पिछली सदी के सिंधी समाचार पत्रों में कुछ भी लिखा हुआ नज़र नहीं आता। पिछली सदी के अन्त तक लगभग तीस पत्रिकाएँ सिन्ध में शुरू की गई। उन में १७ पत्रिकाएं सिन्धी भाषा में थी।

उन का संबंध प्रायः सामाजिक बुराईयों के सुधार, धार्मिक प्रचार, नीति शिक्षा आदि विषयों से था। एक–दो समाचार पत्र ऐसे थे, जो आम जनता के दुख दर्द की आवाज़ सरकार तक पहुँचाने का साहस भी करते थे।

वर्तमान सदी का पूर्वार्ध

लार्ड कर्ज़न ने सन् १९०५ ई० में जब बंगाल का दो भागों में विभाजन किया, तब सारे देश में क्रोध की अग्नि फैल गई। इसका परिणाम हुआ स्वदेशी अपनाने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन तथा स्वराज्य स्थापना का स्वर। इसका प्रभाव सिन्ध पर भी बहुत हुआ। सिन्ध प्रदेश में भारत के अन्य भागों की तरह राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की लहर फैल गई। इसके प्रचार प्रसार में सिन्धी पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहाँ संक्षेप में प्रमुख सिन्धी पत्रिकाओं के कार्य का उल्लेख किया जा रहा है:–

(१) वीरूमल बेगराज और "सिन्धी" पत्रिका

वीरूमल बेगराज (१८७४–१९५५) को आमतौर पर उसके साथी देशभगत की उपाधि से पुकारते थे। उसका जन्म सक्खर सिन्ध में हुआ और वहीं उसने पूरा जीवन बिताया। उसने सन् १९०५ ई० में "सिन्धी" नामक साप्ताहिक पत्र जारी किया, जिसके माध्यम से सिन्ध में राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति आदि विचारों का प्रचार करता था। वीरूमल के एक साथी महाराज गोवर्धन शर्मा ने स्वदेशी वस्तुएँ अपनाने का महत्व समझाते हुए सिन्धी में एक छोटी–सी पुस्तिका लिखी थी। वह वीरूमल ने अपने मुद्रणालय में छापी। इसके प्रकाशक थे चेटूमल बूलचन्द। अंग्रेज़ सरकार को इसमें विद्रोह की गंध महसूस हुई । इन तीनों साथियों को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया गया। गोवर्धन शर्मा को पाँच साल कैद की सज़ा हुई और वीरूमल तथा चेटूमल को तीन–तीन साल कारावास की सज़ा भुगतनी पड़ी। यह सज़ा उन्हें सन् १९०८ ई० में दी गई। सिन्ध में राजनीति के क्षेत्र में भाग लेने के कारण जेल में जाने वाले ये पहले देशभक्त थे। न्यायाधीश के इस फैसले की कई अन्य प्रान्तों के अखबारों ने कटु

आलोचना की। उन्होंने लिखा कि स्वदेशी वस्तुएँ अपनाने का प्रचार करना कोई अपराध नहीं है। इसके लिए इतनी कठोर सजा देना अन्याय है। वास्तव में कठोर सजा देकर न्यायाधीश आम जनता को भयभीत करना चाहता था परन्तु उसका नतीजा विपरीत निकला। उस मुकदमे के कारण सारे सिन्ध प्रदेश में राष्ट्रीय चेतना तीव्रगति से फैलने लगी। वीरूमल जब सजा भुगत कर आजाद हुआ, तो वह अपनी पत्रिका के माध्यम से सिन्ध के लोगों में देश भक्ति के भाव भरने लगा। असहकार आंदोलन में उसे फिर दो साल की कैद भुगतनी पड़ी। वीरूमल को अपनी जन्म भूमि से इतना मोह था कि देश विभाजन के बाद भी वह सिन्ध में ही रहा और वहीं उसका स्वर्गवास हुआ।

(२) तोलाराम बालाणी (१८८४–१९१३) और उसकी पत्रकारिता

तोलाराम मेंघराज बालाणी ने २९ वर्षों की अल्प आयु में सिन्धी पत्रकारिता तथा साहित्य सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उसका जन्म नौशहरा फेरोज़ नामक शहर में एक मध्यम श्रेणी के परिवार में हुआ था। प्राथमिक शिक्षा भिर्या नामक गाँव में प्राप्त करने के बाद उसने हैदराबाद में शिक्षा ग्रहण की। वहीं वह अध्यापन भी करने लगा। वीरूमल की तरह वह भी स्वदेशी आंदोलन से प्रभावित होकर उसके प्रचार कार्य में लग गया। तोलाराम ने "देश माता" नामक सिन्धी साप्ताहिक पत्रिका सन् १९०५ ई० में कराची से शुरू की। उसकी लेखनी की उग्रता को देखकर कोई दूसरा पत्रकार उसकी रचनाएँ प्रकाशित करने को तैयार नहीं होता था। सन् १९०७ ई० के आस पास उसने "सिन्ध सेवक" (मासिक) और "सदा–ए–सिन्ध" पत्रिकाएँ भी शुरू की। वह कवि और अच्छा निबन्धकार भी था। देशभक्ति की भावनाओं से पूर्ण गीत रचकर, गाँव–गाँव जाकर वह गाकर सुनाता था। उसकी मृत्यु लाड़काणा के नज़दीक 'घाड़' नामक नहर में डूब जाने से हुई।

(३) "हिन्दू" और "हिन्दुस्तान"

'हिन्दू' अख़बार ने अंग्रेज़ सरकार का मुकाबला जिस वीरता के साथ किया, वह पूरे भारत देश में अन्यत्र शायद ही कहीं देखने

को मिले। १६२१–२२ के असहकार आंदोलन में उसके आठ सम्पादक बारी–बारी से गिरफ्तार हुए। 'हिन्दू' पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो फिर अन्य नाम से उसे जारी रखा गया। यही एक अख़बार था जिसके साथ सिन्ध के कई कांग्रेसी नेता जुड़े हुए थे। इसकी एक और विशेषता यह भी है कि देश विभाजन के बाद अभी तक यह मुम्बई से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है।

"हिन्दू" अख़बार के संस्थापक थे दो नवयुवक देशभक्त महाराज लोकराम शर्मा (१८६०–१६३३) और उसके छोटे भाई विष्णु शर्मा (१८६५–१६७३)। लोकराम पन्द्रह वर्ष की उम्र में ही अपने एक मित्र गुरूदास के साथ घर से भागकर संस्कृत पढ़ने के लिए काशी चले गये। वहाँ सेण्ट्रल हिन्दू कालेज में वे ऐनी बेसेन्ट और अन्य बंगाली क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आये, उनके विचारों से बहुत प्रभावित हुए। सन् १६०७ ई० में जब वह हैदराबाद सिन्ध में वापस आया तो स्वदेशी वस्तुएँ अपनाने के कार्य में जुट गया। उन दिनों उसका छोटा भाई विष्णु स्थानीय विद्यालय में पढ़ता था। सन् १६११ ई० में उसने "सिन्ध भास्कर" नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। इसके लिए लोकराम ने इसी नाम से मुद्रणालय भी स्थापित किया। यह पत्रिका सिन्धी भाषा और देवनागरी लिपि में भी छपती थीं। कुछ समय पश्चात् उसमें कुछ पृष्ठ अरबी सिंधी लिपि में भी छपने लगे। पत्रिका का मुख्य उद्देश्य था स्वदेशी, स्वराज्य और अन्य राष्ट्रीय विचारों का प्रचार तथा प्रसार।

लोकराम और विष्णु ने मिलकर साल सन् १६१६ ई० में "हिन्दू" नामक साप्ताहिक पत्रिका की स्थापना की। वह दिन २७ नवम्बर था और दीप मालिका का त्यौहार था। यह पत्रिका भी सिन्धी भाषा और देवनागरी लिपि में थी। इसका एक उद्देश्य यह भी था कि सिन्ध में नागरी लिपि का भी प्रचार हो, जैसे इस प्रदेश के लोग भारत की मुख्य राष्ट्रीय चेतना से भी जुड़ सकें। दोनों भाई मिलकर लेख लिखते थे, कम्पोजिंग करते थे और स्वयं मशीन भी चलाते थे। सम्पादक का नाम विष्णु शर्मा था। वह "श्री" उपनाम से भी लिखता था। 'हिन्दू' के पहले अंक में विष्णु ने पत्रिका का उद्देश्य स्पष्ट करते

हुए इस प्रकार लिखा है– "हिन्दू" अपने जन्म और जीवन को पवित्र समझकर धर्म और देश की सेवा करना और उनकी उन्नति करना अपना मुख्य उद्देश्य समझता है। "हिन्दू" नागरी पाठकों के सामने धर्म और देश की परिस्थितियों को रखकर यह प्रचार करना चाहती है कि हमारे कमजोर हृदय बलवान बनें, हममें मिलाप हो और आजकल चल रहे सख़्त संग्राम से मुकाबला कर सकें।

धर्म और देश का उद्धार करना कोई सरल काम नहीं। इसमें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा परन्तु कर्मों के फल को परमात्मा पर छोड़कर, कर्म करते रहना "हिन्दू" का कर्तव्य रहेगा। "हिन्दू" धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक बातों में स्वतंत्र रहना चाहता है। उसकी मंज़िल आज़ादी है। इन विचारों के प्रसार में रास्ते में किस–किस प्रकार के कांटे सहने पड़ेंगे, उसका "हिन्दू" को पूरा–पूरा ज्ञान है परन्तु "हिन्दू" हर मुश्किल का सामना करने के लिए तैयार रहेगा। शाह लतीफ का निम्नलिखित पद "हिन्दू" के लिए आदर्श रहेगा।

सूरी आहे सींगारु, असुल आशिकनि जो,
मुड़णु मोटणु महिणो, थिया निजारे निर्वार,
कुसण जो करारु, आहे असुल "हिन्दू" अ जो।

(सूली है श्रृंगार सच्चे आशिकों का। मार्ग पर आगे बढ़कर फिर मार्ग से मुड़ जाना अथवा लौट जाना उनके लिए निन्दनीय बात है। वे तो स्वयं को कुर्बान करने का दृश्य देखने के लिए निकल चुके हैं। जो सच्चा "हिन्दू" (यह सच्चा आशिक है) वह तो मर मिटने का प्रण कर घर से निकला है।

इस प्रकार देश पर मर मिटने का प्रण कर "हिन्दू" समाचार पत्र मैदान में आया। आप कल्पना कीजिए कि वह समय कितना कठिन था। प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था। अंग्रेज़ सरकार ने भारतवासियों को नियंत्रण में रखने के लिए दमन और आतंक फैलाने का अंकुश अपने हाथ में ले लिया था। ऐसी परिस्थितियों में "हिन्दू" अख़बार की स्थापना करना सचमुच ही बड़े साहस का काम था। लोकराम और विष्णु ने यह हिम्मत की तो धीरे–धीरे उनको अन्य मित्रों का

भी साथ मिलता गया।

उन दिनों सिन्ध में नागरी लिपि का प्रचार अधिक नहीं हुआ था। अतः लगभग एक साल के बाद "हिन्दू" पत्रिका को अरबी–सिन्धी लिपि में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया पत्रिका की साख तो पहले ही बन चुकी थी। लिपि परिवर्तन करने के बाद "हिन्दू" का पहला अंक एक हजार प्रतियों का छापा गया परन्तु संचालकों के आश्चर्य की सीमा न रही, जब केवल हैदराबाद में ही दोपहर तक उसकी सभी प्रतियाँ बिक गईं। यह देखकर वह अंक दुबारा छाप कर अन्य शहरों के ग्राहकों को भेजा गया। छह महीने के भीतर ही "हिन्दू" की बिक्री तीन हजार तक पहुँच गई। उन दिनों सिन्ध में किसी सिन्धी पत्रिका की इतनी प्रतियाँ छपें, यह उसकी लोकप्रियता को ज़ाहिर करता है।

सन् १९१८ ई० की घटना है। हैदराबाद के सिविल अस्पताल की कुछ अनियमितताओं की पोल "सिन्धवासी" अख़बार ने खोली। उसमें कुछ सरकारी अमलदारों का भी हाथ था। उस अख़बार के सम्पादकों पर मुकदमा चला और उन्हें जेल की सज़ा दी गई। इस अन्याय का विरोध करते हुए लोकराम ने न्यायाधीश के भी खिलाफ लिखा। तब लोकराम पर भी मुकदमा दायर किया गया। उसके अख़बार से सोलह लेख चुन कर उन्हें सरकार से विद्रोह करने वाली रचनाएँ माना गया। लोकराम को सन् १९१८ ई० में तीन महीने की जेल की सजा और पाँच सौ रूपए का जुर्माना भरने का आदेश हुआ। वह कारावास में था तो सरकार "हिन्दू" अख़बार के पीछे हाथ धोकर पड़ गई। उस पर झूठे आरोप लगाकर फंसाने के प्रयत्न किए गए। परिणाम यह हुआ कि अख़बार को कुछ महीने बंद रखना पड़ा।

लोकराम के जेल से वापस आने के बाद फिर मित्र मंडली इकट्ठी हुई। विष्णु शर्मा के सम्पादन में "हिन्दू" को जून सन् १९१९ ई० से फिर शुरू किया गया। पहले वह साप्ताहिक था, फिर हफ्ते में दो बार और डेढ़–दो महीने बाद वह दैनिक बनाया गया। कुछ ही समय में "हिन्दू" सिन्ध के सभी अख़बारों से अधिक लोकप्रिय बन गया।

असहकार आंदोलन के दौरान साल सन् १६२१–२२ ई० में "हिन्दू" के आठ सम्पादक क्रमशः गिरफ्तार कर जेल भेजे गए थे। (१) विष्णु शर्मा (तीन साल की कैद) (२) जयरामदास दौलतराम (दो साल की कैद) (३) घनश्याम शिवदासाणी (दो साल की कैद) (४) चोइथराम गिदवाणी (डेढ़ साल की कैद) (५) लोकराम शर्मा (डेढ़ साल की कैद) (६) झमटमल लखा सिंह (७) हीरानन्द करमचन्द (८) चोइथराम वलेछा। साल–डेढ़ में असहकार आंदोलन मंद पड़ गया। तब तक ये आठों सम्पादक जेल की सज़ा भुगतकर आज़ाद हो चुके थे।

साल सन् १६२४ ई० में विष्णु शर्मा फिर "हिन्दू" के सम्पादक नियुक्त हुए। लगभग दो साल के बाद हैदराबाद में "सिन्ध स्वराज्य आश्रम" की स्थापना की गई। कुछ वर्षों के बाद वह "देश सेवा मंडल" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। २१ जनवरी सन् १६२६ ई० से लेकर "हिन्दू" अखबार के संचालन की जिम्मेदारी उस आश्रम को सौंपी गई तब "हिन्दू" का सम्पादक हीरानन्द करमचन्द को नियुक्त किया गया और मानसिंह चूहड़मल ने उप सम्पादक का भार संभाला। "हिन्दू" लगभग छह साल नियमित रूप से चलता रहा।

सन् १६३० ई० में फिर इस अख़बार को बड़े संकटों का सामना करना पड़ा। १३ अप्रैल सन् १६३० ई० के दिन कराची में नमक सत्याग्रह शुरू किया गया। उन दिनों घनश्याम शिवदासाणी "हिन्दू" के सम्पादक थे। उसे १५ मई के दिन गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। सिटी मजिस्ट्रेट ने अख़बार से नया 'डिक्लेअरेशन' भरने और ज़मानत देने की माँग की। घनश्याम के जेल जाने के बाद फिर हीरानन्द करमचन्द ने "हिन्दू" का सम्पादन भार संभाला था। उसने जमानत देने से इन्कार किया तो सरकार ने अख़बार पर प्रतिबन्ध लगा दिया। दूसरे दिन हीरानन्द ने "नवयुग" पाक्षिक पत्रिका को दैनिक घोषित कर छापना शुरू कर दिया। वह पत्रिका भी उसी संस्था की ओर से प्रकाशित होती थी। सरकार ने उसके लिए जमानत देने का आदेश दिया, जो न मानने पर उस पत्र को भी ज़ब्त कर दिया गया तब हीरानन्द ने "हिन्द आफ़्ताब" नामक साप्ताहिक पत्रिका को दैनिक छापना शुरू कर दिया। सरकार ने उस पर भी प्रतिबन्ध लगाकर उसका छापाखाना

ज़ब्त कर दिया। प्रेस आर्डिनन्स का समय अक्टोबर में खत्म होने पर फिर "हिन्दू" दैनिक को पुनर्जीवित किया गया। २६ जनवरी सन् १६३१ ई० के दिन "हिन्दू" का विशेषांक "१८५७ की आज़ादी का युद्ध" पर ज़ाहिर किया गया। ५ मार्च सन् १६३१ ई० के दिन गाँधी–इर्विन समझौता हुआ, जिसके अनुसार सभी राजनैतिक कैदियों को आज़ाद किया गया। "हिन्दू" का मुद्रणालय जो सरकार ने ज़ब्त कर लिया था, वह अख़बार को वापस दिया गया।

४ जनवरी सन् १६३२ ई० के दिन महात्मा गाँधी "गोल मेज कान्फर्न्स" लंडन से निराश होकर जब भारत पहुँचे तो उन्हें सरकार ने गिरफ्तार कर जेल में नज़रबन्द रखा। इस पर सारे देश में फिर सत्याग्रह शुरू हो गया। "देश सेवा मंडल" (जो पहले "सिन्ध स्वराज्य आश्रम" नाम से प्रसिद्ध था) जिसकी ओर से "हिन्दू" प्रकाशित होता था, उसे सरकार ने कानून के विरुद्ध घोषित किया। अतः "हिन्दू" अख़बार पर भी प्रतिबन्ध लगाया गया। सरकार ने उसका मुद्रणालय ज़ब्त कर नीलाम कर दिया। हीरानन्द और उसके कुछ साथी गिरफ्तार किए गए। तब आनन्द हिंगोराणी ने "हिन्दू" के स्थान पर "सिन्धू" नामक दैनिक अख़बार का सम्पादन कार्य संभाल कर उसे जारी रखा। सरकार ने "सिन्धू" पर प्रतिबन्ध लगाया तो "मातृभूमि" नामक साप्ताहिक पत्रिका को दैनिक बना कर प्रकाशित किया गया। जून सन् १६३२ ई० में सरकार ने उस पर भी प्रतिबंध लगा दिया। ३ जुलाई सन् १६३२ ई० के दिन "भारत पब्लिशिंग हाऊस ट्रस्ट" की स्थापना की गई। उसके सहारे जून सन् १६३४ ई० से "हिन्दू" दैनिक अख़बार का प्रकाशन कराची से शुरू किया गया।। सन् १६३७ ई० से लेकर रविवार के दिन "हिन्दू" को "हिन्दवासी" नाम से प्रकाशित करना आरंभ किया गया। उसमें साहित्यिक सामग्री अधिक होती थी।

३ सितम्बर सन् १६३६ ई० के दिन से दूसरा विश्व युद्ध आरंभ हो गया। कांग्रेस ने घोषणा की कि जब तक अंग्रेज़ सरकार भारत को पूर्ण स्वतंत्रता न देगी, तब तक भारतवासी सरकार की कोई भी सहायता न करेंगे। ८ अगस्त सन् १६४२ ई० के दिन महात्मा गांधी ने मुम्बई सम्मेलन में "भारत छोड़ो आंदोलन" की घोषणा की।

उसके अनुसार विदेशी सरकार को भारत छोड़कर चले जाने को कहा गया। यह आंदोलन शुरू होने पर सारे देश में फिर गिरफ्तारियों का सिलसिला जारी हो गया। २१ अगस्त सन् १९४२ ई० के दिन "हिन्दू" पर फिर प्रतिबंध लगाया गया। उसका सम्पादक हीरानन्द और उसके कई साथी गिरफ्तार कर जेलों में भेजे गए। उन सबको १८ जून सन् १९४३ ई० के दिन आज़ाद किया गया। "हिन्दू" और "हिन्दवासी" फिर १४ नवम्बर को पंडित जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन से जारी किए गए। १ अगस्त सन् १९४६ ई० के दिन से लेकर "हिन्दू" का नाम कांग्रेसी नेताओं के दबाव में परिवर्तित कर "हिन्दुस्तान" रखा गया परन्तु रविवार का अंक "हिन्दू" के नाम से छपता था।

देश विभाजन के बाद इस संस्था का पुनर्गठन मुम्बई में किया गया। हीरानन्द करमचन्द ने अपने साथियों की मदद से "हिन्दुस्तान" दैनिक और"हिन्दवासी" साप्ताहिक का प्रकाशन कुछ महीनों के अन्तराल के बाद फिर मुम्बई से शुरू किया। ये पत्रिकाएँ आज तक नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। इस प्रकार इनका इतिहास ८४ साल पुराना है। भारत में आने के बाद भी हीरानन्द अपने समाचार पत्र के माध्यम से निर्वासित सिन्धियों के अधिकारों के लिए भारत सरकार से निरन्तर लड़ते रहे। उनके पुनर्वास की योजनाओं में हीरानन्द और उसके साथियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

(४) हिन्दवासी (भारतवासी)

सं० जेठमल परसराम गुलराजाणी (१८८५–१९४८)

सिन्धी पत्रकारिता के क्षेत्र में जेठमल परसराम का अनोखा व्यक्तित्व है। वह काने को काना कहने से कभी नहीं हिचकता था। सत्य भाषण उसका प्रथम सिद्धान्त था, फिर चाहे वह श्रोताओं को कड़ुवा क्यों न लगे। ऐनी बेसेण्ट (१८४७–१९३३) का पक्का शिष्य था। सन् १९१७ ई० में उसने हैदराबाद सिन्ध से दैनिक पत्र "हिन्दवासी" जारी किया, जो कुछ ही दिनों में बहुत लोकप्रिय बन गया। इससे पूर्व सन् १९१४ ई० में उसने "सिन्धी साहित सोसाइटी" स्थापित कर उसके द्वारा मासिक पुस्तकें प्रकाशित कर सिन्धी साहित्य की वृद्धि का कार्य शुरू कर दिया था। "हिन्दवासी" के माध्यम से जेठमल मुख्यतः ऐनी

बेसेण्ट के राजनैतिक विचारों और थियासाफी का प्रचार करता था। सन् १६१५ ई० में प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हुआ। १५ मार्च १६१६ के दिन अंग्रेंज़ सरकार ने रौलट ऐक्ट जारी कर उसके द्वारा दमन चक्र को और भी तेज कर दिया। उसके अनुसार सरकारी अमलदार किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार कर, उस पर मकदमा चलाने के सिवाय ही उसे नज़रबन्द रख सकते थे। इसके अतिरिक्त प्रेस की आज़ादी पर भी अंकुश लगाया गया। इसके विरोध में ३० मार्च सन् १६१६ ई० के दिन दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में एक आम सभा पर पुलिस ने गोली बाजी की। फिर १३ अप्रैल सन् १६१६ ई० के दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में सैकड़ों निरपराध भारतीयों का कत्ले–आम किया गया। इन घटनाओं से पीड़ित होकर जेठमल ने अपनी पत्रिका में सरकारी नीतियों की कटु शब्दों में आलोचना करते हुए एक सम्पादकीय लेख लिखा उसका शीर्षक उसने सिन्ध के प्रसिद्ध सूफ़ी शायर शाह लतीफ के कलाम से चुना– "कलालके हटि, कुसण जो कोपु वहे।" (अर्थात् कलाल की हाट पर कत्ले आम का कोप जारी है।) बस, सरकारी अमलदारों को इस में देशद्रोह और बग़ावत की बू नज़र आई। उन्होंने १६ मई सन् १६१६ ई० के दिन इसी लेख के कारण जेठमल को गिरफ्तार कर लिया। जेठमल पर यह आरोप लगाया गया कि वह आम जनता को हिंसा करने के लिए भड़का रहा है।

सोरले नामक एक अंग्रेज़ जज के सामने इस मुकदमे की सुनवाई हुई। सरकारी वकीलों ने इस वाक्य का अर्थ किया कि सम्पादक महोदय लोगों से कह रहा है कि देश भर में कत्लेआम की क्रोधाग्नि को भड़काओ। दूसरी ओर जेठमल और उसके वकीलों का मत था कि इसमें सिर्फ दिल्ली और अमृतसर में हाल ही में निरपराध और मासूम भारतवासियों की जो हत्या की गई है; उन घटनाओं का वर्णन है। न्यायाधीश महोदय उलझन में पड़ गया। उसने शाह लतीफ़ के विशेषज्ञ कुछ सिन्धी आलिमों को बुलाकर उनसे इस पद की व्याख्या पूछी। अन्त में परिणाम यह निकला कि जेठमल को दो साल कैद की सज़ा दी गई। उसे यरवदा (पुणें) में नज़रबन्द

रखा गया परन्तु महात्मा गांधी और अन्य नेताओं के साथ सरकार का एक समझौता हुआ उसके अनुसार दिसम्बर सन् १९२० ई० में अमृतसर में होने वाले कांग्रेस सम्मेलन के पूर्व ही सभी राजनैतिक कैदियों को आज़ाद किया गया।

जेठमल जेल से निकलकर जैसे ही हैदराबाद पहुँचे तो उसका भव्य स्वागत किया गया। जेठमल तो छूट गया परन्तु जज सोरले को शाह लतीफ ने ऐसा नज़रबन्द किया कि वह उसका पूरा कलाम अध्ययन करने से रह न सका। सोरले ने इसके लिए सिन्धी भाषा का गहन अध्ययन किया और शाह लतीफ के कलाम पर अनुसंधान पूर्ण प्रबन्ध अंग्रेज़ी में लिखा। उस पर उसे सन् १९४० ई० में आक्स्फोर्ड विश्वविद्यालय से पी.एचडी. की उपाधि प्राप्त हुई। सिन्धी साहित्य के क्षेत्र में यह एक अनोखी मिसाल है।

जेठमल ने अपने जेल के अनुभव ''तुरंग जो तीर्थ'' नाम से हिन्दवासी में किस्तों में देना शुरू किए, जो बाद में पुस्तक रूप में भी प्रकाशित किए गए। जेठमल जब गिरफ्तार हुआ ''हिन्दवासी'' का कार्यभार उसके मित्रों ने संभाला। वे थे जयरामदास, घनश्याम और चोइथराम। सन् १९२० ई० असहकार आंदोलन के समय उन्होंने पत्रिका का नाम परिवर्तित कर ''भारतवासी'' रखा और उसे दैनिक से बदलकर साप्ताहिक किया। सन् १९२१ ई० में जेठमल जब जेल से आज़ाद हुआ तो उसने भारतवासी का कार्यभार संभाला। उसने सन् १९२५ ई० तक उसे जारी रखा उसके बाद ''हिन्दवासी'' का प्रकाशन बंद किया गया। जेठमल ने महात्मा गांधी के ख़िलाफ़त आंदोलन को गलत समझ कर उसका कड़ा विरोध किया। इसी कारण वह अपने कई कांग्रेस साथियों से दूर हट गया। वह अपनी धुन का इतना पक्का था कि जब सिन्ध के कई हिन्दू नेता सिन्ध को बम्बई से अलग करने वाली मांग का विरोध कर रहे थे, तब वह अपने मुसलमान साथियों के साथ उसका जोरदार समर्थक बन गया। अन्त में अप्रैल सन् १९३६ ई० में सिन्ध को अलग प्रांत बनाया गया। जेठमल ने 'रूह रिहाण', 'प्रकाश' और 'सिन्धुड़ी' नामक पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। वह साम्यवाद, किसान हकदार, स्वदेशी आंदोलन, हिन्दू मुस्लिम

एकता आदि आंदोलनों का भी सिन्ध में लगातार प्रचार करता रहा। उसने अपना सारा जीवन राष्ट्र सेवा, समाज सुधार, साहित्य सृजन में व्यतीत कर दिया।

(५) राष्ट्रीय चेतना वाली अन्य पत्रिकाएँ

सिन्ध के अलग–अलग शहरों से भी राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने वाली कई पत्रिकाएँ इस सदी के पूर्वार्द्ध में प्रकाशित होती थीं। उन में विशेष उल्लेखनीय निम्नलिखित पत्रिकाएँ हैं।

(१) हिन्दू जाति : असहकार आन्दोलन सन् १६२३ ई० में खत्म हो जाने के बाद लोकराम तथा उसके कुछ साथियों पर हिन्दू महासभा का अधिक प्रभाव पड़ा। दूसरी ओर मुसलमान मुस्लिमलीग से प्रभावित हो रहे थे। ऐसी परिस्थितियों में लोकराम ने हैदराबाद से "हिन्दू जाति" नामक साप्ताहिक पत्रिका शुरू की। उसका उद्देश्य मुसलमानों का विरोध करना नहीं था परन्तु हिन्दुओं को संगठित करने और उनमें राष्ट्रीयता तथा देश भक्ति की भावनाएँ भरना था। सन् १६२४ ई० में विष्णु शर्मा जेल से आज़ाद हुआ, तब उसने भी अपने बड़े भाई की इस पत्रिका में हाथ बढ़ाया। कुछ महीनों पश्चात इस पत्रिका का कराची से भी संस्करण जारी किया गया। तब विष्णु हैदराबाद के संस्करण का काम देखने लगा और लोकराम कराची के कार्यालय को संभालने लगा। सन् १६२६ ई० से लेकर विष्णु भी हैदराबाद से कराची चला गया और अपने बड़े भाई के साथ "हिन्दू जाति" का सम्पादन काम करने लगा। इस पत्रिका की बिक्री कुछ महीनों में काफी बढ़ गई। कुछ समय बाद उसे दैनिक समाचार पत्र का रूप दिया गया। मई सन् १६३३ ई० में लोकराम के देहान्त तक इस अख़बार ने अंग्रेज़ सरकार का ज़बरदस्त मुकाबला किया। उसका प्रेस ज़ब्त हो गया। अख़बार पर प्रतिबन्ध लगाया गया। दोनों भाइयों को जेल की सजाएँ भुगतनी पड़ी परन्तु वे अपने पथ से पीछे नहीं हटे।

(२) शक्ति : यह साप्ताहिक पत्रिका सन् १६२२ ई० में नौशहरा फेरोज़ से जारी की गई। सरकार की कटु आलोचना करने के कारण मार्च सन् १६२२ ई० में उसके सम्पादक खेमचन्द बालाणी को एक साल जेल की सज़ा हुई। उसके स्थान पर बारी–बारी से गुरमुख

सिंह बालाणी, मानसिंह चूहड़मल, शिवानन्द सेवकराम, प्रभुदास ब्रह्मचारी आदि सम्पादक बने परन्तु अख़बार को बन्द नहीं किया गया।

(३) वतन : यह साप्ताहिक पत्रिका शिकारपुर सिंध से सन् १६२२ ई० में जारी की गई। लीलाराम नरसिंह दास फेरवाणी उसके संस्थापक और पहले सम्पादक थे। सरकार के खिलाफ़ लिखने के कारण उसे जेल की सज़ा भुगतनी पड़ी। उसके बाद तीन और सम्पादक भी बारी–बारी से सरकार के खिलाफ़ और राष्ट्रीय चेतना के प्रचार से संबद्ध लेख लिखने के कारण जेलों में गए।

(४) उत्तर सिन्ध से साल सन् १६२२ ई० में राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावनाओं से ओत–प्रोत अन्य पत्रिकाएँ भी जारी की गईं। वे हैं–

स्वराज दैनिक : सम्पादक हीरानन्द करमचन्द।

आज़ाद : सम्पादक अल्लाह बख़्श सूमरो। वह बाद में सिन्ध का मुख्यमंत्री बना और कांग्रेस विचारधारा का था। उसे सन् १६४३ ई० में विरोधी पक्ष के मुसलमानों ने गोलियों से भून कर मार डाला। इसका प्रकाशन कराची से भी होता था।

आज़ादी साप्ताहिक : सम्पादक–राम मोटवाणी–लाड़काणा।

भारत माता साप्ताहिक : सम्पादिका–राधी बाई–शिकारपुर।

'स्वराज' नाम से बलदेव गाजरा ने सन् १६३३ ई० में दैनिक पत्र जारी किया जो सन् १६४७ ई० तक नियमित रूप से प्रकाशित होता रहा। इस तरह इस सदी के पूर्वार्द्ध में सिन्ध के कुछ अन्य स्थानों से भी पत्रिकाएँ प्रकाशित होती रहीं, जो देशभक्ति, राष्ट्रीय चेतना आदि भावनाओं के प्रचार में अपना सहयोग देती थीं।

इस समय में सिन्धी मुसलमानों ने भी सिन्धी पत्रकारिता के क्षेत्र में काफी पत्रिकाएँ प्रकाशित की। उन में कांग्रेस विचारधारा के नेशनलिस्ट मुसलमान बहुत कम थे। सिन्ध के अधिकांश मुसलमान नेता अंग्रेज़ सरकार की नीतियों का समर्थन करते थे। जब से सिन्ध में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई, तब से हिन्दू और मुसलमानों

के बीच मनमुटाव और भेदभाव की भावना दिन–ब–दिन बढ़ती गई। साल सन् १९२० ई० में "अल्वहीद" रोज़ाना अख़बार सिन्ध से जारी किया गया। वह मुसलमानों की विचारधाराओं का मुख्य प्रतिनिधि था। उस की लेखनी का जवाब देने के लिए सिन्ध के अल्पसंख्यक हिन्दुओं ने भी अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई। इस प्रकार दोनों जातियों में भेदभाव बढ़ने लगा। साम्प्रदायिक दंगे तीन–चार बार भड़क उठे। सन् १९३९ ई० में संत कंवरराम को फ़िर्कापरस्त कट्टर मुसलमानों ने गोलियां मार कर शहीद किया। उसके विरोध में हासाराम पमनाणी ने सिन्ध असेम्बली में आवाज उठाई, तो उसे भी १७ जुलाई सन् १९४० ई० में रोहिड़ी में गोलियों का निशाना बनाकर शहीद किया गया। उसके बाद दो युवक नथूराम शर्मा कराची में और नेणूराम शर्मा हैदराबाद में साम्प्रदायिकता का शिकार बनाए गए।

राष्ट्रीय आंदोलन में हरिचन्दराइ विशनदास (१८९२–१९२८) पहले नेता हैं, जिनका देहान्त राजनैतिक कारणों से हुआ। वह केन्द्रीय कानून साज़ असेम्बली का सदस्य था। सन् १९२८ ई० में सायमन कमीशन के विरोध में अपना मत देने के लिए बीमारी की हालत में कराची से दिल्ली गया। वहाँ असेम्बली में जाते हुए रास्ते में ही उसकी मृत्यु हुई। सन् १९३० ई० के सत्याग्रह आंदोलन में कराची में दो नवयुवक मेंघराज लुल्ला और दत्तात्रेय पुलिस की गोलियों के कारण शहीद हुए। सन् १९४२ ई० में 'भारत छोड़ो' आंदोलन में १९ वर्षीय किशोर हेमूं कालाणी को सरकार ने फाँसी की सज़ा देकर मौत के घाट उतारा। इन के अतिरिक्त कितने जवान जख़्मी हुए, कितने सत्याग्रही जेलो में गए, उसका पूरा लेखा–जोखा नहीं किया गया है। सिन्ध के पत्रकारों ने राष्ट्रीय आंदोलनों में और सत्याग्रहों में जो कुरबानियाँ की उसका विस्तार सहित इतिहास अभी तक तैयार नहीं किया गया है। सरकारी ग्रंथालयों में इसका काफी रिकार्ड सुरक्षित है। आवश्यकता है केवल ऐसे इतिहासकारों की, जो उन का अध्ययन कर आने वाली पीढ़ियों के लिए इन गौरवमयी गाथाओं को लिखित रूप में और विस्तार सहित प्रस्तुत करें।

✪★✪

लेखक परिचय

नाम	:	हीरो ठकुर
जन्म तिथि	:	२ मार्च, १९४८ ई०
जन्म स्थान	:	हैदराबाद (सिंध)
शिक्षा	:	बी०ए० आनर्स
सम्प्रति	:	एकांश प्रभारी, सिंधी समाचार एकांश, आकाशवाणी दिल्ली।
पता	:	सुभावना निकेतन, सी- २१ पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४
प्रकाशन	:	१- भेरूमल मेहरचंद, २- तहकीक ऐं तनकीद, ३- काजी कादन, ४- बेहतरीन सिंधी मज़मून, ५- सिंधी पत्रकारिता, ६- गोलियूँ। ७- 'सिंध व सिराइकी जो कदीम कलाम' यंत्रस्थ।
पुरस्कार	:	स्व० ज्ञानी जैल सिंह द्वारा १९८३ के विश्व सिंधी सम्मेलन में।
अन्य	:	१- संसदीय संवाददाता (पूर्व) 'हिन्दुस्तान' दैनिक सिंधी, २- सम्पादक- हिन्दवासी, साप्ताहिक (१९६८-७०), ३- अनेक पुस्तकें महाराष्ट्र, राजस्थान व गुजरात में स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में शामिल, ४- दूरदर्शन हेतु झूलेलाल रूपक का निर्माण।

अंग्रेज़ी शासनकाल में प्रतिबन्धित सिंधी साहित्य

—हीरो ठकुर

सज़णु ऐं साणीहु, कंहिं अणासीअ विसरे,
हैफु तिन्ही खे होइ, वतनु जिनि विसारियो।

'शाह लतीफ'

उहे माउरि भले मुरकनि, जे बारोतनि में लोली डियनि
त सदक़े देश तां तनु मनु करण जहिड़ी न बी खिज़मत।

'बेवस'

"देश प्रेम, देश भक्ति, आज़ादी के लिए प्रेम और बलिदान की भावना सिंधियों की जन्मघुट्टी में शमिल है। सिंधी माताएं अपने बच्चों को लोली सुनाते–सुनाते उनमें ये गुण भरती हैं। उपरोक्त भावनाएँ युग–युगों से सिंधी मानस का श्रृंगार रही हैं। यहां पर महाभारत कालीन सिंधी माता विदुला की कहानी सुनाने की गुंजाइश नहीं है, जिसका आज़ादी और देश प्रेम के संबंध में अपने पुत्र संजय को पढ़ाया हुआ पाठ माता कुन्ती के लिए प्रेरणा स्त्रोत बना जो उसने अपने पाँच पुत्रों को उदाहरण स्वरूप सुनाया और उन्हें अपनी खोयी हुई भूमि और आज़ादी कौरवों से वापिस हासिल करने के लिए महाभारत की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित किया। यहां पर सिंधियों द्वारा सिकंदर और दारा से किए गए वीरतापूर्ण मुकाबलों का, या राजा दाहिर द्वारा दिए गए बलिदान का जिक्र करने की भी गुंजाइश नहीं है। ये सब बातें इतिहास में शमिल हैं।"

मध्यकाल में सिंध के शिरोमणि कवि शाह अब्दुल लतीफ भिट्टाई ने मारुई के पात्र द्वारा देशभक्ति और आज़ादी के जो उद्‌गार व्यक्त किए हैं, वे बेमिसाल और अमर हैं। मारुई कहती है :

"सन्हीअ सुईअ सुबियो मूं मारुनि सीं साहु,
वैठी सार्‌यां सूमरा गोलारा ऐं गाहु,
हिंयो मुहिंजो हुत् थियो, हित् मिट्टी ऐं माहु,
परवन में पसाहु, कालिबु आहेम् कोट में।

या फिर आज़ादी के प्रति मारुई की ये भावनाएं देखें :

भजी भोरि कंदसि कुंजूं कुल्फ ताला,
उमर मूं नथा विसरन् वेढ़ीचनि जा वाड़ा।

इसी ही परम्परा को आगे बढ़ाते हुए भारत की आज़ादी के युद्ध के समय भी सिंधियों ने उस युद्ध में भरपूर हिस्सा लिया। सिंध के राजनैतिक व्यक्तियों ने ही नहीं, समाज के हर वर्ग के लोगों, व्यापारियों, बुद्धिजीवियों, लेखकों, कवियों, पत्रकारों, पुरुषों, स्त्रियों, बूढ़ों चाहे बच्चों सभी ने इस यज्ञ में आहूति दी। एक तरफ हेमूं कालाणी, हासानंद पमनाणी, दत्तात्रय व अल्लाह बख़्श समूरो आदि शहीदों ने अपनी जान की क़ुरबानी दी, तो दूसरी तरफ हज़ारों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने काम काज, धंधे व्यापार छोड़कर, आज़ादी के लिए लड़ते हुए, जेल जाना स्वीकार किया।

इस महायुद्ध में प्रत्येक वर्ग ने अपनी भूमिका सुचारु रूप से निभायी पर इस आलेख में हम केवल उन कलम के सिपाहियों का ज़िक्र करेंगे, जिनकी लेखनी की हल्की सी स्याही भी अंग्रेज़ सरकार पर भारी चट्टान की तरह जा गिरती थी और जिनके शब्दों और वाणी का वज्रघात अंग्रेज़ों की बंदूकों और गोलियों से भी अधिक प्रभावशाली था। ऐसे कलम के वीरों का प्रत्येक शब्द अंग्रेज़ों को अपने समस्त हथियारों, गोलाबारूद और अपने समस्त कानूनों से भी अधिक खतरनाक लगता था, जिसका सामना करने के लिए उन्होंने 'प्रेस ऑर्डिनेन्स एक्ट' और धारा १२४–ए जैसे नादरशाही कानून लागू किए और उनके तहत् उन क़लम के वीरों को बार–बार जेल भेजा। सेंसरशिप एक्ट लागू करके उनके प्रति अतिक्रमण किया और उनकी लिखित रचनाओं पर पाबंदियां लगाई, प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाए या वे ज़ब्त कीं।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेज़ों द्वारा सिंधी साहित्यकारों पर किए गए अत्याचार, उनकी रचनाओं पर लगायी गई पाबंदियां और उन गरीब और निर्बल बेसहारे कलम के सिपाहियों द्वारा अपने सीने को ढाल बनाकर लिए गए मुकाबलों का वृतान्त अपने आप में एक ऐसा पूर्ण और गौरवमय इतिहास है, जिस पर कोई भी समाज गर्व कर सकता है।

सिंध में आज़ादी की लड़ाई की सबसे पहिली आवाज़ १८५७ में

पत्रकारिता–जगत में उठी। सिन्ध से बाहर कुछ स्थानों पर बड़े पैमाने पर कत्लेआम हुए थे, इसलिये अंग्रेज़ सरकार ने अख़बारों पर पाबंदियां लगायीं थी ताकि सिंध के अख़बारों में फसादों और कत्लेआम की खबरें न छपें पर सिंध के अख़बारों पर पाबंदिया लगाते ही उनके विरोध में स्वर प्रखर हो उठे। सिंध के अख़बार "सिंध कासिद" ने अपने जुलाई १८५७ वाले एक प्रकाशन में उन पाबंदियों का घोर विरोध किया; इस कदम की निंदा की और सरकार को चेतावनी दी कि इस कदम से जो नतीजे निकलेंगे, वे खुद सरकार के लिए भी हितकारी नहीं होंगे।

अंग्रेज़ों द्वारा 'सेसंरशिप' लागू करने, और सिंधी बुद्धिजीवियों द्वारा उनका विरोध करने का सिलसिला एक बार जो शुरू हुआ तो फिर चलता ही रहा। न अंग्रेज़ों ने ही अपने दमन और अत्याचारों में कोई ढील दी और न ही सिंध के स्वतंत्रता सेनानी कवि, लेखक और पत्रकार ही अपनी राह से डगमगाए। इस दौरान कई सिंधी पत्र–पत्रिकाएँ, कविता संग्रह, जीवनी पुस्तक और देश भक्ति व स्वतंत्रता के प्रेरक उपन्यास, कहानी व निबंध संग्रह अंग्रेज़ों के क्षोभ का शिकार बने। पहले उनकी छपाई पर, बाद में बिक्री या वितरण पर प्रतिबंध लगाए गये। कई पुस्तकों की तो दुकानों पर उपलब्ध प्रतियां भी ज़ब्त की गईं।

ऐसी प्रतिबंधित सभी पुस्तकों/रचनाओं का पूरा ब्यौरा आसानी से उपलब्ध न था। जैसे कि अंग्रेज़ों ने केवल सिंधी में ही नहीं, अपितु अंग्रेज़ी, हिन्दी और समस्त भारतीय भाषाओं में प्रकाशित ऐसी अनेक पुस्तकें ज़ब्त की थी, या उन पर प्रतिबंध लगाए थे, इसलिये ऐसी पुस्तकों की सूची भी काफी लम्बी है और आसानी से उपलब्ध भी नहीं थी। ऐसी स्थिति में इस लेखक ने कोशिश करके भारत में, सिंध में और ब्रिटेन में संबंधित सूत्रों से सम्पर्क स्थापित करके, इस तरह की पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं और उनके लेखकों के नाम, संदर्भ, उन ग्रंथों के, संग्रहालयों में सूचकांक (कोड नम्बर्स) इत्यादि का पता लगाया और बाद में लंडन में और अन्य स्थानों पर संस्थानों से लिखापढ़ी करके और उन्हें वांछित मूल्य भेजकर, जहां तक संभव था, अधिक से अधिक ऐसी २२ प्रतिबंधित पुस्तकें, पुस्तिकाओं पत्र–पत्रिकाओं और सिंधी भाषा के प्रतिबंधित पोस्टरों की फोटोस्टेट प्रतियां वहां से मंगवाई। लंडन से मंगवाये गये प्रतिबंधित सिंधी साहित्य

और उसके लेखकों के नाम इस प्रकार है।

१. फांसी– गीत माला : कवि हूंदराज दुखायल

२. आज़ादी आलाप – गीत : कवि हूंदराज दुखायल

३. गाँधी माला (कविताएँ) : महाराज कालिदास

४. मनमोहन भजनावली : नथुरमल शर्मा

५. गाँधी गुलशन (कविता) : मोहनदास उधाराम

६. गाँधी– गीत : चतुर्भुज लछीराम

७. आज़ाद भजनावली : नारायणदास आज़ाद

८. स्वराज जो सनेहो : जयराम मूलचंदाणी

९. देश माला (सिंधी गुरुमुखी) :

१०. तिलक याद : महाराज कृपालदास

११. स्वराज महात्तम : मोटणदास सोभराज

उपरोक्त पुस्तकें कविताओं की हैं, अन्य साहित्य इस तरह हैं।

१२. "हिन्दू" (सम्प्रति "हिन्दुस्तान" दैनिक अख़बार) का तिलक विशेषांक

१३. बंदी जीवन (दो भाग) शचीन्द्रनाथ सान्याल के क्रांतिकारी जीवन पर आधारित उपन्यास

१४. अजु कल्ह जो सुधारो : नारायणदास किशन चतुर्वेदी रचित गुजराती उपन्यास का अनुवाद।

१५. इंकलाब ज़िन्दाबाद : द्वारकादास रोचीराम द्वारा रचित लम्बी कहानी।

१६. धारासन कहाणी : तीर्थदास लेखराज द्वारा लिखी हुई नमक सत्याग्रह की रिर्पोताज।

१७. धारासन ते काह सत्याग्रह की रिर्पोताज।

१८. कम्यूनिस्ट पधरनामो–१

१९. कम्यूनिस्ट पधरनामो–२

२०. जिन्नाह खे जवाब : चन्द्रगुप्त विद्यालकार की लालचंद आर्य द्वारा अनूदित पुस्तक

२१. एक पोस्टर सिंधी में

२२. लड़ाईअ जो लुड़ाट ऐं कांइरनि जो कूकाटु : "शाह नवाज़ पीरज़ादो।

उपरोक्त काव्य पुस्तकों में से "फाँसी गीतमाला और "आज़ादी आलाप" विशेष उल्लेखनीय हैं। उनके रचयिता सिंधी के सुविख्यात कवि हूंदराज दुखायल जी हैं जिन्होंने न केवल अंग्रेज़ों के विरोध में साहित्य रचना करके भारत माता की सेवा की पर स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने मनसा–वाचा–कर्मणा योगदान किया। सिंध के गांव–गांव में जाकर ढफली बजाकर अपने सुमधुर स्वर में देशभक्ति की कविताएँ आम जनता को सुनाकर और स्वतंत्रता संग्राम में अपने सक्रिय योगदान के कारण उन्होंने सिंध में और सिंधी जनता में ऐसा स्थान हासिल किया कि आज भी सिंधी उन्हें अपना राष्ट्रकवि मानते हैं। उनकी राष्ट्रीय कविताओं की भावनाएँ इतनी सहज और भाषा इतनी सरल पर शक्तिमय थी कि मानो समस्त सिंधी मानस की वाणी उनमें मुखरित हो उठती हो।

फाँसी गीतमाला का प्रारम्भ, दुखायल द्वारा, सरदार भगत सिंह की शहादत पर लिखी गयी कविता से होता है :

सूरीअजे चढ़ियो सेज ते सालार भगत सिंघ
सरदार भगत सिंघ
भारत जो बणियो लाड़लो दिलदार भगत सिंघ
सरदार भगत सिंघ।

इस संग्रह में लोकमान्य तिलक पर लिखी गयी उनकी प्रसिद्ध कविता भी शमिल है :

खिज़मते मुल्क में हरदम थो तूं मखमूर रहीं
पंहिंजे हर मर्द इरादे ते थो महकूम रहीं।

"फाँसी गीतमाला" में विषयों की दृष्टि से क्रांतिकारी नेताओं के कारनामों और बलिदानों, स्वदेशी आंदोलन, नशाबंदी इत्यादि विषयों पर सुमधुर धुनों पर रचे गये गीत शमिल हैं। इसमें प्रभात फेरियों पर गीत भी शामिल है। फाँसी गीतमाला की भूमिका लाड़काणा के उस समय के प्रसिद्ध वकील दीवान निहचलदास की लिखी हुई है। यह पुस्तिका १६३१ में प्रकाशित की गयी थी। इसमें २२ पृष्ठ हैं और साईज १८ सी०एम० है।

दुखायल जी की दूसरी पुस्तिका "आलाप आज़ादी" में भी राष्ट्रीय

रचनाएं शमिल हैं। इसमें भारत की दरिद्रता, आज़ादी, इंकलाब, बलिदानों, नौवजवानों के प्रति संदेशों और महिलाओं को दिए गए आह्वानों पर कविताएं शमिल है।

"आलाप आज़ादी" की एक कविता है :

अज़ा भी तूं अचण खां जे, कंदीअं इंकार आज़ादी।

त डि्रसंदींअ नौजवाननि जी सिस्यूं धर धार आज़ादी।।

दुखायल जी की यह कविता पुस्तक सन् १९३२ ई० में प्रकाशित हुई थी, आज़ादी की लड़ाई के दौरान सिंधी पत्र–पत्रिकाओं ने ऐसी भूमिका निभाई, जिसकी मिसाल भारतीय भाषाओं में तो न सही खुद अंग्रेज़ी पत्रकारिता में भी शायद ही मिलेगी। एक ही पत्र "हिन्दू" (दैनिक) के एक के पश्चात एक करके, कुल मिलाकर आठ सम्पादक, अंग्रेज़ साम्राज्य का विरोध करने के आरोप में जेल भेजे गये और उन्हें तीन महीनों से लेकर एक साल तक की अवधि के लिए जेल की सज़ाएं हुई। इस अख़बार का डेक्लॅरेशन / घोषणा–पत्र रद्द किया गया, प्रेस जब्त किया गया, कर्मचारियों पर दबाव डाला गया, फिर भी अख़बार के प्रबन्धक छुप–छुपकर अख़बार प्रकाशित करते ही रहे। इसी "हिन्दू अख़बार" का अगस्त सन् १९३१ ई० का तिलक विशेषांक प्रतिबंधित साहित्य में शामिल है।

इस अख़बार में टैब् लॉइड् साईज़ के ४० पृष्ट हैं और मुखपृष्ठ पर लोकमान्य तिलक का चित्र छपा है। इस पत्रिका में महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और बाबू राजेन्द्र प्रसाद व अन्य नेताओं द्वारा इस पत्रिका को भेजे गये संदेशों के साथ, सिंध के अग्रणीय स्वतंत्रता सेनानियों, जैसे कि श्रीयुत जैरामदास दौलतराम, नारायण दास मल्काणी, प्रोफेसर घनश्याम और अन्य नेताओं के राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले निबंध और रचनाएं अंग्रेज़ों के विरोध में कार्टून्स और अन्य सामग्री हैं।

"धारासन जंग जी कहाणी" और "धारासन ते काह" सन् १९३० ई० में गाँधीजी द्वारा किये गये नमक सत्याग्रह की पृष्ठ भूमि में लिखी गयी दो रिपोतार्ज की पुस्तकें हैं। इनमें "धारासन कहानी" हैदराबाद सिंध के तीर्थदास लेखराज द्वारा लिखित है। दूसरी पुस्तक पर लेखक का नाम नहीं है पर वह भी लगता है कि उसी ही लेखक द्वारा लिखी हुई है। दोनों

पुस्तकों में नमक सत्याग्रह की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए लोगों को इस सत्याग्रह के लिए की गयी अपीलों से लेकर डांडी मार्च तक, धारासन, जहां पर बापू जी ने समुद्र तट पर नमक की चूंगी उठाकर जो नमक कानून का उल्लंघन किया, वहां तक का पूरा आंखों देखा हाल दर्ज किया गया है।

''इंकलाब ज़िन्दाबाद'' द्वारका प्रसाद रोचीराम द्वारा रचित एक हृदय द्रवित कर देने वाली लम्बी कहानी है। यह गंगा नामक दस वर्षीय बालिका की कहानी है, जिसके पिताजी, अंग्रेज़ों के वफादार पुलिस अफसर हैं। गंगा की माँ की मृत्यु हो चुकी है। गंगा किसी तरह से क्रांतिकारियों के कारनामों की कथाएं, ''इंकलाब ज़िन्दाबाद के नारे सुनकर, आज़ादी के आह्वान से प्रेरित होती है और घर में जैसे कि वह अकेली है, अकेले में, अपने पाले हुए तोते को जो पिंजड़े में है, उसे ''इंकलाब ज़िन्दाबाद का पाठ पढ़ाती रहती है। वह उससे कहती है ''भारत माता'' और वह उत्तर देता है ''आज़ाद''।

अचानक उनके घर में इलाहाबाद से उसका एक नवयुवक रिश्तेदार गोविंद आता है जो खुद भी स्वतंत्रता सैनिक है। वह गंगा को क्रांतिकारियों की कथाएँ बताकर आज़ादी के लिए प्रेरित करता है और आखिर एक दिन जब एक बड़ा आज़ादी का जुलूस निकलता है तो उसमें गोविंद के साथ गंगा भी शमिल हो जाती है। गंगा के पिताजी की अगुवाई में पुलिस, जुलूस पर लाठियों बंदूकों और आंसू गैस से टूट पड़ती है, जिसमें गंगा लहूलहान होकर गिर पड़ती है और गोविंद भी लाठी खाकर उसके पास जाकर गिरता है। गंगा का मुख लाठी की चोट से फट जाता है, और उसकी चीख से अचानक उसके पिताजो का ध्यान उसकी तरफ जाता है जो यह नज़ारा देखकर अवाक् रह जाता है। मरते मरते गंगा के मुख से जो आवाज़ निकलती है, वह है ''इंकलाब जिन्दाबाद''।

कथा के अन्त में दिखाया गया है कि पुत्री की मृत्यु से व्यथित होकर उस पुलिस अफ़सर का मन भी परिवर्तित हो जाता है और वह घर में पिंजड़े में बंद तोते के आगे जाकर कहता है ''चवु पुट तोता''...(कहो बेटा तोते) तो तोता उत्तर में कहता है ''आज़ाद''। तब पुलिस इंस्पेक्टर पिंजड़े का दरवाज़ा खोलकर उस तोते को आज़ाद करने की चेष्टा करता

है पर देखता क्या है कि वह तोता तो पहिले ही तड़प–तड़प कर मर चुका है। तब वह इंस्पेक्टर खुद भी कहता है: 'इंकलाब जिन्दाबाद'।

बंदी जीवन दो भागों में पांच सौ से अधिक पृष्ठों पर छपी हुई, शचीन्द्रनाथ सान्याल क्रांतिकारी के वीरतापूर्ण जीवन की और अंग्रेज़ों द्वारा उन्हें जेल में दी गयी यातनाओं की कहानी है!

"अज़ुकल्ह जो सुधारो" नारायण दास चतुर्वेदी द्वारा लिखे गये गुजराती उपन्यास का सिंधी अनुवाद है। उपन्यास में अंग्रेज़ों के तौर तरीकों, उनकी जीवन शैली पर व्यंग्य किया गया है और उनकी नकल करने वाले, अंग्रेज़ों के चापलूस हिन्दुस्तानियों पर कुछ भाषा में आलोचना की गई है। उपन्यास टैब–लॉइड साइज में १६० पृष्ठों पर मुद्रित है।

इसके अलावा सिन्ध कम्युनिस्ट पार्टी के दो ऐलान (घोषणा–पत्र) भी उस सामग्री में सम्मिलित हैं, जिन्हें कि अंग्रेज़ शासन ने प्रतिबंध लगाकर ज़ब्त किया था। उनमें से एक का शीर्षक है : "संल्तनत शाही पर आखिरी हमले की तैयारी करो' यह सिंध कम्युनिस्ट पार्टी सक्खर द्वारा प्रकाशित किए गये थे। इस ऐलान में अंग्रेज़ों को भगाने के लिये कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा घोषित किए गए कार्यक्रम का ब्यौरा है, जो इस तरह है :

१. सल्तनत शाही को किस तरह नष्ट किया जाय।

२. सीमित सिविल नाफ़रमानी पर अमल किया जाय।

३. मौजूद वक्त में क्या–क्या करें :

(क) वालंटियरों की ज़बरदस्त भरती करके उन्हें फौजी शिक्षा दी जाय। मुसलमानों पर विशेष ध्यान दिया जाय।

(ख) जंग (दूसरी महाभारी लड़ाई) के प्रति कांग्रेस के रवैये से लोगों को पूरी तरह से अवगत कराया जाय।

(ग) सप्ताह में कम से कम तो भी एक मीटिंग की जाय।

(घ) राष्ट्रीय साहित्य का प्रकाशन और वितरण।

(ङ) मज़दूरों और सरकारी कर्मचारियों में महंगाई के विरोध में प्रचार

किया जाय इत्यादि।

इसके अलावा सिंधी में एक पोस्टर भी है, जो दो पंक्तियों का ही है।

१. यह संपूर्ण प्रतिबंधित साहित्य गौर से जांचने से मालूम होता है कि वैसे तो कविता, कहानियों, उपन्यासों पत्र–पत्रिकाओं हर तरह के साहित्य पर प्रतिबंध लगाये गये थे पर सर्वाधिक पुस्तकें कविताओं की है जो ज़ब्त की गई थी।

२. कविताओं की भाषा जज़्बाती, सरल, गीतात्मक और उत्तेजनापूर्ण है जो शीघ्र प्रेरित करती हैं।

३. कांग्रेस, कम्युनिस्ट पार्टी, हिन्दू महासभा और आर्य समाज हर विचारधारा के संस्थानों द्वारा प्रकाशित साहित्य प्रतिबंद्धित किया गया था।

४. हिन्दू चाहे मुसलमान दोनों सम्प्रदायों के लेखकों द्वारा राष्ट्रीयता प्रेरक साहित्य रचा गया जो प्रतिबंधित हुआ व ज़ब्त हुआ।

❖❖❖

सिंध में आज़ादी की हलचल के दो दृश्य

बाएँ से: उ.प्र. सिंधी अकादमी – सचिव श्री सरल झाप्रटे, सदस्य श्री सुन्दरलाल राज्यपाल एवं परिसंवाद का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित कर करते हुए राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद – कार्यकारिणी सदस्य व राज्य सभा सदस्य श्री सुरेश केसवाणी नरेन्द्रालय प्रेक्षागृह, फैजाबाद में ७ जनवरी २००० को.

बाएँ से: उ.प्र. सिंधी अकादमी – निदेशक श्री सत्यजीत ठाकुर – आई. ए. एस. (विशेष सचिव – भाषा, उ. प्र. शासन, प्रख्यात भाषा विद् डॉ. मुरलीधर जैतली परिसंवाद सत्र का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलित कर करते हुए, श्री सरल झाप्रटे, डॉ. किशोर वासवाणी– निदेशक : रा. सि. भा. वि. प., डॉ. शरणबिहारी गोस्वामी – कार्यकारी उपाध्यक्ष : उ. प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ शाने अवध होटल, फैजाबाद में ८ जनवरी २००० को.

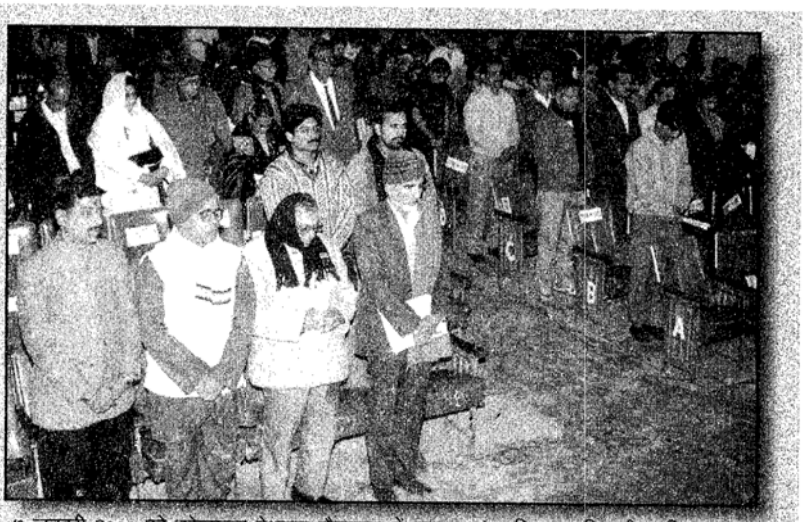

७ जनवरी २००० को नरेन्द्रालय प्रेक्षागृह फैजाबाद में गणमान्य नागरिक व प्रतिभागी आदि.

८ जनवरी २००० को सन्त कंवरराम धर्मशाला, फैजाबाद में सिंधी नाटक का आनन्द प्राप्त करते दर्शक

६ जनवरी २००० को शाने अवध होटल, फैजाबाद में परिसंवाद में विद्वतजन

सिंधी लोक संगीत पर थिरक उठे साहित्यकार एवं प्रतिभागी नरेन्द्रालय में

अजमेर के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत नाट्य प्रस्तुति की एक झलक

बायें से कुर्सी पर : सिंधी सहित्यकार सर्वश्री झम्मू छुगाणी, डॉ. जेठो लालवाणी, श्री हीरो ठकुर, डॉ. एम. के. जैतली, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री धर्मराज सिंह, श्रीमती रीटा शहाणी, डॉ. किशोर वासवाणी व श्री सरल ज्ञाप्रटे युवा सिंधी पीढ़ी के साथ.

बायें से कुर्सी पर : डॉ. बलदेव मटलाणी, डॉ. जेठो लालवाणी, श्री हीरो ठकुर, डॉ. मुरलीधर जैतली, श्री धर्मराज सिंह, श्रीमती रीटा शहाणी, डॉ. किशोर वासवाणी, श्री सरल ज्ञाप्रटे एवं श्रीमती इंदिरा वासवाणी। पीछे खड़े हुए : श्री बलदेव सिंह राजपूत, श्री वासुदेव निर्मल, श्री झम्मू छुगाणी, श्री रविप्रकाश टेकचन्दाणी, श्री राधाकृष्ण आलमचन्दाणी, डा. शिवानन्द मामताणी, श्री हेमनदास मोटवाणी व श्री राकेश कुमार श्रीवास्तव.

'सिंध ही नहीं पूरे पाकिस्तान को वापस लिया ज
हिन्दुस्तान लखनऊ, बुधवार, 12 जनवरी, 2000 ई.
मिट्टी से जुदा होने की टीस
सिंधी युवाओं के सीने में जिंदा
की सोंधी महक से महरूम होने का दर्द है युवा पीढ़ी में
और हिन्दी में कोई फर्क नहीं है : केशवाणी
सिंधी को हिन्दी में समा गया सिंधी भाषा के आयोजन का पहला सत्र
गोष्ठी रपट
सिंधी कवियों ने कभी भीअपनी लेखनी
को विराम नहीं दिया-डा. जेठो
हिन्दुस्तान
सिंधी और हिन्दी में कोई फर्क नहीं : सुरेश
हिन्दुस्तान संवाद